राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५५

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी, बी. ए. –

विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी, बी.ए. -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

और

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | ख्रिस्ताब्द १९६१

प्रथमावृत्ति ५०० | मूल्य ६.२५

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujrat Puratattva Mandira Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Sinhghi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 55

A CATALOGUE OF

LATE PUROHIT HARINARAYAN, B. A. –

VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS COLLECTION

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2018]

[*1961 A D.*

A CATALOGUE OF

LATE PUROHIT HARINARAYAN, B.A. –

VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS COLLECTION

*

Edited By

Shri Gopal Narayan Bahura, M. A.

&

Shri Lakshmi Narayan Goswami Dikshit

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (Rajasthan)

V.S. 2018]   [1961 A.D.

विषय तालिका

विषय	पृष्ठ संख्या

सञ्चालकीय वक्तव्य

जयपुरनिवासी, विश्रुतकीर्ति, शोधविद्वान् स्वर्गीय पुरोहित श्रीहरि-नारायणजी विद्याभूषण द्वारा संगृहीत 'विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह'की सूचीको इस विभागके द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। श्रीविद्याभूषणजीने अपने जीवनकालमें अदम्य उत्साह एवं संलग्नतासे अमूल्य ग्रन्थरत्नोंका संग्रह किया था जो पुरातत्त्वजिज्ञासुओंके लिए उपादेय है। इस संग्रहको श्रीविद्याभूषणजीके दिवंगत होने पर उनकी अक्षय कीर्तिकामना रखते हुए श्रीयुत् रामगोपालजी पुरोहित, बी. ए., एल-एल. बी. (श्रीविद्या-भूषणजीके आत्मज)ने किसी ऐसी संस्थाको देना संकल्पित किया, जहां निरन्तर इसका उपयोग भावी शोधकारों द्वारा किया जा सके। इसी उद्देश्यसे प्रेरित वह एक दिन हमारे कार्यालय (पुरातत्त्व-मन्दिर, जयपुर)में उपस्थित हुए। यहांकी प्राचीन ग्रन्थोंकी सुरक्षा, सम्पादन एवं प्रकाशन सम्बन्धिनी व्यवस्थासे प्रभावित हो कर उन्होंने अनुभव किया कि विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रहका सही उपयोग इसी प्रतिष्ठान द्वारा भली प्रकार किया जा सकेगा। इसके तुरन्त बाद ही 'शुभस्य-शीघ्रम्'को चरितार्थ करते हुए उन्होंने उक्त संग्रह इस कार्यालयमें भिजवा दिया और दिनांक २१-२-१९५७को एक पत्र मुझे लिख कर सूचित किया कि "मेरे स्वर्गीय पितृचरणका कार्यक्षेत्र जयपुर ही रहा है और सौभाग्यसे अब यहीं पर पुरातत्त्व मन्दिर जैसी शोधसंस्था कार्य कर रही है अतएव मेरी उत्कट अभिलाषा है कि आप उनके विद्या-भूषण ग्रन्थ-संग्रहको एक उप संग्रहके समान अपने ही विभागमें सुरक्षित रख लें ताकि स्वर्गीय विद्याभूषणजीका यशःशरीर शोधविद्वानोंके अधिकाधिक काम आ सके।

इस सम्बन्धमें राजस्थान सरकारको विधिवत् स्वीकृतिके लिए लिखा गया और आदेश सं. डी. १००६७, एफ. ९ (२) एज्यू. बी. ५१ दिनांक १९ जुलाई १९६० द्वारा सरकारने उक्त संग्रहको इस विभागके अधिकारमें लेना स्वीकृत कर लिया। यह भी निश्चय किया गया कि

प्रस्तुत विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह जयपुरमें ही प्रतिष्ठानके शाखा कार्यालयमें सुरक्षित रखा जायगा एवं भविष्यमें इस प्रकार भेंटस्वरूप प्राप्त होने वाले अन्य उपादेय संग्रहोंको भी सधन्यवाद स्वीकार किया जायेगा।

इस प्रकार उक्त संग्रह प्रतिष्ठानके अधिकारमें ले लिया गया।

स्वर्गीय पुरोहितजीने विद्याभूषणग्रन्थसंग्रहके नामसे प्रस्तुत संग्रहकी प्रायः दो सहस्रनामांकित सूची तैयारकी थी, जिसे हमने उसी रूपमें प्रकाशित किया है। आवश्यक स्थानों पर टिप्पणी एवं परिशिष्टमें कृति और कर्तृ नामानुक्रमणिका तथा स्वर्गीय विद्याभूषणजीका संक्षिप्त जीवनवृत्त दे कर सम्पादकोंने इसे अधिक उपादेय बना दिया है। स्वर्गीय विद्याभूषणजीने प्रस्तुत संग्रहके अनेक ग्रन्थोंमें यथास्थान स्वहस्ताक्षरोंसे आवश्यक फुट नोट लिखे हैं, जिससे वे प्रकरण अधिक प्राञ्जल हो उठे हैं।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्यय का अर्द्धांश भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा आधुनिक भारतीय भाषा-विकास योजनाके अन्तर्गत प्रदान किया गया है, एतदर्थ प्रतिष्ठानकी ओरसे हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

इस प्रकार स्वर्गीय विद्याभूषणजीके ग्रन्थसंग्रहकी यह सूची सम्पादित की जा कर पाठकोंके समक्ष उपस्थित की जा रही है। आशा है यह सूची विषयके ज्ञाता और अध्येताओंके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

होली पर्व, सं० २०१७
अनेकान्त विहार, अहमदाबाद
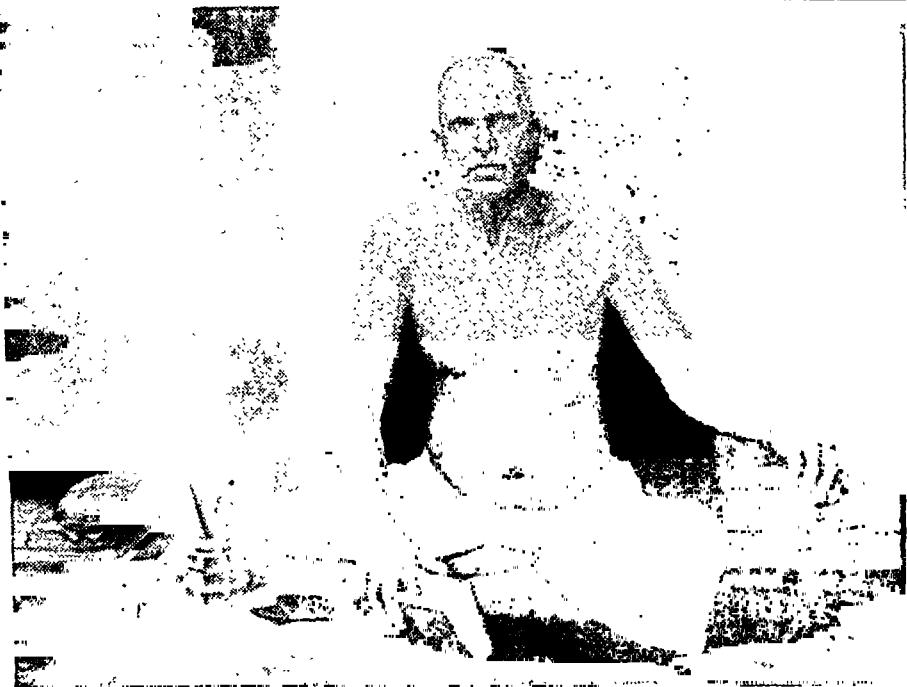
स्वर्गीय पुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्याभूषण

जन्म–माघ कृ० ४, १६२१ वि०] [निधन–मोक्षदा (मार्गशीर्ष शु०) एकादशी, २००२ वि०

* श्रीः *

स्वर्गीय विद्याभूषण पुरोहित श्रीहरिनारायणजीका संक्षिप्त जीवन-वृत्त[1]

शुभ मिति माघ कृष्णा चतुर्थी, रविवार, विक्रम संवत् १९२१के पवित्र प्रभातमें उषाकी लावण्यप्रभाके अञ्चलसे जयपुरके राज्यप्रतिष्ठित पारीककुल-पूषण विद्याभूषण श्रीहरिनारायणजी पुरोहितका अवतरण हुआ। राजस्थानके साहित्याकाशमें यह सूर्य निरन्तर एकाशीतिवर्षपर्यन्त प्रभा विकीर्ण कर साहित्य-साधनाके सतरंगी शक्रचाप बनाता रहा। स्वर्गीय विद्याभूषणजीके जन्म, जीवन और मृत्यु तीनों ही अपनी उज्ज्वल भूमिकामें अप्रतिम रहे। उनकी ज्ञानप्रभाने इतिहास और सन्त-साहित्यकी भ्रांतिनिशाके गहन आवरणोंको चीर कर प्रामाणिकताका अक्षय आलोक प्रदान किया। वे व्यक्ति, जिन्हें उनको देखनेका सौभाग्यलाभ हुआ है, सदैव उन्हें स्मरण करते रहेंगे और वे भी, जो उनकी अक्षरसम्बद्धकीर्तिके अवगाहक हैं, उनके पार्थिव अभावकी कचोट नहीं मिटा पाएंगे।

स्वर्गीय विद्याभूषणजीके शिक्षाकालमें अंग्रेजीविशेषज्ञ अंगुलिपरिमेय ही थे और उनमें भी इनका नाम सम्मानके साथ लिया जाता था। एफ० ए० और बी० ए० परीक्षाओंमें उन्होंने सर्वाधिक योग्यताके परिणामस्वरूप "लार्ड नार्थ ब्रुक" पदक एवं कालेजके सर्वोत्तम चरित्रवान् तथा मेधावी छात्र होनेके फल-स्वरूप "लार्ड लेंस डाउन" पदक प्राप्त किये। शिक्षा-समाप्तिके पश्चात् वि० संवत् १९४८से जयपुरराज्यकी सेवा अंगीकार कर उन्होंने निरन्तर चालीस वर्ष पर्यन्त विभिन्न प्रशासनिक उच्च पदों पर कार्य किया। इस अन्तरमें वह नाजिम, सी. आई. डी. इंस्पेक्टर, मोहतमिम जनानी ड्योढ़ी एवं चैरिटी सुपरिंटेंडेंटके पदों पर कुशलतापूर्वक प्रतिष्ठित रहे। राजकीय कार्यरत रहते हुए उन्हें शेखा-वाटी और तोरावाटीमें (तत्कालीन जयपुरराज्यके अधीनस्थ सीकर एवम् खंडेला प्रभृति ठिकानोंके प्रदेश) रहनेका अवसर प्राप्त हुआ जहां उन्होंने अनेक गो-शालाओं और पाठशालाओंकी स्थापना की।

---

१. जयपुरसे प्रकाशित दिसम्बर, जनवरी सन् १९४५, ४६के 'पारीक' मासिक पत्रके 'विद्या-भूषण विशेषांक' एवं स्वर्गीय विद्याभूषणजीके आत्मज श्रीयुत रामगोपालजी पुरोहित, बी. ए., एल-एल.बी.के मौखिक वक्तव्योंके आधार पर लिखित।—(सं.)

शिक्षाकी ओर उनका अगाध अनुराग था। स्वयं तो वह वाणी-मन्दिरकी देहली पर यावज्जीवन साधनाके प्रसून समर्पित करते ही रहे, औरोंको भी इसके लिए प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते रहना उनका सहज स्वभाव था। पारीक हाईस्कूल (वर्तमान कालेज) को एक साथ सात सहस्र रुपयोंका दान देकर उसकी आधार-शिलाको सुदृढ़ बनानेमें विद्याभूषणजीका सहयोग अग्रणी रहा है।

साहित्यसेवाकी ओर उनका प्रवल आकर्षण छात्रावस्थासे ही था जो स्नातकोत्तर अवस्थामें पहुँच कर इतना उत्कट हो उठा कि उनके सम्पर्की जन साहित्य और विद्याभूषणजीमें तादात्म्यदर्शन करने लगे थे। इस प्रकारके साहित्याकर्षणके मूल स्रोतका परिचय देते हुए स्वयं विद्याभूषणजीने सुन्दरग्रन्थावलीकी सम्पादकीय भूमिकामें व्यक्त किया है कि "हमारे स्वर्गीय पूज्य पिताजी, जो भाषासाहित्यके प्रेमी और मर्मज्ञ थे और जिनकी धर्म और ज्ञानमें बड़ी श्रद्धा थी, सुन्दरविलास, सुन्दरदासकृत सवैया संवत् १९३३का लीथो प्रेस का छपा बडे आनन्दसे पढ़ा करते। स्वामी गोपालदासजी भी, जो हमारे पिताजी के सत्संगी थे, हमको सुन्दरस्वामीकी रचनाओं में से यथा 'मूंसा इत उत फिरै ताक रही मिनकी। चंचल चपल माया भई किन की।' 'राम हरि राम हरि बोल सूवा' इत्यादि बड़े प्रेम, रस और स्वरसे पढ़ कर सुनाते। तव जो भाव हमारे चित्तका होता, वह अकथनीय है। फिर तो हम उक्त ग्रन्थको वड़ी तल्लीनतासे पढ़ने लग गये। हमें ऐसा जान पड़ता मानो हम आनन्दके सरोवरमें गोता लगा रहे हैं। निदान, हमारी रुचि और भक्ति सुन्दरस्वामीके वचनामृतमें तवसे ही हो गई थी।" (सुन्दरग्रन्थावली, भूमिका, पृष्ठ ३)

स्पष्ट है कि विद्याभूषणजीकी साहित्यप्रविष्टिका सिंहद्वार उनका सुन्दरदासजीकी रचनाओंके प्रति प्रवल आकर्षण ही था। यह आकर्षण वढ़ता ही गया और सुन्दरदासजीके साथ-साथ सम्पूर्ण सन्तसाहित्यके वहुमूल्य रत्नों पर उनकी दृष्टि स्थिर हो गई। अधिकसे अधिक समय सन्तसाहित्यमें लगने लगा। जिस प्रकार निर्मल दर्पणमें प्रतिविम्व संक्रान्त होता है, उसी प्रकार विद्याभूषणजीकी आत्मा पर सन्तवाणीका दर्शन आलोड़ित हो उठा। इस आत्मयोगकी स्थितिने स्वयं उस शोधकर्ताको भी सन्तके प्रातिस्विक रूपमें तदाकार बना दिया। उन्हें धुन हुई कि यह साहित्य, जो दीमकों, उपेक्षाओं, अज्ञता और ढूमलोंमें अदृश्य होता जा रहा है, रक्षित होना ही चाहिए। वस्तुतः राजस्थानकी भूमि पर हस्तलिखित अज्ञात-ज्ञात ग्रन्थोंके प्रथम उद्धारकके रूपमें विद्याभूषणजीने जो प्रवल प्रयत्न आरंभ किया उससे वहुत सा जीर्णशीर्ण साहित्य कालकवलित होते-होते वच गया।

उस समय तक नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, अखिल भारतीय स्तर पर कार्य करनेका उपक्रम कर रही थी किन्तु व्यापक क्षमता और साधनोंकी वहु-

लताके अभावमें वह कार्य संयुक्तप्रान्त तक ही कर पा रही थी। कलकत्ता की रॉयल एशियाटिक सोसायटी केवल संस्कृतग्रन्थों पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए थी। अवधी और ब्रजभाषाके महत्वपूर्ण ग्रन्थोंकी खोजका काम उत्तर भारत यथाशक्य कर रहा था और परिणामस्वरूप इन दोनों भाषाओंका बहुतसा साहित्य प्रकाशमें आता जा रहा था। प्रयत्न नहीं हो रहा था तो वह राजस्थानमें। विद्याभूषणजी इस स्थितिसे चिन्तित हो उठे। उनका हृदय क्रन्दन कर उठा। परन्तु, अकेले कितना करते ? तब उन्होंने अपने साहित्यिक मित्र बालाबख्शजी बारहठको प्रेरित कर चारणों, भाटों, राजमहालयों और जनसामान्यके समीप अस्तव्यस्त रखे हुए उपेक्षाग्रस्त डिंगल और पिंगल साहित्यके उद्धार का पुनः शक्तिभर प्रयत्न किया। प्रकाशन निमित्त सात सहस्र रुपयोंकी स्थायी निधि नागरीप्रचारिणी सभा, काशीमें स्थापित करवायी। राजस्थानी भाषाकी संपन्नताको साहित्यिकजगत्के समक्ष लानेके लिए वह सदैव उत्कण्ठित रहते थे। इस दिशामें उन्होंने एक बृहद् राजस्थानी कोषके निर्माणको परमावश्यक समझते हुए जोधपुरके श्रीयुत् सीतारामजी लाळसको सन् १९३२में उत्प्रेरित किया तथा बहुतसी संदर्भ सामग्री भी प्रदान की। वह कोष अब श्री लाळसजीके कर्तृत्वमें संपादित होकर प्रकाशित हो रहा है। इसी प्रकार सन्त साहित्यके अक्षय भंडारका प्रकाशन भी उनका मनोवाञ्छित था, जिसके लिए उन्होंने तदानीन्तन उदीयमान साहित्यिकोंकी एक समिति बना कर 'सन्त ग्रन्थमाला' की योजना—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्लीके तत्वावधानमें चालू की थी।

हस्तलिखित ग्रन्थोंकी अन्वेषणा करते रहना उनका रुचिकर कार्य था। किसी प्रयोजनसे कहीं गये हों, वहीं समय निकाल कर ग्रन्थोंकी खोज वह करते रहते थे। शेखावाटी और तोरावाटी, जहां वह दीर्घकाल तक राजकीय अधिकारीके रूपमें रहे थे, से निरन्तर ग्रन्थचयन करते रहते थे। जहां कहीं उत्तम ग्रन्थ मिला, उसे मुंहमांगे दामों पर खरीद कर अपने संग्रहालयकी शोभा बढ़ाते एवं शोधकार्यके लिए नवीन उत्साहसे जुट जाते थे। उनकी इस विशुद्ध साहित्यिक अभिरुचिसे उत्प्रेरित होकर बहुतसे विवेकशील सन्त महन्त और सद्गृहस्थ भी उन्हें सदुपयोगार्थ अपनी प्रतियां और गुटके दे दिया करते थे। विद्याभूषणजीने ऐसे कृपालु समर्पकोंका उल्लेख यथास्थान अपनी सूचीमें किया है। कतिपय ऐसे ग्रन्थ, जो उन्हें स्थायी संग्रहके लिए नहीं मिल पाते थे, उनकी प्रतिलिपियां वह अपने व्यय से निरन्तर करवाते रहते थे। ग्रंथ-सूची में इस प्रकारके अनेक प्रतिलिपिकर्ताओंका उल्लेख मूल ग्रंथके मूल स्रोतके साथ अंकित है।

ग्रन्थप्राप्तिविषयक उनके उत्कट अनुरागका वर्णन करते हुए श्रीयुत रामगोपालजी पुरोहितने एक मर्मस्पर्शी घटना सुनाई, जो इस प्रकार है :—

जयपुरमें, जहां आजकल "मानसिंह हाई वे" है, वहां पहले अठवाड़ा बाजार

लगता था, जो अब गणगौरी बाजारके चतुष्पथ पर देखा जा सकता है। इसमें विविध प्रकीर्ण वस्तुएँ विक्रयार्थ आती हैं। पुरोहितजी साहबके दृष्टिपथमें एक हस्तलिखित पुस्तक आई। जितना मूल्य उस विक्रेताने लगाया, विद्याभूषणजीके पास तत्काल नहीं था। अपरिचित होनेसे विक्रेताने नकद दामों पर ही पुस्तक देना स्वीकार किया। विद्याभूषणजीने यहां जो परिचय ग्रन्थानुरागका दिया, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अपना अंगरखा उतार कर विक्रेताके पास न्यासके रूपमें रख दिया और यह कहते हुए ग्रन्थ खरीद लिया कि अभी अमुक लक्षण वाला व्यक्ति मूल्य लेकर तुम्हारे पास आएगा, उसे यह अंगरखा लौटा देना। क्या किसी साहित्य-प्रेमीका हृदय साहित्यके लिए इस प्रकार तड़पा है? यह केवल एक झलक है, उनके उत्कट विद्यानुरागकी।

विद्याभूषणजी द्वारा सम्पादित ग्रन्थोंकी लम्बी सूचीमें[1] आयुर्वेद, ज्यौतिष, इतिहास, कथा, अनुसन्धान, काव्य और सन्तसाहित्य आदि विविध प्रकीर्णक हैं, जिन्हें देख कर उनका बहुमुखी पांडित्य सुव्यक्त होता है। जितना उनकी तीक्ष्ण दृष्टि और समर्थ लेखनीकी अकुंठ धारासे देखा लिखा गया है, वह शाणोल्लीढ मणिके समान है, जिस पर आलोचनाका वज्रतीक्ष्णचंचुप्रहार भी मोघ है।

सन्त-साहित्य और इतिहास विद्याभूषणजीके विशेष प्रिय विषय रहे। इनके लिए उन्होंने आचूड श्रमस्वेदावगाहन किया। विशेषत: सन्तसाहित्यके ग्रन्थोंमें उन्होंने जो आत्मानन्द अनुभव किया उससे वह छके रहते थे। वह लिखते हैं— "जितने ग्रन्थ हमें उपलब्ध हुए हैं, उनके अवलोकनसे ज्ञात होता है कि समग्र रचनासमूह एक अटल, अनन्यभगवद्भक्ति, प्रभुप्रेम और सच्चे गहरे हरिरसका तरंगमय समुद्र है। उसमें आद्योपान्त शान्तरसका समुद्र है जिसकी गम्भीर, धीमी, अनुद्विग्न लीला-लोलतरंगमालाएँ मनरूपी जहाजको सुमधुर गतिसे भगवच्चरणारविन्दोंमें बहाये हुए ले जा रही हैं" और यही कारण है कि दादू, मीरां, भीख, जनगोपाल, व्रजनिधि और गरीबदास आदिके दुर्लभ साहित्यपाथो-

---

१— विशूचिकानिवारण २— सतलडी ३— सुन्दरसार ४— तारागण सूर्य हैं ५— महाराज मिर्जा राजा जयसिंह ६— महाराज मिर्जा राजा मानसिंह ७— महामति मि० ग्लैडस्टन ८— व्रजनिधिग्रन्थावली ९— सुन्दरग्रन्थावली १० गुरु गोविन्दसिंहके पुत्रोंकी धर्मबलि ११— मीरां बृहत्पदावली १२— जयपुरकी वंशावली १३— होलीहजारा १४— महाराजा सवाई जयसिंह १५— श्रीजगतशिरोमणीजी १६— बारहमासी संग्रह १७— बावनीसंग्रह १८— श्रीशनि-कथा १९— विक्रमादित्य और उनके नवरत्न २०— राघवीय-भक्तमाल २०— सुन्दरोदय २२— सुन्दरसमुच्चय २३— बाजीदग्रन्थावली २४— जन-गोपालग्रन्थावली २५— माधवानलकामकन्दला २६— भीषबावनी सटीक २७— दादूचरित्र-संग्रह २८— शिखरवंशोत्पत्ति २९— जानकवि ग्रन्थावली ३०— शिखरिणीसंग्रह सटीक ३१— गरीबदासग्रन्थावली ३२— ठाकुर शिवसिंहजी ३३— महाकवि श्रीगंगके कवित्त इत्यादि।

निधिकी रत्नरश्मियां सम्भाले हुए वह कौस्तुभमणिसमुल्लसित विष्णुके समान विबुधोंके मध्यमें शोभायमान रहे हैं। उन्होंने ऐसी अनेक भ्रान्तियोंको निर्मूल किया जो सन्तसाहित्य और साहित्यकारोंके रचना, स्थान, देश, काल एवं प्रक्षिप्तांश आदिसे सम्बन्ध रखती थीं। सुन्दरग्रन्थावली और व्रजनिधिग्रन्थावलीकी बृहत् शोधपूर्ण भूमिकाओंको पढ़कर विद्याभूषणजीके गम्भीर अनुशीलन, प्रौढ़ पाण्डित्य और विलक्षण सामर्थ्यका दुर्गाढ़ परिचय प्राप्त किया जा सकता है। "मींरा बृहत् पदावली" एवं "पत्रावली" को राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित करनेका उपक्रम चालू है।

विद्याभूषणजीका इतिहास-प्रेम प्रसिद्ध था। वह कहा करते थे कि इतिहासमें मिथ्याको स्थान नहीं। ऐसे साहित्यकारके लिए, जो सत्यसेवाको ही लक्ष्य मानता है, इतिहाससे उत्तम वस्तु लाभ करना कठिन है। स्वभावतः सत्यसेवी होनेके नाते वह ऐतिहासिक शोधप्रसंगोंको प्रामाणिकताकी अकाट्य कसौटी पर कस कर ही मन्तव्यके रूपमें स्थिर करते थे। इनके द्वारा लिखित 'फर्जन्दे दौलत, महाराजा श्रीमिर्जाराजा मानसिंहजी प्रथम', 'मिर्जाराजा जयसिंह' एवं अन्य ऐतिहासिक प्रसंग स्थायी सन्दर्भके रूपमें विद्वानोंके द्वारा मान्य किये गये हैं। इतिहासके विषयमें इनको अधिकारी विद्वान् मान कर ही देशके अन्यान्य इतिहासज्ञ उनसे लिखापढ़ी करके अपना मार्गदर्शन प्राप्त किया करते थे। जयपुरराज्यकी ओर से देशके प्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकारको राजकीय ऐतिहासिक पुरालेखोंके संग्रहके आधार पर जयपुरराज्यका इतिहास लिखनेके लिए आमन्त्रित किया गया था। श्रीसरकारने कितने ही वर्षों तक उक्त पुरालेखोंका अनुशीलन और मनन करनेके पश्चात् सम्बन्धित इतिहासके बहुतसे अध्याय लिखे भी थे। किन्तु, किन्हीं कारणोंसे वह अन्तिम रूप नहीं प्राप्त कर सका। जयपुरके वर्तमान महाराजा साहब श्रीसवाई मानसिंहजीने पुरोहितजी महाराजको आमन्त्रित कर उक्त असमाप्त कार्यको पूर्ण करनेका अनुरोध किया। स्वर्गीय विद्याभूषणजी उस समय मींरांबृहत्पदावलीके कार्यमें एकान्त भावसे संलग्न थे। इसलिए उन्होंने निवेदन किया कि मींरासम्बन्धी कार्यको पूरा करके वह इतिहासके कार्यमें हाथ लगा सकेंगे। परन्तु महाराजा साहबका आग्रह-अनुरोध चलता रहा कि मींराके कार्यको स्थगित करके भी इतिहासको पहले पूरा करें। अन्ततो गत्वा राजभक्त पुरोहितजीको यह स्वीकार करना पड़ा। मींरासाहित्यसम्बन्धी सामग्री को वेष्टनोंमें बांध कर रख दिया गया और वह इस इतिहासशोधन-सम्पादनके कार्यमें लग गये। उन्होंने सर यदुनाथ सरकार द्वारा लिखित अध्यायोंको पढ़ा और उनमें आवश्यक तथ्योंका समावेश प्रामाणिक मूल कागजातके आधार पर

सही व्याख्या व विश्लेषण करते हुए किया। परन्तु, इतिहासका यह कार्य भी वह अपने जीवनकालमें पूरा नहीं कर सके और बीच में ही कालने अक्षय व्यवधान डाल दिया।

इससे मीरांसम्बन्धी शोधमें जो अपेक्षित पूर्णता उनके हृदयंगम थी एवं जिसको वह सम्भव कर रहे थे, वह भी शेष रह गयी और इतिहासके वे वेष्टन भी विद्याभूषणजीके सुपुत्र श्रीरामगोपालजी पुरोहितके कथनानुसार पुनः महाराजा साहिबको यथावत् प्रत्यर्पित कर दिये गये।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने अपने संस्मरणमें लिखा है कि 'विद्याभूषणजी इतिहासके अन्वेषक, तार्किक एवं मननशील व्यक्ति थे। इसीलिए मेरा उनका पत्रसम्बन्ध प्रायः होता रहता था।' मुगल सम्राटोंकी ओरसे जयपुरनरेशोंकी सवारीके लिए प्रदत्त 'माहीमरातिब'के क्रमोल्लेखकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए स्व० विद्याभूषणजीसे श्रीओझाजीने जो पत्रव्यवहार किया था वह बहुतसे सम्पुष्ट प्रमाणों और ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

विद्याभूषणजीके महत्वपूर्ण पत्रोंका संकलन, जिनकी संख्या साढ़े छह सहस्र-प्रायः है, उनके आत्मज श्रीयुत पं० रामगोपालजी, बी. ए. एल-एल. बी. के पास है। ये पत्र हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू में हैं। हिन्दी पत्रोंकी छंटनी राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा करवादी गयी है तथा अन्य पत्रोंका विभक्तीकरण श्रीरामगोपालजी साहब अपनी रुग्णावस्थामें भी पूर्ण मनोयोगसे करवा रहे हैं। मीरांबृहत्पदावलीका विशाल, प्रामाणिक संग्रह, विद्याभूषणजीकी अमर देन है। इसमें अद्यावधि अज्ञात मीरांके छह सौ पदों का अद्भुत संकलन किया गया है, जिनकी ज्ञात साढ़े तीन सौ पदोंके साथ पूर्ण संख्या नौ सौ पचासके लगभग है। मीरांसम्बन्धी अज्ञात पदोंका यह उद्धार विष्णुके गजेन्द्रमोक्षकी अथवा वराहके धरा-उद्धारकी स्मृति दिलाता है। विद्याभूषणजीने देशके कोने-कोनेसे पत्रव्यवहार कर मीरांके सम्बन्धमें अभूतपूर्व जानकारी प्राप्त की थी। मीरांके जितने पद उन्होंने प्राप्त किये, उनको भाषा, भाव, शैली, लोकश्रुति और परम्परा आदिकी प्रामाणिक कसौटियों पर उन्होंने परखा है और सौ टंच सुवर्णको ही मीरांबृहत्पदावलीमें स्थान दिया है। यद्यपि विद्याभूषणजीके पास समय-समय पर आने वाले विद्वानों और उनके बाद भी पुरोहित श्रीरामगोपालजी से सम्पर्क साधने वाले कतिपय आधुनिक शोधकर्ताओंने इस संकलनसे आशातीत लाभ उठाया है और स्वतन्त्र निबन्धोंकी रचनाके रूपमें प्रकाशित भी करवा दिया है, फिर भी स्वर्गीय विद्याभूषणजीके पत्रव्यवहारसे ऐसी अनेक बातें सम्मुख

आएंगी, जो मीरांके जीवन, काव्यसाधना और भक्तिपक्ष पर अभिनव प्रकाश निक्षेप करते हुए कितनी ही गवेषणाग्रन्थियोंको सुलझानेमें परम सहायक सिद्ध होंगी।

विद्याभूषणजी एक समर्थ भूमिकालेखक भी थे। अनेक ग्रन्थकार अथवा सम्पादक उनसे भूमिका लिखवाने उपस्थित हुआ करते थे। जिस पुस्तक पर वह भूमिका लिखना स्वीकार कर लेते थे, उसमें केवल उपचार निभानेके लिए ही कलम नहीं उठाते थे। अपितु वह उस ग्रन्थको, सम्पादनको, विषयवस्तु और उसके प्राप्त अप्राप्त तथ्योंको प्रचुर मात्रामें संगृहीत कर पूर्ण सूक्ष्मेक्षिकाके पश्चात् कर्तव्य साधने बैठते थे। यही कारण है कि ये भूमिकाएँ इतनी उत्कृष्ट होती थीं कि सम्पादक अथवा लेखकका परिश्रम निखर उठता था। काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ब्रजनिधिग्रन्थावली और दादू, कविया, गोपाल, सुन्दरदास और रघुनाथरूपक गीतांरो तथा बांकीदास पर इस प्रकारके सम्पादन और लेखनकी पुष्ट-प्रौढ़ छाप देखी जा सकती है।

नागरीप्रचारिणी सभा, काशीके वह आजीवन सदस्य और प्रमुख स्तम्भोंमेंसे अन्यतम थे। विद्याभूषण तो वह थे ही, विनयभूषण भी प्रथम कोटि के थे। उनका अकृत्रिम सारल्य, बालकके समान निष्कलुष एवं निरुपचार था। धर्म और सत्यके प्रति अटल निष्ठा, सदाचारका पालन, स्वार्थत्याग, सहिष्णुता एवं विचारस्थैर्य आदि गुणसमूहोंने उन्हें अपना एकमात्र आश्रय मान लिया था और वह स्वयं भी इन गुणपुंजोंमें इतने तदाकार हो गये थे कि गुण और गुणीका पार्थक्य देख पाना वज्रकपाटोंकी सन्धिकील उखाड़ना था।

इतने दिव्य, भव्य, धीर और विद्वान् होते हुए भी वह मानासक्ति और आत्मविज्ञापनके पंकसे कबीरकी चादरके समान अस्पृष्ट थे। 'दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया'के वह उपमान थे। एक उदाहरण इस प्रसंग में उपादेय होगा।

काशी नागरीप्रचारिणी सभाने विद्याभूषणजीको उनके ७५वें वर्ष पर्व पर सम्मानित करना निश्चित किया। सभाके लिए ऐसा आयोजन करना उचित ही था। मित्र परिचितोंको भी यह जान कर हर्ष होना स्वाभाविक कहा जाना चाहिए। उमंग भरे डाक्टर पीताम्बरदत्त बडथ्वालने समयसे कुछ पूर्व ही विद्याभूषणजीको पत्र द्वारा इसकी सूचना पहुँचा दी। बस, पुरोहितजी का सरल, निरभिमान हृदय इस मानभरे आयोजनके तुमुलचिन्तनसे विचलित हो उठा। जहां ऐसे अवसरकी प्राप्तिके लिए अन्य उत्कंठित रहते हैं, वहां विद्याभूषणजीको हृत्कम्पी अधैर्यने घेर लिया। भला, सरस्वतीके एकान्तमन्दिरमें उपासनालीन पुजारीको यह विघ्न कैसे रुचिकर होता और कैसे वह इस औपचारिकताके पीछे आता, जाता, लेता, देता रहता?

उन्होंने कठोर शपथ रखते हुए इस आयोजनको तत्क्षण रद करनेके लिए अपना अस्वीकृतिमन्तव्य दृढ़ताके साथ लिख भेजा। उनके शब्दोंमें कहें तो, पुरोहितजीने इस प्रस्तावको विनयके साथ दीन प्रार्थना करते हुए ठुकरा दिया। परन्तु, सभा के अन्य सभी कार्योंमें विद्याभूषणजीने संलग्नमनस्कतासे आजीवन सहयोग दिया। गीताके स्थितप्रज्ञलक्षणोंसे विभूषित विद्याभूषणजीका विनय, त्याग, समभाव और सहिष्णुता चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे।

अन्तमें, एक दिव्यदर्शनकी झांकी प्रस्तुत करनेका लोभ कलम संवरण नहीं कर पा रही है। बात अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके जयपुर अधिवेशनके प्रथम दिनकी है। एक छह फीट लम्बे, आजानुबाहु, तेजस्वी, गौरवर्ण तुषारस्नातश्वेतपुंसरस्वतीप्रतिम वृद्ध पुरुष, जिन्होंने चूड़ीदार पायजामा, भव्य श्वेत अंगरखा, गुलाबी पगड़ी और कंधे पर सांगानेरी उत्तरीय पहना हुआ था, सहारेके लिए हाथमें मूठदार छड़ी थामे हुए मंचके एकान्त कोनेमें चुपचाप आकर विराजमान हो गये। यह माननीय विद्याभूषणजी थे। सम्मेलन का सम्मर्द था। बहुत जन आ जा रहे थे। कोलाहल बढ़ रहा था। तभी श्रद्धेय श्रीपुरुषोत्तमदासजी टंडन मंच पर आये। वह पुरोहितजीके यश:सौरभके मधुव्रत थे परन्तु, साक्षात्कार सुरभित श्वेत कमलके भव्य पार्थिव व्यक्तित्वका अभी नहीं हुआ था। विद्याभूषणजीने भी टंडनजीको सुना था, देखा नहीं। अब जैसे ही टंडनजीको पता चला कि विद्याभूषणजी आये हुए हैं, वह उनकी ओर द्रुतगतिसे मिलनोत्सुक होकर चले। फिर तो श्याम सलौने टंडनजी और तुषारधौत विद्याभूषणजी एक-दूसरेसे इस प्रकार लिपट गये कि जैसे समान-उद्देश्यपथगामिनी यमुना-गंगाकी धाराएं अन्तश्छन्न सरस्वतीको लिये संगम पर एक हो गई हों।

वह व्यक्तित्व, वह विभूतिभूषित महासत्व अपनी जीवनयात्राके अडिग पदचिह्नोंको साहित्यके राजमार्ग पर, सृजनके मणिदीपकोंकी अक्षयपंक्ति- अक्षर-स्नेहसे जगमग कर अब प्रस्थान कर गया है। शेष है उसकी अक्षरसम्बद्ध कीर्ति, जो हमारे श्रुतिपुटों पर अमृतलहरियोंके शत-शत उर्मिभंग तरंगित कर रही है, करती रहेगी। विद्याभूषणजी यदि अपने श्रमस्वेदपरिप्लुत उपक्रान्त ग्रन्थोंको (मीरां, जयपुर राज्यका इतिहास प्रभृतिको) स्वयंकी आँखोंसे मुद्रित, प्रकाशित एवं सम्पन्न देख पाते तो उनसे अधिक तृप्तिलाभ साहित्यिक सहृदयोंको ही होता, परन्तु अब तो उनकी पुण्य स्मृतिके काननमें ही ये सदाबहारी कुसुम खिलखिला कर विद्याविनयभूषण पुरोहित हरिनारायणजीकी कीर्तिमंजरियोंको विकीर्ण करते रहेंगे। एवमस्तु।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी, बी.ए. -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायण 'विद्याभूषण' ग्रन्थ-संग्रह-सूची

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१	गुटका (३ कृतियाँ)				
	(१) दादूवाणी (साखी) अंग ३७	दादू दयाल	१८वीं श०	१–१७२	
	(२) दादूपद (राग २७; पद ४४०)	,,	,,	१७२–२९७	
	(३) कबीर परचई	अनंन्तदास	,,	२९७–३१५	
२	गुटका (३२ कृतियाँ)				बाबा बनारसीदासके थांभेमें सनेहीराम खानपुरिकाकी लिखी शरवती रंगकी आंटीदार छींटका गत्ता।
	(१) दादूदयालजीकी वाणी (२४२३ साखी और २४ अङ्ग)		१८४८ विक्रमी ,,	१–१५१	
	(२) दादूदयालजीका पद (शब्द) (४४० पद और २६ राग)		१८४८ विक्रमी ,,		
	(३) कबीरजीकी साखी (९१६ साखी और ५८ अङ्ग)	कबीर	१८४९	१५२–१८२	
	(४) कबीरजी का पद (४२१ पद और ७ रमैणी)	,,	,,		
	(५) नामदेवजीका पद (१५० पद, राग १५)	नामदेव	,,	१८३–२४७	
	(६) नामदेवकी साखी १३	,,	,,	२४८–२६५	
	(७) रैदासजीका पद (७१ पद और २ साखी)	रैदास	,,	२६५–२७६	
	(८) हरिदासजीका पद ९४, रमैणी १	हरिदास		२७६–२९५	
	(९) दादूजीकी ४० साखियों पर आध्यात्मिकटीका (कायावेली ग्रन्थ)			२९५–३१७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(१०) दादूजीके फुटकर शब्दोंका अर्थ		१८४९	३१७—३२१	
	(११) कबीरजीकी २६ साखियों पर टीका		,,	३२१—३७५	
	(१२) कबीरजीके १२५ पदों पर टीका		,,		
	(१३) नामदेवजीके २३ पदों पर टीका		,,	३७५—३८३	
	(१४) रैदासके ३ पदों पर टीका		,,	३८३—३८४	
	(१५) हरिदासजीके १९८ पदों पर टीका		,,	३८४—४०३	
	(१६) मुकन्द भारतीके २ पद तथा बखनाजीके ४ पद टीका सहित		,,	४०३—४०५	
	(१७) फुटकर संग्रह— नवधाभक्ति, १२ प्रश्नोंके उत्तर, शरीकत, तरकती, मारफत, हकीकत, सात धातु, ४ दिशा, ३ गुण, स्वभाव, नवनाथ, दो पद।		,,	४०५—४०६	
	(१८) नामदेवजी के टिप्पणीपदोंकी टीका (षट्चक्रकोण; दक्षिणी शब्दोंकी भाषा)		,,	४०६—४०८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(१९) फुटकर संग्रह–		१८४९		
	कवित्त अक्षौहिणीप्रमाण			४०८वाँ	
	रावणके कवित्त २			४०८वाँ	
	८ जाम आर्वल भेद ९ कवित्त			४०८–४०९	
	श्लोक समयप्रमाण				
	ब्रह्मस्तुति		”	४०९वाँ	
	२ छन्द (ब्रह्माके ४, मुख ४ वेद, ६ शास्त्र, ६ पुत्र, छहों शास्त्रोंका प्रमाण, दादूवाणी और कबीरवाणीमें)	दादू व कबीर	”		
	सनत, सनन्दन, सनत्कुमार और जडभरत तथा जनकके वाक्य (संस्कृतमें)		”	४११वाँ	
	जैतरामजीकी सौरभका छन्द	जैताराम	”	४१२वाँ	
	जगजीवनको कवित्त	जगजीवन	”	४१२–४१४	
	४ वेदमें षट्शास्त्र, ५ छन्द		”		
	जगन्नाथजीके सवैया		”		
	राघोजीको कवित्त	राघोजी	”		
	रेखता मुसलमानी फकीरोंका		”		
	शेर सूफियोंके फारसीमें		”		
	नीतिके श्लोक ३		”		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	शान्तिके छन्द ४		१८५		
	पीपकी साखी	पीपा	”		
	राम-लक्ष्मणसंवादका श्लोक		”		
	राघोकी साखी १	राघोजी	”		
	जैमलकी साखी १	जैमल	”		
	छन्द 'दादू दीनदयालको जन दर्शन दियो'		”		
	भागवत पर रूपक कवित्त		”		
	१४ विद्याके आध्यात्मिक अर्थ		”	४१५वाँ	
	च्यारों सम्प्रदाय और दादू-पन्थका आदि		”	”	
	२४ सिद्ध		”	”	
	सप्तश्लोकी गीता		”	४१६वाँ	
	चतुः श्लोकी भागवत		”	”	
	घण्टाकर्णको मन्त्र		”	”	
	देवदासका पद योगका	देवादास	”	”	
	नसीहतनामा	हरिदास	”	४१७वाँ	
	काफिर तथा मोमिनके लक्षण		”	”	
	युगादिगणना		”	”	
	४ छन्द	तत्ववेत्ता	”	”	
	पद 'जाही विध राखे राम'		”	४१८वाँ	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	भूपका कवित्त	सुन्दरदास	१८४६	४१८वाँ	
	७ वार १२ मास, राशि संप्रदाय	,,	,,	,,	
	सिद्धान्त	,,	,,	,,	
(२०)	भक्तविरदावली	हरिदास दादूपन्थी नारायणदास शिष्य	,,	४१९–४२६	कहीं दोहा और छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है। जिसमें 'तुम विन हरिदास के स्वामी ऐसा विरद कौन को छाजै' यह प्रत्यय पद प्रायः आया है। कुल ४१ छन्द हैं।
(२१)	अमृतधारा	भगवानदास अर्जुनदास-शिष्य	,,	४२६–४५५	रचनाकाल–१७२८। यह वेदान्तग्रन्थ १४ प्रभावों में वर्णित है। भगवानदास क्षेत्रवास के निवासी थे। यह वेदान्त का प्रक्रिया ग्रन्थ ललित छन्दों में है। श्लोक सं० १०००।
(२२)	कवित्त सर्वङ्ग (४९ छन्दों में)	हरिदास	,,	४५५–४६१	हरिदास 'भक्त विरदावली' के रचयिता और नारायणदास के शिष्य थे। इस ग्रन्थ के कई छन्दों में रज्जबजी का भोग है। वे छन्द रज्जबजी के ही हैं।
(२३)	जगजीवनजीकी दृष्टान्त साखी (१०९ साखी)	जगजीवन दादूशिष्य	,, ,,	४६१–४६५	
(२४)	विचारमाला	अनाथदास	,,	४६५–४७२	वेदान्त का अच्छा ग्रन्थ है, कविता उत्तम है तथा ८ विश्रामों में इसकी पूर्ति हुई है। इसका रचनाकाल १७२६ विक्रमीय है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(२५) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१८४९	४७२–४९४	रचनाकाल—१७१० । ५ उल्लासों में इसकी पूर्ति हुई है। समस्त छन्द ३०६; समस्त श्लोक ६०० ।
	(२६) रज्जबजीका कवित्त (४० अङ्ग, ८६ छन्द)	रज्जबजी	,,	४९४–५०३	प्रायः छप्पय छन्द का प्रयोग बहुलता से किया गया है ।
	(२७) सर्वङ्ग बावनी (भीषावावनी)	भीषजन	,,	५०३–५०९	रचनाकाल—१६८३ । ओंकार से स्वर और व्यञ्जन-क्रम में ५४ छप्पय छन्द है ।
	(२८) हरिबोल-चिन्तावणी	सुन्दरदास	,,	५०९–५१०	
	(२९) विवेक-चिन्तावणी	,,	,,	५१०–५११	
	(३०) तरक-चिन्तावणी	,,	,,	५११–५१३	
	(३१) सवैया (३४ अङ्ग, ५५३ सवैया)	,,	,,	५१३–५५८	
	(३२) चौपर या जूजमल्ल राजाकी कथा		,,	५५८–५७७	यह ग्रन्थ आठ उल्लासों में पूर्ण हुआ है। यह दादूजी की करामात की कथा है।
३	गुटका—				
	(१) दादू साखी शुद्ध साखी २५६५ अङ्ग ३७	दादू	१८५८	१–२१०	दिल्ली अकबरगंजमें कल्याणदासकी गुरु-परम्परामें सन्तोषदास द्वारा लिखित । यह पाठ शुद्ध है ।
	(२) दादूजीके पद शुद्ध पद ४४० राग २७	,,	,,	२१०–३८३	पूर्ण ।
	(३) दादूदयालजीकी जन्मलीला परचई । चौपाई ६६२ दोहा २४, साखी २७	जनगोपाल	,,	३८३–४५२	
	(४) त्रिलोचनकी परचई, छन्द २८	अनन्तदास	,,	४५२–४५५	अनन्तदास पीपाकी गुरुपरम्परामें थे ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(५) पीपाकी परचई, छन्द ७४७	अनन्तदास	१८५८	४५५–५२८	
	(६) नामदेवजीकी परचई, छन्द ४८	,,	,,	५२८–५३२	
	(७) कबीरजीकी परचई, छन्द २२८	,,	,,	५३२–५५२	
	(८) रैदासकी परचई २१६	,,	,,	५५२–५७३	
४	गुटका जिसमें—१२ कृतियाँ हैं।				
	(१) दादूवाणी अंग ४ (अपूर्ण)	दादूदयालजी	,,	१–५१	
	(२) पारस भाग (कीमिया शहादत-नामक महम्मद गजालीकृत फारसी ग्रन्थका अनुवाद)	अडणज सेवापंथी	,,	५१–२११	
	(३) धर्मसंवादग्रन्थ (१६३ छन्द)	खेमदास	,,	२१२–२३०	
	(४) रज्जवजीकी साखी एवं स्फुट कवित्त	रज्जबजी	,,	२३०–२३२	
	(५) दृष्टान्तसाखी आदि स्फुट संग्रहके २१० छन्द	विविध	,,	२३२–२५२	
	(६) नमस्कार वंदनाको अंग और	,,	,,	२५२–२६९	
	सर्वसाधुओंकी फुटकर साखी	नारायण (कल्याणदासपुत्र)		२५२,२६१, २६२,२६५, २७१	
	स्फुट दोहे आदि कुल ६६७	रज्जब		२५२,२५५, २५९,२६०, २६१,२६४, २६५,२६६, २६७,२६९	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	स्फुट दोहे आदि कुल ६६७	जगन्नाथ		२५३,२५४ २६४,२६६ २६५B, २६६B,२७७	
	,,	जैमल		२५४,२५८, २६५B,२७३	
	,,	सुन्दर		२५५,२५६, २६४,२६६,	
	,,	जगजीवन		२५७,२६५, २६६,२७१, २७७	
	,,	कालू		२७७	
	,,	अहमद		२६४	
	,,	जानराय		२५६	
	,,	फरीदा		२६०,२६२, २६५,२६६. २६३B	
	,,	गोरख		२५८,२६४, २६७,२६२B	
	,,	चरपट		२५८,	
	,,	परसराम		२६५,२७०, २६४B	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(४)	(६) स्फुट दोहे आदि कुल ६६७	समन		२६०,२६२, २७५	
		वाजिदा		२६०	
	,,	बखना		२६१,२६५, २६६,२६५B	
	,,	चतरदास		२६२,२६६	
	,,	राघो		२६६B, २६६B, २७०,२७६,	
	,,	तुरसी (तुलसी)		२५७,२६०, २६५,२६७, २६३B, २६४B, २६६B, २६७B, २७१,२७२	
	,,	वेम		२७३	
	,,	नानक		२६०,२६३B	
	,,	जनगोपाल		२६२B. २६४B.	
	,,	पीपा		२७४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(४)	(६) स्फुट दोहे आदि कुल १६७	रज्जब		२६३B.	
	,,	,,		२६४B.	
	,,	,,		२६५B.	
	,,	,,		२६६B.	
	,,	,,		२६७B.	
	,,	,,		२६८B.	
	,,	,,		२६९B.	
				२७०,२७१	
				२७२	
	सर्वङ्ग साखी	,,		२७८–२८६	
	रज्जबकी छोटी साखी			२८६–२[illegible]८	
	साखी आदि	दादू		२६३	
	,,	बंजल		२६९	
	,,	माधोदास		२६६B.	
	,,	नन्ददास		२६८B.	
	,,	हरिदास		२७०	
	(७) पदसंग्रह । पद सं. ३२१ सबद	दादू	१८वीं	२९८–३९०	
	पद	गरीब		,,	
	,,	कबीर		,,	
	,,	सुन्दर		,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(४)	(७) पद	जनगोपाल		२९८–३९०	
	,,	रैदास		,,	
	,,	परमानन्द		,,	
	,,	नामदेव		,,	
	,,	घड़सी		,,	
	,,	रज्जब		,,	
	,,	अग्रदास		,,	
	,,	सूरदास		,,	
	,,	मुकुन्द		,,	
	(८) नासिकेत-व्याख्यान-भाषा चौपाई ७७१, अध्याय १७	दयालदास—जगन्नाथ-शिष्य		३९०–४५१	रचना काल १७३४ ।
	(९) नाममाहात्म्य (द्विजकन्यासंवाद) अध्याय ५			४५१–४६७	
	(१०) सुख (शुक) संवाद	खेमदास		४६७–४८३	
	(११) मोहमर्द राजाकी कथा	जगन्नाथ		४८३–४९६	
	(१२) सुन्दरदासजीके सवैया कुल अङ्ग ९	सुन्दरदास		४९६–५२९	इन्दव छंदके भी सवैये हैं ।
५	गुटका— ९ कृतियाँ				
	(१) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	१८५८	१–६७	लि.क. मिश्र हरिकृष्ण, सिकन्दरामध्ये । र.का. सं १६४४ प्रतीत होता है ।
	(२) हरिचन्द सत ३५५ चौपाई	ध्यानदास	,,	६८–८०	,, ,,
	(३) रामचरित	सुन्दरदास—कालूदासशिष्य	,,	८०–१०१	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(४) [illegible]लीला	रामानन्द	१८५८	१०१–१०७	
	(५) [illegible]	जनमोहन	,,	१०७–१४०	
	(६) अट्ठाईस नाम (संस्कृत)		,,	१४०–१४२	भगवान् विष्णुके सहस्र नाममें से चुने हुए २८ नाम हैं।
	(७) रासपञ्चाध्यायी	नन्ददास	,,	१४२–२०७	
	(८) [illegible]	रामानन्द	,,	२०७–२१६	
	(९) दानलीला	चरणदास	,,	२१६–२२८	
६	गुटका—८ कृतियां				
	(१) गीत (कृष्ण तेरी आवाज में सुन कर भागी)			प्रारंभिक १७ स्फुट पत्रोंमें	
	(२) स्फुट कवित्त (बजरङ्गकी लावनी)		१९१४	,,	
	(३) हनुमानचालीसा, हनुमान लावनी			,,	
	(४) बारहमासी			,,	
	(५) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	१९१६	१–४१	
	(६) कर्मधर्मसंवाद	सोमदास रज्जबशिष्य	,,	४१–५८	
	(७) भरतविलाप	ईसरदास	,,	५८–७१	
	(८) ऊषाचरित्र	,,	,,	७१–१२८	अपूर्ण।
७	गुटका—५ कृतियां				
	(१) ध्रुवदासवाणी (जीवदशा)	ध्रुवदास राधावल्लभीहितशिष्य		१–६	इनके कई ग्रन्थ 'भारत जीवन प्रेस' में सन् १९०४में छपे हैं। मूल्य १० आने। ये ग्रन्थ नागरी प्रचारिणी सभा, काशीकी कॉपीसे छपे हैं। इसमें जो ग्रन्थ आए हैं उनके नाम ये हैं—

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(८)	७ चन्द्रायणा वा अरिल्ल अनेक अंगोंमें २०	सेवदास	१८८५	१–१०१	
	८ रेखता अनेक अंगोंमें १४	,,	,,	,,	
	९ पद अनेक रागोंमें	,,	,,	,,	
	(२) हरिदासजीकी वाणी	हरिदास	,,	,,	लि.क. मुकुन्ददास दर्शनदासशिष्य; ग्राम रामसा।
	१ ब्रह्मस्तुति ६३ छंद	,,	,,	१०१–१०५	
	२ नांवमालाग्रन्थ २१ छंद	,,	,,	०५–१०७	
	३ नामनिरूपणग्रन्थ ४३ दोहा	,,	,,	१०७–१११	
	४ मानप्रसंगग्रन्थ १५ पद्य	,,	,,	१११–११२	
	५ व्याहलोजोगग्रन्थ ३१ छंद	,,	,,	११२–११५	बहुत उत्तम है—अध्यात्म विवाह "टोडरमल जीत्यो जी" इस ढालमें।
	६ टोडरमलजोगग्रन्थ १ पद	,,	,,	११५–११६	
	७ ज्ञानीअज्ञानीपूच्छा-जोग-ग्रन्थ ४० छंद	,,	,,	११६–१२०	
	८ पद एवं रेखता ८१	,,	,,	१२०–१५०	
	९ कवित्त स्फुट ६		,,	,,	
	१० कुण्डलिया ३६ अनेक अंग		,	,,	
	११ चन्द्रायणा १९ अनेक अंग	,,	,,	१५०–१५३	
	१२ साखी अनेक अंग २५१		,,	१५३–१७०	
	(३) गोरखनाथजीकी कृतियां	गोरखनाथ			
	१ गोरखगणेहगोष्ठीजोगग्रन्थ	,,	,,	१७०–१७३	
	२ शिष्टपुराण	,,	,,	१७३–१७४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(८)	(१४) सुखसंवादजोगग्रन्थ	खेमदास रज्जबशिष्य	१८८५	२२०–२३६	
	(१५) जड़भरितचरितग्रन्थ	जनगोपाल	,,	२३६–२४६	
	(१६) गुनकठियारानामोग्रन्थ	वाजिद	,,	२४६–२५५	
	(१७) विचारमाला वेदान्त	अनाथदास	,,	२५५–२७१	रचनाकाल–सं० १७२६ (८ विश्राममें पूर्ण) लि.क. माधवदास
	(१८) मोहमरद राजाकी कथा	जगन्नाथदास	,,	२७१–२८१	८ विश्राम, लि.क. माधवदास
	(१९) दानलीला	श्रीकृष्णदास	,,	२८१–२८५	
	(२०) गुनकठियारानामोग्रन्थ	वाजिद	,,	२८५–२९१	
	(२१) लघुताग्रन्थ (संग्रह)	विविध	,,	२९१–२९५	
	(२२) नरसीजीकी हुण्डी	रतनदास	,,	२९५–२९८	
	(२३) फुटकर दोहादृष्टान्त ५३ दोहे	विविध	,,	२९८–३०२	
	(२४) लालदासकी चिन्तावणी १९६ छंद	लालदास	,,	३०२–३०९	
	(२५) ध्रुवचरित्रग्रन्थ	जनगोपाल	,,	३०९–३३१	१९ विश्राममें पूर्ण ।
	(२६) नासकेतभाषा ७२१ दोहे	दयालदास जगन्नाथदास-शिष्य	१८८६	३३१–४००	रचनाकाल–१७३४ फागुण सुदि ५ लि.क.– मुकुन्ददास दर्शनदासशिष्य, गांव खारडियामध्ये ।
	(२७) धर्मसंवाद	जनदयाल उपरोक्त	,,	४००–४२८	महाभारते यज्ञपर्वणि धर्मयुधिष्ठिरसंवाद, ४ अध्यायों में पूर्ण ।
	(२८) विरहपिंजरी (राग सूहा बिलावल, २१ अन्तरे)	सूरदास	,,	४२८–४२९	गोपी-उद्धवसंवाद "तुम लो आये जोग वृत ले दुःसर हांसी को सहै"
	(२९) मीरांजीके पद २	मीरांबाई	,,	४२९–४३०	पद १ "भगति दुहेली हो श्रीजी राइ"

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
९	(१६) त्रिलोचनकी परचई	अनन्तदास	१८४०	१४२–१४३	
	(१७) सेऊ-समनजीकी परचई	मंगल वा रघुनाथ	,,	१४३–१४७	इसका भी कर्त्ता अनन्तदास ही हो ? (सं)
	(१८) पीपाजीकी परचई	अनन्तदास	,,	१४७–२०४	
	(१९) छप्पय-कवित्त आदि	सेवादास	,,	२०४–२११	
	(२०) तर्कचिन्तामणि	सुन्दरदास	,,	२११–२१६	
१०	गुटका—२१ कृतियाँ				
	(१) परसरामजीकी वाणी	परसराम निंबादित्य-संप्रदायी	१८४७	१–५९	
	(२) सुदामाचरित्रको जोड़ो ११ कवित्त	परसराम	,,	१–५	
	(३) नाममाला	,,	,,	५–८	हरिरंगका जोड़ तक
	(४) सवैया ११	,,	,,	८–९	
	(५) साच-निषेधलीला २० चौपाई	,,		९–२३	११३ पद्य
	(६) श्रीनाथलीला ३३ चौपाई	,,		२३–२८	
	(७) श्रीहरिलीला ४० चौपाई	,,	,,	२८–८१	विश्राम ३६ । बाई अनोपावाचानार्थं लिखितं मशेन धना आलण्या पीसांगणमध्ये ।
	(८) हरि-गुरुस्मरण २७ पद	गोविन्ददेवस्वामी		८१–१२६	अनेक रागोंमें, ये बड़े कामके पद हैं।
	(९) (अ) सद्गुरुप्रणाली चौपाई ३३ (ब) सखी-नामरत्नावली	सुभगसखी रूपमंजरीशिष्या	,,	१२६–१३३	गुरुपरम्पराके वर्णनमें प्रणाम सखीभावे
	(१०) जुगलध्यान-नख-शिख २६ चौपैया छंद	,,	,,	१३३–१४१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(२४) उभयमात्राग्रन्थयोग	गोरखनाथ	१७४१–४३	१४२	गद्यमें
	(२५) पंचमात्रायोगग्रन्थ	,,	,,	१४२–१४३	
	(२६) प्राणसांकूली	,,	,,	१४३–१४४	१४४। B पर सूरदास आदि के स्फुट पद हैं जो दूसरी कलमसे लिखे हैं। (सं)
	(२७) ज्ञान चौतीसा	,,	,,	१४६	१४६। B पर सूरदास, जनगोपाल और माधोदास के भिन्न लिपि में पद हैं। (सं)
	(२८) गोरखनाथजीका छन्द, स्तुति-वचन आदि	,,	,,	१४७–१४८	
	(२९) दयाबोधग्रन्थ	,,	,,	१४९	
	(३०) अकलि-सिलोक (गोरख-मुहम्मद संवाद)	,,	,,	१४९–१५०	
	(३१) सिष्टिप्राण	,,	,,	१५०	
	(३२) गोरखनाथजीका पद	,,	,,	१५१–१६०	
	(३३) अनेक सन्त महात्माओं की शब्दियां आदि				
	महादेवकी शब्दी			१६१	
	पार्वतीकी शब्दी			,,	
	चरपटजीकी शब्दी			१६१–१६२	
	भरथरीकी शब्दी			१६२	
	हालीपावजीकी शब्दी			१६३	
	चोरंगनाथकी शब्दी			१६३	
	जती हणवंतकी शब्दी			१६३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(१२) स्फुट साधु पदावली	सूरदास,	१७४१–४३	११५A-१२८	
	,,	पीपा	,,	,,	
	,,	जनगोपाल	,,	,,	
	,,	वखना	,,	,,	
	,,	सुन्दरदास	,,	,,	
	,,	आसनदास	,,	,,	
	,,	रज्जब	,,	,,	
	,,	अग्रदास	,,	,,	
	,,	वैन	,,	,,	
	(१३) रैदासजीके पद	,,	,,	१३०Aवें पृ०	
	(१४) महादेव-गोरखनाथसंवाद व गोरख-गणेसगोष्ठी	गोरखनाथ	,,	१३१–१३३	गद्यमें
	(१५) रोमावलीग्रन्थ	,,	,,	१३३–१३४	गद्यमें
	(१६) नरवैबोध (निर्भय बोध ?)	,,	,,	१३५	
	(१७) आत्मबोध	,,	,,	१३५–१३६	
	(१८) काफिरबोध यंत्र	,	,,	१३७–१३८	
	(१९) पन्द्रहतिथियंत्र	,,	,,	१३८–१३९	
	(२०) सप्तवार-ग्रन्थ	,,	,,	१३९	
	(२१) सप्तवार-नवग्रहयंत्र	,,	,,	१३९–१४०	
	(२२) नवनोरताग्रंथ	,,	,,	१४०	
	(२३) सांख्य-दर्शन-योगग्रन्थ	,,	,,	१४१–१४२	गद्यमें

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१०	(१९) ज्ञानलीला बत्तीसी ३४ छन्द	परसराम	१८४७	२१८–२२१	
	(२०) भक्त-उपदेशिनी ६५ दोहे	,,	,,	२२२–२३०	
	(२१) फुटकर साखी ४, १ कवित्त	,,	,,	२३०–२३१	कवित्त उत्तम है ।
११	पवन-स्वरोदय	चरणदास	१८८४	७१	कार्तिक कृष्णा ३० शनि लिखितं ब्राह्मण कनीराम, ग्राम बासणामध्ये ।
१२	गुटका—६० कृतियां				
	(१) कबीरजीकी साखी, ५२ ग्रंग	कबीरदास	१७४१–४३	१–२०	नोट—यह पुस्तक पुरोहित कल्याणबक्शजी की कृपासे मालपुरेसे प्राप्त हुई । सं. १९७३ में—सं. १७४३ और सं. १७४१ इसमें लिखे हैं, पीले गत्ते का पुट्ठा हमने बँधवाया, रक्षार्थ ।
	(२) भजन पद संग्रह स्फुट	(१) सूरदास (२) तुलसीदास (३) परमानंद (४) जगन्नाथ और (५) नांपा	,, ,,	२०B	
	(३) दादूवाणी साखी ३६ ग्रंग	दादू	,,	२१–६३	
	(४) दादूपद	,,	,,	६३–६६	
	(५) खाणी-वाणी ग्रन्थ (पार्वती महादेवसंवाद)	गोरखनाथ	,,	६७–६८	
	(६) ग्रभावली	,,	,,	६८–१००	
	(७) इन्द्रियदेवताविषयग्रन्थ	,,	,,	१०१	
	(८) गोरखनाथजीकी ग्रष्ट परीक्षा	,,	,,	१०१	
	(९) श्रीदत्तगोरखसंवाद ४९ शब्द		,,	१०१–१०३	ज्ञानबोध जोग सिद्धान्त संपूरण समापता ।
	(१०) गोरखनाथजीकी शब्दी (११० शब्द)	,,	,,	१०४–११०	
	(११) गोरखबोध (गोरखमछेन्द्रसंवाद)	,,	,,	१११–११५ १२९–१३१	पृष्ठ ११५ तक ६३ शब्द फिर पृष्ठ १२९ पर १०७वें शब्दसे चालू और पृष्ठ १३१ B पर समाप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१०	(११) गोविन्दलीला पद	परसराम	१८४७	१४२–१४७	पद १६; सोरठ राग
	(१२) ओतारके पद १३	,,	,,	१४७–१५३	
	(१३) रघुनाथचरित्र जोडी १७ पद	,,	,,	१५३–१६०	
	(१४) कृष्णचरित्रको जोड़ी २८ पद	,,	,,	१६०–१६९	
	(१५) द्रोपदीको जोड़ी, २ कवित्त	,,	,,	१७०वाँ	
	(१६) गजग्राहको जोड़ी	,,	,,	१७०–१७३	पद ३–पत्र १७३ और १७३ में दो पद भक्तिमाहात्म्यके हैं।
	(१७) परसरामजीकी साखी १-३३	,,	,,		
	१ हरिरंगको जोड़ी आदि पद ११			१७३–१७४	
	२ हृद[य]प्रकाशको जोड़ी पद १३	,,	,,	१७४–१७५	
	३ पिंड-प्राणको जोड़ी पद ३	,,	,,	१७५वाँ	
	४ परदेसी-प्राणको जोड़ी पद २	,,	,,	१७५–१७६	
	५ सुद्ध मारगको जोड़ी पद ६	,,	,,	१७६वाँ	
	६ नीम-अग्निको जोड़ी	,,	,,	१७६–१७७	
	७ विरह-अग्निको जोड़ी	,,	,,	१७७–१७८	
	८ सम-प्रीतिको जोडी	,,	,,	१७८–१७९	
	९ आग-प्रीतिको जोड़ी एवं अन्य स्फुट साखियां आदि	,,	,,	१७९–२१३	
	(१८) बावनलीला (अकारादि क्रमसे) ७६ छन्द	,,	,,	२१३–२१८	रागोंमें बावनी

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	नागा अर्जनकी शब्दी		१७४१–४३	१६४	
	वालनाथकी शब्दी		,,	१६४	
	हरताली सिद्धकी शब्दी		,,	१६४	
	अजयपालकी शब्दी		,,	,,	
	लखमणनाथकी शब्दी		,,	,,	
	वालगूदाईकी शब्दी		,,	१६५	
	कर्णेराकी शब्दी		,,	,,	
	चूणकरकी शब्दी		,,	,,	
	दत्तजीकी शब्दी		,,	,,	
	जालंधरजीकी शब्दी		,,	१६६	
	गोपीचन्दजीकी शब्दी		,,	१६७	
	(३४) काजी महमदजीका पद	काजी महम्मद	,,	१६८–१७०	८ रागों में १७ शब्द, अच्छे विरहके पद हैं।
	(३५) काजी कादनजीकी साखी	काजी कादनजी	,,	१७०–१७२	अंग २। भाषा प्राय: पंजाबी।
	(३६) अनेक सन्तोंके स्फुट पद	शेख वहावुद्दीन	,,	१७२	३ पद पंजाबीमें बढ़िया।
	,,	सदना	,,	,,	२ पद १ राग बढ़िया।
	,,	त्रिलोचन	,,	,,	१ पद अच्छा।
	,,	स्योअमदास	,,	१७३	१ पद।
	,,	वीझल	,,	,,	१ पद।
	.	बेणीजी	,,	,,	३ पद २ राग।
	,,	सोझाजी	,,	१७४–१७५	७ पद गुजराती में, २ राग।
	,,	पीपाजी	,,	१७५–१७६	११ पद ३ राग।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(३६) अनेक सन्तोंके स्फुट पद	परसजी	१७४१–४३	१७६वां	४ पद, २ राग, अच्छे गुजरातीमें।
	,,	देवलजी	,,	१७७	१ पद।
	,,	मालणजी	,,	१७७	१ पद गुजराती।
	,,	नरसीजी	,,	१७७	१ पद गुजराती।
	,,	भाणजी	,,	१७७	१ पद।
	,,	सोमजी	,,	,,	३ पद, ३ राग।
	,,	कृष्णानंदजी	,,	१७८	१ पद।
	,,	सांमलियाजी	,,	,,	२ पद गुजराती।
	,,	सुखानंदजी	,,	,,	१ पद।
	,,	धनाजीभक्त	,,	,,	२ पद १ राग।
	,,	जयदेवजी	,,	,,	१ पद, १ राग।
	,,	कीताजी	,,	१७९	,, ,,
	,,	विसालीजी	,,	,,	,, ,,
	,,	सीहाजी	,,	,,	,, ,,
	,,	वालमीकजी	,,	,,	,, ,,
	,,	सारीजी	,,	,,	,, ,,
	,,	श्रीरंगाजी	,,	१८०	,, ,,
	,,	वनवैकुण्ठजी	,,	,,	,, ,,
	,,	जीवदजी भक्त	,,	,,	,, ,,
	,,	लघुविट्ठल भक्त	,,	,,	,, ,,
	,,	कमालजी	,,	,,	,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	,,	आसानन्दजी		१८०	१ पद, १ राग ।
	,,	दीपजी भक्त		१८१	,, ,,
	,,	ऋषिकेशजी भक्त		,,	,, ,,
	,,	रामानन्दजी		,,	,, ,,
	,,	अंगदजी भक्त		,,	,, ,,
	,,	भुवनजी भक्त	१७४१-४३	,,	,, ,,
	,,	ज्ञानत्रिलोकजी भक्त	,,	,,	,, ,,
	,,	नरसिंहजी	,,	१८१—१८२	,, ,,
	,,	मुकन्दभारतीजी	,,	१८२	,, ,,
	,,	डूँगर भक्त	,,	१८२	,, ,,
	,,	नापा भक्त	,,	१८२—१८३	राग ४ पद १२ ।
	,,	माधो जगन्नाथ	,,	१८३—१८४	राग ३ पद ११ ।
	,,	मतिसुन्दर भक्त	,,	१८५	राग १ पद १ ।
	,,	महाराज पृथ्वीराज	,,	१८५	राग ४ पद ४—ये स्यात् जयपुर (आमेर) के महाराजा पृथ्वीराज हैं ।
	,,	परमानन्द	,,	१८५—१८७	अष्टछाप के कवि । राग ६ पद ११ ।
	,	सूरदास	,,	१८७—१९२	राग १२ पद ३१, अष्टछापके कवि ।
	,,	पीपाजी भक्त	,,	१९२	राग २ पद २ ।
	,,	बखनाजी	,,	१९२	राग १ पद १ ।
	,,	गरीबदास दादूपुत्र	,,	१९३—१९८	राग ११ पद ३९ ।
(३७)	साधुपरिच्छा पृथ्वीराजको ग्रन्थ साखी १०६	पृथ्वीनाथ योगी	,,	१९८—२०१	अन्त में 'इति श्री प्रथीनाथ सुत्रधारमतमहापुराणे सिधीनाम श्रीसाधपरच्छाग्रंथे जोगनामसास्त्र समासिवम्' ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(३८) नामदेवजीके पद—राग १३ पद ७५	नामदेव भक्त	१७४१–४३	२०१–२१३	
	(३९) कबीरजीके पद	कबीर	,,	२१३–२६२	पृष्ठ २६२B पर एक पद गोपालका और एक पद सूरदासका भी लिखा है (सं)।
	(४०) सूरदासादिके पद फुटकर	सूरदास	,,	२६२B-२६३	बहुत अच्छे पद हैं। २६३B पत्र पर परसराम, चतरदास और त्रिलोकके भी पद हैं।
	(४१) नानककी साखी फुटकर साखी १४	नानक	,,	२६२A	
	(४२) ज्ञानसमुद्रका अंश छन्द २८ मात्रा	सुन्दरदास बूसर	,,	२६४–२६५	जोगसिद्धान्तपूजाके
	(४३) अध्यात्मबोधिनी	गरीबदास	,,	२६५–२६८	आदिमें लेखकने भूलसे रज्जबजीका नाम लिखा है पर यह गरीबदासजीकी रचना है। अन्तमें 'प्रति भगवानदासकी सों लिखी सं. १७४३' ऐसा लिखा है।
	(४४) स्फुट सन्तपदावली	(१) रज्जब	,,	२६८	
		(२) जनगोपाल	,,		
		(३) जनदुर्जन	,,		
		(४) परमानन्द	,,		
		(५) हरदास	,,		हरदासजीके पद बहुत अच्छे हैं।
	(४५) कालचिन्तावणि ६ अङ्ग	सुन्दरदास	,,	२६९–२७१	
	(४६) रज्जबजीकी साखी	रज्जब	,,	२७२–२९०	इसके अंतमें 'इति श्रीरज्जबजीकी साखी संपूरणा समाप्ता सं. १७४१ जेठ मासे थावर वारे तिथिना ८, दिन ५में लिखी प्रति स्वामी साईंदासकी सूं लिखी' ऐसा लेख है। (सं)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(४७) रज्जबजीके स्फुट पद राग ३, पद १२	रज्जब	१७४१–४३	२६०, ३१२, ३१३	
	(४८) समयसार नाटक छन्द २६१	बनारसीदास	,,	२६१–३१२	ग्रंथ पूर्ण है। आगे कुछ पद भी हैं।
	(४९) वाजिदजीकी अरिल्ल अंग ३ अरिल ४२	वाजिदजी	,,	३१४–३१५	
	(५०) बनारसीदासजीके पद राग ७, पद १४	बनारसीदास	,,	३१५–३१८	पद उत्तम हैं। अध्यात्म धमाल बहुत बढ़िया है, अन्य पद भी एक से एक बढ़िया हैं।
	(५१) स्फुट सन्त-पदावली	(१) नरसी	,,	३१८	८ पद 'करनैसुख श्रीभागोतविचार' आदि।
		(२) सूर		,,	
		(३) हरदास		,,	
	(५२) कबीरजीका चन्द्रायणा	कबीर	,,	३१९–३२०	
	(५३) कबीरजीकी शब्दी साखी चौपाइयों में	,,	,,	३२०	राग सूहामें।
	(५४) कबीरकी अष्टपदी	,,	,,	३२१	
	(५५) कबीरजीकी बारहपदी	,,	,,	३२१–३२२	
	(५६) कबीरजीकी चौपदी	,,	,,	३२२–३२३	
	(५७) सकल गहरो (इग्यारहो ?)	,,	,,	३२३	राग सूहामें, ११ छंद।
	(५८) बावनी	,,	,,	३२३–३२४	ककारसे क्षकार तक ४० चौपाई छन्द।
	(५९) रैदास-कबीरगोष्ठी दोहे ४१			३२४–३२५	
	(६०) स्फुट सन्तोंके पद	(१) सेन	,,	३२६–३३०	पृष्ठ ३२६B पर संपूर्ण ग्रन्थकी पद्यसंख्या इस प्रकार लिखी है—
	,,	(२) जैमल			
	,,	(३) मोहन	,,		कबीरजीकी साखी–७१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	पद	(४) वखना	१७४१–४३	३२६–३३०	दादूजीकी साखी १६६८।
	,,	(५) सूरदास	,,	,,	जोग्यां (योगियों) की शब्दी १६१
	,,	(६) परमानन्द	,,	,,	काजी कादनकी साखी ५७।
	,,	(७) विद्यापति	,,	,,	महादेव-पार्वतीके शब्द ६०।
	,,	(८) विद्यादास	,,	,,	दत्त-गोरखशब्द ४९।
	,,	(९) चैनदास	,,	,,	गोरखनाथकी शब्दी २१०।
	,,	(१०) रज्जब	,,	,,	गोरखमच्छीन्द्रबोध १२६।
	,,	(११) रैदास	,,	,,	गोरखनाथजीके पद ५४।
	,,	(१२) केवली	,,	,,	गोरखनाथजीके ग्रंथ १९।
	,,	(१३) पीपा	,,	,,	दादूजीके पद ३३९।
	,,	(१४) जगजीवन	,,	,,	कबीरजीके पद ३८१।
	,,	(१५) जनगोपाल	,,	,,	नामदेवजीके पद ३८१।
	,,	(१६) माधोदास	,,	,,	रैदासजीके पद ६२।
	,,	(१७) मच्छन्दर	,,	,,	फुटकर २०९।
	,,	(१८) नरसी	,,	,,	पृथीनाथजीकी शब्दी १०६।
	,,	(१९) गोपाल	,,	,,	सगळांकी जोड़को ब्योरो–
					साखी २४६४।
					पद ११२८।
					शब्दी ७१२।
					आपर बत्तीसके लेखै १२८८५।
					नोट—इस पुस्तकमें दो जगह संवत् लिखा है—

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)					१७४३ और १७४१। यदि यह लेखन-समय हो तो पुस्तक का प्राचीन होना सिद्ध होता है परंतु पहले ४३ और फिर ४१ लिखना तथा मिती भी ठीक न लिखना संदेह उत्पन्न करता है। शायद असल पुस्तकमें जिससे नकल की गई होगी ये संवत्, मिती लिखे होंगे, परंतु पुस्तकके पन्ने पुराने और जीर्ण होनेसे इसके प्राचीन होनेमें सन्देह नहीं रहता तथा इसमें बहुत इधरके समयके संतोंकी वाणी, पद आदि नहीं हैं; जो कुछ हैं प्राचीन हैं। इसमें गोरखनाथजीके ग्रन्थ बहुतायतसे हैं, रज्जबजीके संक्षिप्त हैं। पदोंका संग्रह विलक्षण और उत्तम है। पृथ्वीराजजी राजाके पद सबसे पहले इसी गुटकेमें मिले हैं। पृथ्वीराजजी का समय (१५५९ से १५८४) दादूजी से पहलेका है। पदोंके ढंगसे भी वे जोगियोंकेसे प्रतीत नहीं होते। चैनजीके पदोंकी भाषा चुटीली, उत्तम और मुहावरेदार है। क्या ये रज्जबजीके शिष्य थे ? नाटक समयसारका इसमें होना और विशेषकर बनारसीदासके पद जैन दादूपंथी सम्बन्ध दिखाता है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१३	गुटका जिसमें— रज्जबजीकी वाणी, साखी, कवित्त, सवैया, पद, अरिल और स्फुट ग्रन्थ छंटे हुए।	रज्जब दादूशिष्य	१७४३	१५१	पुस्तक मालपुरेसे पुरोहित कल्याणबक्षजीसे वैशाख वदि ५ सं० १९७४को प्राप्त। प्राचीन लिपि। खालका दीमक खाया हुआ गत्ता पुट्ठे पर अन्दरके कागज पर संवत् १७३२ और १७४३ लिखा है। इसकी लिखावटकी चाल भी पुरानी ही है। कागज भी पुराना है। साखी और पदोंको छांटा (चुना) है। यह छांटनेकी चाल उस समय चल पड़ी थी क्योंकि इस समयकी और भी कुछ पुस्तकोंमें साखी छंटी हुई हैं। क्रिया, सकार, द्वित्वका अभाव और जोशीके लड़कोंकी सी लिखावट भी पुरानेपनका प्रमाण है।
१४	गुटका—				खुला हुआ (पत्राकार)
	(१) दादूवाणी साखी ३६ अंग	दादू		३३–७२	आदिके ३२ पत्र नहीं है।
	(२) कबीरजीकी साखी २९ अंग	कबीर		७२–८६	बीचमें पत्र खण्डित हैं।
	(३) मिया वाजीदजीकी साखी १८ अंग	वाजीद		८६–१०२	
	(४) कबीरजीकी रमैणी व अष्टपदी	कबीर, हरिदास		१०२–११८	११५का पत्र नहीं है।
	(५) सकलगहगहा आदि हरिदासजीके ३० ग्रन्थ				पत्र बहुत जीर्ण हैं। अतः मरम्मत होनेसे पहिले विवरण नहीं भरा जा सकता।
	(६) जैनजंजाल	रज्जब		११८वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१४)	(७) दोषदरीबे भाग ३६वां	रज्जब		११८वां	
	(८) कायावेली	दादू		११८—११६	
	(९) अध्यात्मबोध	गरीबदास दादूपुत्र		११६—१२४	
	(१०) मोहविवेक	जनगोपाल दादूशिष्य		१२४—१२८	
	(११) चौबीस गुरोंकी लीला छंद ५७	,, ,,		१२८—१३०	
	(१२) भरथचरित्र छन्द ६२	जनगोपाल		१३०—१३३	
	(१३) ध्रुवचरित्र छन्द १६४	,,		१३३—१४०	
	(१४) प्रह्लादचरित्र	,,		१४०—१४४	
	(१५) सुखसंवाद छन्द २०६	,,		१४५—१५२	१४५ वां पत्र नहीं है।
	(१६) दत्तात्रेयके २५ गुरुओंकी लीला	जगन्नाथ दादूशिष्य		१५४—१६२	१६० वां पत्र नहीं है।
	(१७) सर्वाङ्गयोग	रज्जबजी		१६२—५०७	
	(१८) आखर-उद्धारबावनी	,,			अपूर्ण। अन्तमें एक फटा पत्र है।
१५	गुटका—				
	(१) दादूजीकी साखी ३७ अंग साखी २५६३	दादूजी	१८२५	३—१२२	आदिके दो पत्र नहीं हैं परन्तु ग्रन्थ आरंभसे है।
	(२) दादूजीका पद ४४४ अंग ३७		,,	१२२—२०५	इसमें दुवाराकी साखी भी है। प्रति स्वामी गोपालदासजी गोठड़ेवालोंके अस्तलकी है। लाल केनवासकी छींटका गुटका।
१६	गुटका—				
	(१) दादूजीकी साखी	,,	१७१८	६८	यह गुटका उदयपुरकी जमातका है। स्वामी सेवादासजीने भेजा है। इसमें भाषा प्राचीन ढंगकी है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१६)	(२) दादूजीका पद २७ राग ४३४ पद		,,	९८–१६१	
	(३) कबीरजीकी साखी अंग ३		१७१८	१६१–१६५	गुरुदेव, स्मरण और चिन्तावणी ।
	(४) ध्रुवचरित्र २७७ छंद	जनगोपाल	,,	१६५–१७८	
	(५) प्रह्लादचरित्र	,,	,,	१७८–१८०	अपूर्ण ।
	(६) गोपीचन्दचरित १४३ छंद	खेमदास	,,	१८०–१८६	
१७	गुटका—				
	(१) दादूजीकी वाणी		१९०२	१–२१३	
	(२) दादूजीकी साखी				
	(३) दादूजीका पद		,,	२१३–३५३	
	(४) दादूजन्मलीला-परचई	जनगोपाल	,,	३५३–४०६	
१८	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ	,,	१८२	भरतपुरके महाराजकुमार श्रीप्रतापसिंहके निमित्त सं. १७९४में रसपीयूषनिधि नामक ग्रन्थकी रचना की । पंडित फतेसिंहजीके पास तथा किला भरतपुरमें इस ग्रन्थकी प्रतियां देखी थीं । यह प्रति पंडित फतेसिंहजी सूर्यभान वकील भरतपुरवालोंकी प्रतिसे जो सं. १८९४की है, उतारी गई ।
१९	विक्रमचरित्र (पंचडंडनी कथा)	कवि नरपति	१६६२	८०	यह किसी प्राचीन पुस्तककी नकल है । भाषा प्राचीन प्राकृत-गुजराती-डिंगल-मिश्रित । वुध (अर्बुद) मालातिरिमध्ये श्रळ्हू पाने मुनि सव(शिव)दास लषीतं आत्मार्थे ।
२०	राजनीति-कवित्त आदि	देवीदास	१९५९	२७	मंडावेमें लिखा गया ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२१	(१) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१८७३	१–१०२	१७७६की प्रतिकी नकल
	(२) मोहमर्द राजाकी कथा	जगन्नाथ तुरसीशिष्य	,,	१०२–२०४	नगर बांसकोमें लिखित
२२	गुटका—कृतियाँ २०				
	(१) सनेहलीलादोहे १२२	विष्णुदास	१८८३	१–२२	'एक समय व्रजवासकी सुरति करी हरिराय' इत्यादि पद हैं
	(२) ककाबत्तीसी ३७ दोहे	सन्तदास	,,	१–७	
	(३) सनेहसंग्राम २४ कुण्डलिया	सवाई प्रतापसिंह	१८८४	७–१८	
	(४) सनेह साजनका दोहा २०		,,	१८–२२	
	(५) शिवगौरीमंगलाचार-गोत्राचार			२३–२६	
	(६) एकश्लोकी भागवत-रामायणादि			२६–२८	
	(७) बारहमासा छन्द १२	भवानीराम		२८–३१	
	(८) कृष्णचरित्र-बारहखड़ी	श्रीनिवास	१८८८		र.का.–संवत पावक[३]शर[५]वसु[८]शशि[१] १८५३
	(९) विलोमाक्षरश्लोक और दोहा	रामचरण		१	
	(१०) नागारासो निसाणी	,,	१८७२	१–१०	
	(११) बारहमासा छन्द १२	कुशलेश	,,	१०–१९	लिखी हणवंताके तांई। अच्छी कविता है।
	(१२) राजनीतिका कवित्त		,,	१९–२२	'नीतिनवरत्न' नामक काव्यके ९ छन्दोंमें से केवल ३ छन्द हैं
	(१३) रागकोष्ठक व रागमालाके ३१ दोहे		,,	१–८	
	(१४) स्फुट कवित्त		,,	८–१२	अति सुन्दर
	(१५) भवानीकी आरती	शिवानन्द	,,	१२–१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२२)	(१६) स्फुट कवित्त आदि	गिरधर कविराय, सवाई प्रतापसिंह	१८७२	१३–१७	इसमें सवाई प्रतापसिंहरचित वक्रोक्ति-अलंकारके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।
	(१७) दानलीला	कृष्णदास	,,	१–१०	
	(१८) होनहारके कवित्त ६	मानसखी ?		१०–१३	
	(१९) मुरलीविहार	सवाई प्रतापसिंह		१३–२१	रचनाकाल–१८४९
	(२०) वर्षाभविष्यसूचक दोहे			२१–२५	
२३	गुटका—कृतियां ९				
	(१) प्रीतिलता	,,	१९००	१–१९	यह गुटका गुरु त्र्यम्बकरामजी धांगध्रा वालोंका है। इसमें ९ ग्रन्थ सुन्दर लिपिमें लिखे हुए हैं परन्तु पत्रोंको कीड़ोंने खाकर छेदयुक्त कर दिये हैं।
	(२) फागरंग	,,	,,	१९–३७	
	(३) प्रेमप्रकाश	,,	,,	३७–४९	
	(४) विरहसलिता	,,	,,	४९–५८	
	(५) सनेहबहार	,,	,,	५८–६६	
	(६) मुरलीविहार	,,	,,	६६–७३	
	(७) रमकझमकबत्तीसी	,,	,,	७३–७८	
	(८) रासको रेखता	,,	,,	७८–८५	
	(९) सुहागरैनि	,,		८५–९०	
२४	गुटका—				
	(१) रेखतासंग्रह २१२ रेखता	,,		७८	यह गुटका पुजारी श्रीनाथजीसे प्राप्त हुआ। लिपि सुन्दर है।
२५	गुटका—				
	(१) व्रजनिधि-मुक्तावली	सवाई प्रतापसिंह, बुधप्रकाश, रसराशि, किसोरअली, वंशीअली, हितकारी	१८७४ से पूर्व	८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२६	गुटका—				
	(१) नीतिनवरत्न			१–२	
	(२) मध्याक्षरी कवित्त	सुन्दरदास		२–३	
	(३) करुणाबत्तीसी	माधोराम		१–६	
	(४) सुन्दरसिंगार	सुन्दर कवि आगरेके		१–६	
	(५) नीतिमंजरी	सवाई प्रतापसिंह	१८८८	१–१३	
	(६) शृंगारमंजरी	,,		१३–२४	
	(७) वैराग्यमंजरी	,,		२४–३८	
	(८) अष्ट जाम	देव कवि		३८–५५	
	(९) राजनीतिभाषा	उम्मेदराम		५५–५६	कही राम मंत्रीन तें, इह नृप नीति अखेद । विनयस्यंघ नलवन्तहित, भाषा करी उमेद ।
	(१०) अनेकार्थ मंजरी	नन्ददास		५६–६७	
	(११) चाणक्यनीतिभाषा	उम्मेदराम		६७–८२	रचनाकाल–१८७२
	(१२) फागरंग	सवाई प्रतापसिंह		८२–८८	
	(१३) सनेहसंग्राम	,,		८८–९२	,, १८५२
	(१४) स्फुट कवित्त	पद्माकर		९२–९६	इसके अन्तमें ९६ पृष्ठ पर 'उरग मीन लोय' इत्यादि कवित्तका कोष्टक है । चित्र काव्य है ।
		घनानन्द		,,	
		देव		,,	
		वृन्द		,,	
		ठाकुर		,,	
		लाल		,,	
		कालिदास		,,	
		देवनाथ		,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२६)	(१५) षड्ऋतुवर्णन	पद्माकर		९६–१०१	
	(१६) सर्वंगबावनी	भीखजन		१०१–१०५	
	(१७) स्फुट कवित्त			१०६–१०७	लखनऊके नवाबको ।
२७	गुटका—				
	(१) दादूवाणी (साखी) पद आदि	दादू	१९वीं	१–४२	
	(२) स्फुट पद संग्रह	नामदेव	,,	४२–७२	
	,,	विद्यादास	,,	,,	
	,,	मीरां	,,	,,	
	,,	चैन	,,	,,	
	,,	केवल	,,	,,	
	,,	गरीब	,,	,,	
	,,	कबीर	,,	,,	
	,,	रज्जब	,,	,,	
	,,	सुन्दर	,,	,,	
	,,	बखना, गोरखनाथ आदि	,,	,,	
२८	गुटका—				
	(१) सनेहलीला	विष्णुदास	,,	१–३१	इस गुटकेमें मोटे अक्षर लेखकके हाथके हैं। सनीसरजीकी कथामें ३ कथाएँ अज्ञात कर्तृक हैं।
	(२) सनीसरजीकी कथा			३२–५१	
२९	गुटका—				
	(१) गीतामाहात्म्यभाषा	पद्मपुराणोक्त	,,	२०४	मोटे अक्षर हैं। भाषा सरल है।
	गुटका—				
३०	(१) सनेहलीला	विष्णुदास	१८७१	६–१७	लि.क. शम्भुराम। प्रारंभके ५ पत्र नहीं हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३०)	(२) पट्टी पहाड़ा			१८–४०	नोट—प्रत्येक पृष्ठ पर बीचमें पट्टी पहाड़े और ऊपर नीचे प्रास्ताविक दोहे लिखे हैं। (सं.)
	(३) सनीसरजीकी कथागद्य		१८७२	१–२६	
३१	गुटका जिसमें—				
	(१) ऊषाहरण	रामदास	१९१०	६४	ग्रंथका निर्माणसंवत् नहीं दिया है। ग्रंथकारने अपना निवासस्थान गाँव इमलाना सिरोंज इलाका टौंक, मालवा प्रदेश लिखा है। इनके पिताका नाम मनोहरदास था।
३२	गुटका—				
	(१) रामायणकीर्तन दोहे ८७	रघुराज		१–१२	संभवतः ये महाराज रघुराजसिंह रीवाँ वाले हैं।
	(२) दोहावली, दोहे ८२	रामसखे		१२–१९	इनका निवासस्थान बहराइच और गोरखपुरके पास कहीं था। प्रतिके अंतमें 'इति श्री महाराज सखेजू कृत दोहावली संपूर्णम्' ऐसा लिखा है। श्री रामसखेका विवरण मिश्रबंधु-विनोदमें दिया है।
३३	गुटका—				
	(१) नीतिनवरत्न छप्पय छप्पय ९	केशवदास	१९३४ ई०	१–३	'साहित्यसुषमा'में पण्डित रामदहिन मिश्रने इनको केशवदासकृत लिखा है। उसीसे प्रतिलिपि की है।
	(२) नवरत्न-कवित्त	,,		१–३	
	(३) विनयकी छप्पय ४	,,	,,	१–३	
	(४) नीति-विनोद (१५९ नीति व धर्मके वाक्य)				यह वाक्यावलि कवि फतहनाथजी गणपति भारतीके वंशजसे प्राप्त हुई है। सं० १९२३में

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३३)					नकल कराई है। संख्या ४६से ६५ तक असल पुस्तकमें नहीं है। बड़े कामकी बातें हैं। अन्तमें दोहोंमें गुरुपरम्परा इस प्रकार है—रामानन्द, अनन्तानन्द, कृष्णदास पयहारी, अग्रदास, विनोददास, अनन्तदास।
३४	गुटका—				
	(१) पीपापरची	अनन्तदास	१७१५	२४	यह जीर्ण गुटका है, और संवत् १७१५का लिखा हुआ है। अन्तमें लिखा है—संवत् १७१५ वर्षे शाके १५८० महामाङ्गलिक फाल्गुन-मासे-शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां १३ गुरुवासरे डिण्डुपुरमध्ये स्वामी विरागदासजी-शिष्य स्वामी माधोदासजी तत्शिष्य वृन्दावनेनालेखि आत्मार्थे, शुभम् भवतु श्रीरामो-जयति।
	(२) सूचीपत्र		,,	६	
	(३) दादूसाखी	दादूदास	,,		
	(४) उत्पत्तिनिर्णय	रज्जब	,,		
	(५) अविगतलीला	,	,,		
	(६) कबीरजीका पद	कबीर	,,		
	(७) कबीरजीकी रमैणी (चन्वैणी)	,,	,,		
	(८) कबीरजीकी दुपदी	,,	,,		
	(९) कबीरजीकी सतपदी	,,	,,		नोट—यह गुटका अत्यन्त जीर्ण है और पत्र तड़कने हैं, अतः श्रीपुरोहितजीकी सूचीके अनुसार ही कृतियोंके नाम यहाँ अङ्कित कर दिये हैं। पत्रोंकी संख्या इनकी मरम्मत होनेके बाद ही लगाई जा सकती है। (सं०)
	(१०) कबीरजीकी तारापदी	,,	,,		
	(११) कबीरजीकी अष्टपदी	,,	,,		
	(१२) कबीरजीकी चौपदी	,,	,,		
	(१३) सकलगहगहा	,,	,,		
	(१४) बावनीग्रन्थ	,,	,,		
	(१५) कबीरजीकी साखी ८०० अंग ५७	,,	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१६) नामदेवजीका पद	नामदेव	१७१५		
	(१७) नामदेवजीकी साखी	,,	,,		
	(१८) रैदासजीका पद	रैदास	,,		
	(१९) हरिदासजीका पद	हरिदास	,,		इनकी ३०पदी, बारहपदी और १०पदी भी
	(२०) हरिदासजीकी साखी	,,	,,	२०७–२६६	इन पदोंके आदिमें है।
	(२१) नानकजीका पद	नानक	,,	,,	
	(२२) नानकजीकी साखी	,,	,,	,,	
	(२३) पीपाजीका पद	पीपा	,,	,,	
	(२४) पीपाजीकी साखी	,,	,,	,,	
	(२५) स्योजीका पद	स्योजी	,,	,,	
	(२६) स्योजीकी बेली	,,	,,	,,	
	(२७) त्रिलोचनका पद	त्रिलोचन	,,	,,	
	(२८) शिवश्रमका पद	शिवश्रम	,,	,,	
	(२९) बीजलका पद	बीजल	,,	,,	
	(३०) बेणीका पद	बेणी	,,	,,	
	(३१) रामानन्दका पद	रामानन्द	,,	,,	
	(३२) मतिसुन्दरका पद	मतिसुन्दर	,,	,,	
	(३३) कमालका पद	कमाल	,,	,,	
	(३४) भुवनका पद	भुवन	,,	३३६ से	
	(३५) अङ्गदका पद	अङ्गद	,,		
	(३६) सुखानन्दका पद	सुखानन्द	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(३७) कृष्णानन्दका पद	कृष्णानन्द	१७१५		
	(३८) सांवलियाका पद	सांवलिया	,,		
	(३९) परशरामका पद	परशराम	,,		
	(४०) परशरामकी साखी	,,	,,		
	(४१) सदनाका पद	सदना	,,		
	(४२) सैनका पद	सैनभक्त	,,		
	(४३) कानडिया रावलका पद	कानदास	,,		
	(४४) भाणका पद	भाण	,,		
	(४५) नरसी महताका पद	नरसी	,,		
	(४६) बोहितदासका पद	बोहितदास	,,		
	(४७) श्रीरङ्गका पद	श्रीरङ्ग	,,		
	(४८) भीमकी साखी	भीम	,,		
	(४९) अध्यारकी गोढली	अध्यार	,,		
	(५०) अध्यारका पद	,,	,,		
	(५१) अध्यारको रासो	,,	,,		
	(५२) सोमका पद	सोम	,,		
	(५३) चतरभुजकी वेदमहिमा	चतरभुज	,,		
	(५४) चतरभुजका पद	,,	,,		
	(५५) सन्तदासका पद	सन्तदास	,,		
	(५६) जीवदका पद	जीवद	,,		
	(५७) नरसिंह भारतीका पद	नरसिंह	,,		

क्रम ।	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(५८) डूंगरदासका पद	डूंगरदास	१७१५		
	(५९) धनाका पद	धना भक्त	,,		
	(६०) जयदेवकी अष्टपदी	जयदेव कवि	,,		
	(६१) लघुवीठलका पद	लघुवीठल	,,		
	(६२) व्यासका पद	व्यास	,,		
	(६३) बीसाका पद	बीसा	,,		
	(६४) नायिकका पद	नायिक	,,		
	(६५) सारीका पद	सारी	,,		
	(६६) गालिबका पद	गालिब	,,		
	(६७) हृषीकेशकापद	हृषीकेश	,,		
	(६८) वैकुण्ठवनका पद	वैकुण्ठ	,,		
	(६९) मुकुन्दका पद	मुकुन्द	,		
	(७०) केशवका पद	केशवदास	,,		
	(७१) सूरका पद	सूरदास महाकवि	,,		
	(७२) सूरपच्चीसी	,, ,,	,,		
	(७३) परमानन्ददासका पद	परमानन्ददास	,,		
	(७४) माधोजगन्नाथका पद	माधोजगन्नाथ	,,		
	(७५) चत्रका पद	चतरदास	,,		
	(७६) प्रागदासकी साखी	प्रागदास (डीडवाणा)	,,	३०८—३१०	
	(७७) प्रागदासका पद	,, ,,	,,	,,	
	(७८) दादूस्तुति सवैया	रज्जब	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(७९) रघुवाका विणजारा	रघुवा	१७१५		
	(८०) पठाणका विणजारा	पठाण	,,		
	(८१) ज्ञानत्रिलोकका पद	ज्ञानत्रिलोक	,,		
	(८२) बावनीग्रन्थ	रज्जब (?)	,,		
	(८३) वेईदासका पद	वेईदास चारण	,,		
	(८४) ईशरदासका पद	ईशरदास चारण	,,		
	(८५) कवित्त	,,	,,		
	(८६) चौवीस सिद्धि	,,	,,		
	(८७) नापाका पद	नापादास	,,		
	(८८) छीतमका पद	छीतमदास	,,		इनके और पद ५५९ पत्र पर भी हैं।
	(८९) जगजीवनका पद	जगजीवनदास (टहलडी-वाले)	,,		
	(९०) जैमलका पद	जैमल (दादूशिष्य)	,,		
	(९१) जैमलकी साखी	,, ,,	,,		
	(९२) टीलाका पद	टीला ,,	,,		
	(९३) बखनाका पद (व्याहलो)	बखना ,,	,,		
	(९४) अकललीला और पद	रज्जब	,,		
	(९५) रज्जबकी साखी	,,	,,		
	(९६) भेंटका सवैया	,,	,,		
	(९७) सीहाका पद	सीहा	,,	३३६वाँ	
	(९८) भुवनको पद	भुवन	,,	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(९९) परसको पद	परस	१७१५	३३६वाँ	
	(१००) सरसको पद	सरस	,,	,,	
	(१०१) भैंरूं सेवड़ाका पद	भैंरू सेवड़ा	,,	,,	
	(१०२) कील्हजीका पद	कील्हदास	,,	,,	
	(१०३) पृथीराजका पद	पृथीराज (राजा जोधपुरके)	,,	३३६–३७वेंमें	
	(१०४) कान्हाका पद	कान्हा	,,	३३७	
	(१०५) कृष्णदासका पद	कृष्णदास	,,	३३७	
	(१०६) लाडणका पद	लाडण	,,	३३८	
	(१०७) दीपाका पद	दीपा	,,	,,	
	(१०८) गोव्यन्ददासका पद	गोविन्ददास	,,	,,	
	(१०९) आशानन्दवो पद	आशानन्द	,,	,,	
	(११०) पूरणको पद	पूरण	,,	३३९	
	(१११) वाल्मीकको पद	वाल्मीक	,,	,,	
	(११२) बींजियाका पद	बींजियोदास	,,	,,	
	(११३) अध्यारको पद	अध्यार	,,	,,	
	(११४) नेतको पद	नेतदास	,,	,,	
	(११५) पीथाको पद	पीथा	,,	३४०	
	(११६) सोझाको पद	सोझा (दादूशिष्य)	,,	,,	
	(११७) घाटमदासका पद	घाटमदास	,,	,,	
	(११८) काजी कादनकी साखी	काजी कादन (पञ्जाबी)	,,	३४०–३४४	
	(११९) काजी महम्मदका पद	काजी महम्मद	,,	३४४–३४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१२०) शेख बहावदीका पद	शेख बहावदी	१७१५	३४७वाँ	
	(१२१) शेख फरीदाकी साखी	शेख फरीदुद्दीन	,,	३४७—३४८	
	(१२२) गोरखनाथजीका पद	गोरखनाथ	,,	३४८—३५६	
	(१२३) गोरखनाथजीकी तिथि	,,	,,	३५६वाँ	
	(१२४) नरवयबोध	,,	,,	३५६—३५७	
	(१२५) काफरबोध	,,	,,	३५७—३५८	
	(१२६) अकलि सिलोक भाषा	,,	,,	३५८—३५९	
	(१२७) प्राणसांकली	,,	,,	३५९वाँ	अन्तमें 'नमो देवाय गुरुगोरख-पादुका नमस्ते ।'
	(१२८) शिष्यादर्शन ग्रन्थ	,,	,,	३५९—३६०	
	(१२९) ज्ञानचौतीसी	,,	,,	३६०—३६२	
	(१३०) गोरखमछीन्द्रबोध	,,	,,	३६२—३६८	
	(१३१) आत्मबोध	,,	,,	३६८वाँ	
	(१३२) अभयमात्रा	,,	,,	,,	
	(१३३) गोरखनाथजीका छन्द	,,	,,	३६९वाँ	इसमें ६ छन्द हैं । प्रत्येक के अन्तमें 'मच्छीन्द्र-पूता जोग जुगन्ता जागै गोरख जग सूता' यह टेक आई है ।
	(१३४) गोरखनाथ सप्तवार	,,	,,	,,	
	(१३५) गोरख-गणेशसंवाद	,,	,,	३७०वाँ	
	(१३६) महादेव-गोरखसंवाद	,,	,,	३७०—३७२	
	(१३७) महादेव-उमासंवाद	,,	,,	३७२—३७४	
	(१३८) प्राणसांकली	चौरङ्गनाथ	,,	३७४—३७९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१३९) कन्थडबोध(कन्थड़गोरखसंवाद)	गोरखनाथ	१७१५	३७९–३८०	
	(१४०) गोरखशब्दी (१७७ चौपाई)	,,	,,	३८०–३८६	
	(१४१) भरथरीजीका संख (राजा-राणीसंवाद)	,,	,,	३८६–३८७	इसमें १८ छन्द हैं, वे बड़े प्रभाव के हैं।
	(१४२) भरथरीजीकी शब्दी	,,	,,	३८७–३८८	
	(१४३) हणवन्तजीका पद और भजन	हणवन्त	,,	३८८–३८९	
	(१४४) हणवन्तजीकी शब्दी	,,	,,	३८९–३९०	
	(१४५) गोपीचन्द्रजीका पद	गोपीचन्द्र राजा	,,	३९०वाँ	
	(१४६) गोपीचन्द्रकी शब्दी	,,	,,	,,	
	(१४७) सती कणेरीका पद	कणेरी	,,	,,	ये कनफटे जोगी थे।
	(१४८) कणेरीपावकी शब्दी	,,	,,	,,	,,
	(१४९) हालीपावका पद	हालीपाव	,,	३९१वाँ	,,
	(१५०) हालीपावकी शब्दी	,,	,,	,,	,,
	(१५१) जलन्धरीपावकी शब्दी	जलन्धरीपाव	,,	,,	,,
	(१५२) नागार्जनकी शब्दी	नागाअर्जन	,,	,,	,,
	(१५३) चर्पटजीकी शब्दी	चर्पटपाव	,,	३९१–३९३	,,
	(१५४) चौरङ्गीपावकी शब्दी	चौरङ्गी पाव	,,	३९३वाँ	,,
	(१५५) शिवजीकी शब्दी	(कोई नाथ)	,,	३९३–३९४	,,
	(१५६) पार्वतीकी शब्दी	,,	,,	३९४वाँ	,,
	(१५७) बालनाथजीकी शब्दी (१० साखी)	बालनाथ	,,	,,	बहुत जोरदार वचन हैं।
	(१५८) सिद्ध गरीबनाथकी शब्दी	गरीबनाथ	,,	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१५९) चुणकनाथकी शब्दी	चुणकनाथ	१७१५	३९५वाँ	
	(१६०) मींडकीपावकी शब्दी	मींडकीपावनाथ	”	”	
	(१६१) घोडाचोलीकी शब्दी	घोडाचोलीपावनाथ	”	”	
	(१६२) अजयपालकी शब्दी	अजयपाल	”	”	
	(१६३) सिद्ध हरतालीकी शब्दी	सिद्ध हरताली	”	३९६वाँ	
	(१६४) धुन्धलीमलकी शब्दी	धुन्धलीमल	”	”	
	(१६५) दत्तजीकी शब्दी	दत्त	”	”	
	(१६६) चत्रनाथका पद	चत्रनाथ (आमेरका ?)	”	३९७वाँ	
	(१६७) पृथीनाथजीकी शब्दी	पृथीनाथ	”	३९७–३९८	
	(१६८) पृथीनाथका जोगग्रन्थ (१०४ पद्य)	पृथीनाथ सूत्रधार	”	३९८–४०१	अन्तमें 'इति श्री पृथीनाथ सूत्रधारे मर्त महा-पुराणे सिद्धनाम श्रीसाधपरिष्याजोगशास्त्र समाप्त ।'
	(१६९) सिवसंमोध-आत्मांप्रचयजोग-ग्रन्थ	”	”	४०१–४०३	
	(१७०) प्राणपचीसी (६६ छन्द)	” ”	”	४०३–४०५	सुखदेव-पृथीनाथसंवाद भी इसीमें है ।
	(१७१) ज्ञानपचीसी (७७ छन्द)	” ”	”	४०५–४०८	” ” ”
	(१७२) जुगति-सरूप-सिद्धसंकेत-जोग-ग्रन्थ (५१ छन्द)	” ”	”	४०८–४०९	विपर्य्यय वाणी है ।
	(१७३) भ्रमविधंसजोगग्रन्थ (७० छन्द)	” ”	”	४०९–४१२	” ”
	(१७४) ततसग्रामजोगग्रन्थ (५६ छन्द)	” ”	”	४१२–४१३	योगीवीरंता (वारता) गुह्यज्ञानदर्शन-वर्णन इसमें है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१७५) ब्रह्मआदेसुरजोगग्रन्थ (२० छन्द)	पृथीनाथ सूत्रधार	१७१५	४१३–४१४	खरी-खरी उपदेशभरी बातें।
	(१७६) प्यण्डप्रवोषसरस्वतीजोगग्रन्थ (२० छन्द)	,, ,,	,,	४१४वां	उपदेशमयी योगकी गुह्य बातें।
	(१७७) प्राणकुण्डलीजोगग्रन्थ (१३ छन्द)	,, ,,	,,	४१४–४१५	,, ,,
	(१७८) भगतिवैकुण्ठग्रन्थ (१४ छन्द)	पृथीनाथ	,,	४१५वां	उच्चकोटिकी बातें हैं।
	(१७९) निरंजननिर्वाणग्रन्थजोग (१३ छन्द)	,,	,,	४१५–४१६	
	(१८०) अजपागायत्री (१२ छन्द)	,,	,,	४१६वां	योगीको गायत्री
	(१८१) संध्यागायत्री (१७ छन्द)	,,	,,	४१६–४१७	विकृतसंस्कृतभाषामिश्रित।
	(१८२) मनथंभशरीरासाधणजोगग्रन्थ (८९ छन्द)	,,	,,	४१७–४१९	
	(१८३) प्रतिबोधज्ञानटीको-जोगग्रन्थ (धूंलमेश-पृथीनाथसंवाद (६८ छन्द)	,,	,,	४१९–४२२	
	(१८४) मूलपदमहाज्ञानजोगग्रन्थ (५१ छन्द)	,,	,,	४२२–४२३	
	(१८५) पदमपुराणजोगग्रन्थ (२८ छन्द)	,,	,,	४२३–४२४	
	(१८६) ब्रह्मअग्निजोगजगदीशग्रन्थ (छन्द २५)	,,	,,	४२४–४२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१८७) विन्दुसिद्धान्तजोगग्रन्थ (छन्द १७)	पृथीनाथ	१७१५	४२५–४२६	
	(१८८) सोलहकलाजोगग्रन्थ (३९ छन्द)	,,	,,	४२६–४२७	
	(१८९) सोलहतिथिजोगग्रन्थ (२० छन्द)	,,	,,	४२७–४२८	
	(१९०) नक्षत्रजोगग्रन्थ (३१ छन्द)	,,	,,	४२८–४२९	
	(१९१) जैनशीलसमाधिजोगग्रन्थ (४० छन्द)	,,	,,	४२९–४३०	इसमें जैनियोंकी रहस्य-विवरणी है।
	(१९२) सूत्रधणीकर्ता-कथितजोगग्रन्थ (१५ छन्द)	,,	,,	४३०वाँ	
	(१९३) हंसरूपअविगतिजोगग्रन्थ (९० छन्द)	,,	,,	४३०–४३३	
	(१९४) सिद्धचौतीसाजोगग्रन्थ (४० छन्द)	,,	,,	४३३–४३५	धूलमेशपृथीनाथसंवाद भी इसमें है।
	(१९५) बारहमासी (१६ छन्द)	,,	,,	४३५वाँ	
	(१९६) अध्यात्मबोध (छन्द १४०)	गरीबदास (दादूशिष्य)	,,	४३५–४४०	यह अध्यात्मनाममालाकोश है।
	(१९७) गरीबदासजीका पद १६	,, ,,	,,	४४०–४४२	
	(१९८) गरीबदासजीकी साखी २२	,, ,,	,,	४४२–४४३	
	(१९९) मोहनदासजीका पद ४	,, ,,	,,	४४३–४४४	
	(२००) करुणासार (छन्द ८)	चैनदास	,,	४४४–४४५	लावणीके ढङ्गके करुणरसपूर्ण सरस पद हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(२०१) चैनदासजीके पद १५	चैनदास (दादूशिष्य)	१७१५	४४५–४४६	
	(२०२) चैनदासजीका सवैया २ और कड़खा ९	,, ,,	,,	४४६–४४९	दादूजीकी स्तुतिके वीररसभरे उत्तम सवैया हैं।
	(२०३) बारहमासा छन्द १२	जनगोपाल	,,	४४९–४५०	
	(२०४) जनगोपालके पद ७	,,	,,	४५०वाँ	
	(२०५) अनन्तलीला (राग गुण्डकेदारो) छन्द १९	,,	,,	४५०वाँ	
	(२०६) जनगोपालके पद छन्द २९	,,	,,	४५०–४५४	
	(२०७) भेटके सवैये ६	,,	,,	४५४वाँ	दादूजी-जनगोपाल-भेंट।
	(२०८) ध्रुवचरित्र (२० विश्राम)	,,	,,	४५४–४६०	
	(२०९) प्रह्लादचरित्र (१८ विश्राम)	,,	,,	४६०–४६५	
	(२१०) मोहविवेक (१० विश्राम, १२८ चौपाई)	,,	,,	४६५–४६९	
	(२११) भरथचरित्र (६ विश्राम)	,,	,,	४६९–४७१	
	(२१२) चौबीस गुरांकी लीला	,,	,,	४७१–४७३	
	(२१३) दादूजीकी जन्मलीला परची (१६ विश्राम)	,,	,,	४७३–४८५	
	(२१४) जखड़ी कायाप्राणसंवाद (छन्द ८)	,,	,,	४८५–४८६	
	(२१५) जनगोपालके पद ७	,,	,,	४८६–४८७	
	(२१६) जैमलके पद १४	जैमल	,,	४८७–४८८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(२१७) अगाधबोध	कबीर	१७१५	४८८–४८९	
	(२१८) गुणउत्पत्तिनामा	मियां वाजिद	,,	४८९–४९०	दोहे–चौपाईमें सरल ठेठ हिन्दीके पद्य हैं। देखो–मिश्रबन्धुविनोद पृष्ठ ५५५ तथा १०४६।
	(२१९) गुणघरियांनामा छन्द २९ (अन्तमें अरिल्ल)	,,	,,	४९०–४९१	
	(२२०) गुणश्रीमुखनामा छन्द ३२ (अन्तमें अरिल्ल)	,,	,,	४९१–४९२	आदिमें–'साधन संगि सदा रहैं सुनो सयाने लोइ'
	(२२१) गुणश्रीमुखनामा छन्द ४६ (अन्तमें अरिल्ल)	,,	,,	४९२–४९४	आदिमें–'हरको हूवो फूलसो डारी सिरकी पोट'
	(२२२) गुणहरिजननामा छन्द १९ (अन्तमें अरिल्ल)	,,	,,	४९४–४९५	
	(२२३) गुणनाममाला छन्द ६७ (अन्तमें साखी)	,,	,,	४९५–४९६	
	(२२४) गुणगंजनामा छन्द ३३४	,,	,,	४९६–५०५	दोहा, सोरठा, चौपाइयों आदिमें अत्यन्त उत्तम साहित्यका ग्रन्थ है। बिहारी आदिकी भाषाको याद दिलाता है। प्रेमकी पराकाष्ठाके भावोंसे भरपूर भाषाकी सुषमा और माधुरीकी मूर्ति मियाँ वाजिदका हाल 'विनोदमें' कुछ भी नहीं लिखा है।
	(२२५) गुणनिर्मोहीनामा छन्द २५	,,	,,	५०५–५०६	
	(२२६) गुणपेमनामा छन्द ३०	,,	,,	५०६–५०७	बहुत मनोहर छन्द हैं। अरिल्ल भी है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(२२७) गुणप्रेमकहानी छन्द १८	मियाँ वाजिद	१७१५	५०७वाँ	
	(२२८) गुणविरहको अंग छन्द १७०	,,	,,	५०७–५११	प्राय: दोहा छन्द प्रयुक्त हुआ है। गुणगंज-नामाकी तरह है।
	(२२९) पदजखड़ी (राग गौड़ी मल्हार, मारू आदि)	,,	,,	५११–५१२	
	(२३०) गुणनिशानी छन्द १५	,,	,,	५१२–५१३	
	(२३१) गुण छन्द १५	,,	,,	५१३वाँ	
	(२३२) गुणहितउपदेश छन्द २६३	,,	,,	५१३–५२४	बहुत रोचक कथा है। अन्तमें अरिल्ल है।
	(२३३) भूगोलपुराण ग्रन्थ		,,	५२४–५२८	गद्य तथा ५२४ पद्य हैं। कुछ बातें प्रमाणित नहीं हैं।
	(२३४) निरञ्जनपुराणग्रन्थ		,,	५२८–५३१	किसी ब्रह्मत्व-प्राप्त अथवा भंगड़का बनाया प्रतीत होता है। कर्त्ताका नाम नहीं दिया है। अन्तमें (गोरखग्रन्य) ऐसा लिखा है।
	(२३५) ज्ञानसमुद्र (उल्लास ५)	सुन्दरदास	१७१०	५३१–५४९	इसमें संवत्का छन्द नहीं है।
	(२३६) तर्कचिन्तावणी छन्द ५६	,,	,,	५४९–५५१	
	(२३७) विवेकचेतावनी छन्द ४०	,,	,,	५५१–५५२	
	(२३८) गृहवैराग्यबोध	,,	,,	५५२–५५४	
	(२३९) देहप्राणसंवाद जखड़ी पद ८	,,	,,	५५४–५५५	
	(२४०) सुन्दरदासजीकी चेतावनी	,,	,,	५५५वाँ	
	हरिबोलचेतावनी	,,	,,	५५५–५५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(२४१) सुन्दरदासजीके पद	सुन्दरदास	१७१०	५५६–५५७	अन्तमें १ चतरदासका पद भी है।
	(२४२) मेहाकी चेतावनी	मेहादास लाहौरी	,,	५५७–५५८	
	(२४३) हरिस्यङ्गजीकी चेतावनी पद्य ३६	हरिस्यङ्ग	,,	५५८–५५९	
	(२४४) छीतमके पद १० पद	छीतमदास	,,	५५९–५६०	
	(२४५) गुणगीत	दुरसा चारण	,,	५६०वाँ	
	(२४६) स्फुट कवित्त पद्य १९	(१) लाल गजमलिक (२) लालदास (३) माधो (४) कान्ह (५) अलूची (६) वाजिद (७) माधोसाहि (८) कवि गद (९) हरिस्यङ्ग		५६०–५६१	
	(२४७) लीलापरशरामजीकी (चौपाई ४६)	परशराम	,,	५६१–५६४	
	शङ्कराचार्यजीके अशुद्ध पद्य	शङ्कराचार्य	,,		
	(२८४) निर्वाणयोगपट महादेवजीको	,,	,,	५६४वाँ	
	(२४९) रुण्डमालाग्रन्थ श्लोक १२०	,,	,,	५६४–४६७	विकृत संस्कृतमें योग्य-ग्रन्थ है।
	(२५०) शुकदेवजीकी लीला (अध्यात्मलीला) छन्द २५	मोहनदास	,,	५६७–५६८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(२५१) कर्मविपाकगीता	मोहनदास	१७१०	५६८–५६९	विकृत संस्कृतका ग्रन्थ है।
	(२५२) भरथरीजीका श्लोक फुटकर	,,	,,	५६९–५७०	
	(२५३) रज्जबजीका कवित्त छन्द ७७	रज्जब	,,	५७०–५७५	
	(२५४) मोहमर्दराजाकी कथा	जगन्नाथदास	,,	५७५–५७६	
	(२५५) नामदेवजीकी परची	अनन्तदास	,,	५७६–५८०	रचना–१६४५ संवत् है।
	(२५६) त्रिलोचनजीकी परची	,,	,,	५८०–५८१	नोट–यह गुटका संवत् १७१० अथवा इससे पूर्वका लिखा हुआ प्रतीत होता है जैसा कि बीचमें सुन्दरदासजीके ग्रन्थ ज्ञानसमुद्रकी समाप्ति पर लिखा हुआ है। अन्तमें जो संवत् १७१५की प्रशस्ति लिखी गई है वह पृथक् स्याहीसे अन्य लेखककी लिखी हुई ज्ञात होती है। (सं०)
३५	गुटका—				
	(१) चिकित्सासार, ६०१ छन्द	गङ्गाधर	१८०८	६०	अपूर्ण। इसमें दोहा चौपाई आदि छन्द हैं।
	(२) नरवैबोध और शब्दी	गोरखनाथ		१–१७	नरवैबोधमें ११६ छन्द तथा शब्दीमें १४८ छन्द हैं।
	(३) हरिचन्दशत	ध्यानदास	१७७४	१–२१	
	(४) भक्तिभांवती	गणेशानन्द	,,	२१–४४	रामानन्दीय-साम्प्रदायिक-साधुकृत ग्रन्थ।
	(५) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	,,	४४–५६	लि.क.–गङ्गाराम सवाईजयसिंहजीराज्ये, पुरोहितशुभरामकृते, सांगानेरमें लिखित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३५)	(६) मन्त्र गूमड़ीको आदि		१७७४	२ स्फुट पत्र	
	(७) रामचन्द्रिका	केशवदास	१८०७	१–१३५	लि.क.–पुरोहित रतनराम, सांगानेरमध्ये।
३६	गुटका—				
	गीता (भाषानुवाद)	हरिवल्लभ	१८०६	७०	
३७	गुटका—				
	(१) गीता (भाषानुवाद)	,,	१८८८	१–१४८	लि.क.–ब्राह्मण रामवल्लभ, भद्रावतीमध्ये कँवर करणसिंहकृते। मद्दे अक्षरोंमें लिखी है।
	(२) स्तुति स्योमहाराजकी		,,	१४९–१५५	,, ,,
३८	गीता (भाषानुवाद)	स्वरूपदास निरञ्जनी	१८७२	७१	५०वाँ पत्र अप्राप्त। र.का.–सं० १७४२ दीपावली। लि.क.–रामसुख मानदासशिष्य। प्रति जीर्ण है।
३९	गीता (भाषानुवाद)	जटाशङ्कर	१८०९	१७९	अपूर्ण है। ६ अध्यायोंका अनुवाद है। नोट–इसमें श्लोक, फिर हिन्दी-पद्यानुवाद दिया है। टीका ललित और उत्तम है। सेवाराम संघी लुहाड़िया जयपुरनिवासीके लिये इस अनुवादकी रचना हुई। जटाशङ्कर डीडवानाका ब्राह्मण था। वह जयपुरमें रहता था।
४०	गीता (भाषानुवाद)	भगवानदास निरञ्जनी	१९१३	१२५	लि.क.–हीरादास हजारीदासशिष्य, नगर बोड़ावडुमध्ये।
४१	(१) गीतामूल एवं भाषाटीका		१९वीं.श.	३२	अपूर्ण व अशुद्ध है।
	(२) कोकशास्त्र		,,	१–४१	,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४२	शिखरवंशोत्पत्तिपीढ़ी वार्त्तिक	गोपालदान कविया	१९५९	२९	र.का.—सं. १९२६ । लि.क.—कन्हैयालाल जोशी, सनातनधर्म विद्यालय, झूंझनू ।
४३	तुरसी-सखीपदावली (रामपदावली)	तुरसी	२०वीं.श.	३—३८	इस गुटकेमें उत्सवों और अवसरोंके भक्तिपूर्ण पद हैं । बनड़े, गालियां, लीलावर्णन आदि हैं ।
४४	(१) ध्यानलीला आदि	नन्ददास	१८१७	७३—१३६	कृष्णकी लीलाओंके ध्यानका वर्णन है । नोट—इस गुटकेमें श्रीपुरोहितजीकी सूचीके अनुसार कृतियां नहीं मिलतीं । देख कर अङ्कित की गई हैं । (सं.)
	(२) सुदामाचरित्र	,,	,,	१४७—१५२	
	(३) यमुनाद्वादशकस्तोत्र	शंकराचार्य	,,		
	(४) जन्मकर्मलीला	माधोदास	,,	४९—५८	
	(५) जानरायलीला		,,	५८—६४	अपूर्ण ।
	(६) सीतारामव्याहलो (अपूर्ण)		,,	१७१—१८६	
	(७) जुगलसतके स्फुट पत्र		,,	१८	
	(८) स्फुट कवित्त-राग आदि		,,	४३—४६	
४५	युक्तितरङ्गिणी	कुलपतिमिश्र	१९०७	३६	अन्तमें "इतिश्रीमिश्रकुलपत्तिमिश्र विरञ्चितायां युगतितरङ्गिणीं समाप्तम् । लिखंतं चत्रभुज औलाद कुलपतिजीकी मिति आसाढ़ वद ८ दीतवार सम्मत १९०७ सा. संवत् १९०६॥ ७०० दोहे । यह सतशई सम्भवतः बिहारीकी स्पर्द्धासे रचित हो परन्तु वे गुण तो नहीं हैं, तथापि बड़े उस्तादकी कलम है सो अनेक गुणसम्पन्न है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४६	(१) लखपत-जससिन्धुपिङ्गल	कुंवरेशकवि	१९७२	१६३	र.का.–१८०७। कहीं-कहीं पर त्रुटित है। ग्रन्थ कविराज कुलपतिमिश्रके वंशज श्यामलालजीकी सं. १८१६ की पुस्तकसे प्रतिलिपीकृत है।
	(२) अनेकार्थनाममाला मञ्जरी	नन्ददास	१८९९	१६४–१९७	कहीं-कहीं इसके स्थल अशुद्ध हैं।
४७	प्रतापसिंह-सिंगारहजारा १०११ छन्द	अनेक कवि	१९८३	१२८	लि.क.–गोपीचन्द्रशर्मा। चेला गौरीशंकरजीकी पुस्तकसे नकल कराई।
४८	नेहतरङ्ग छन्द ५३६	रावराजा बुधसिंह	१८०२	८२	र.का.–सं. १७८४। यह पुस्तक कविराजा मुरारीदानजी अयाचककी पुस्तकसे नकल कराई।
४९	प्रतापवीरहजारा	अनेक कवि	२०वीं.श.	२७	यह पुस्तक पूर्ण नहीं मिली। (सं.)
५०	मदनविनोद	कवि जान	१९००		३२ कवित्तकी पुस्तक है। परन्तु इसमें पूर्वके ११ कवित्त नहीं हैं। प्रति जीर्ण-शीर्ण एवं त्रुटित है। फतहपुरके नवाब कवि जान कृत नायिकाभेद और कोकका छन्दोबद्ध ग्रन्थ है। (डूंडलोदका पुस्तकालय।) नोट–इसीमें पांच सहेलियोंकी वारता और गुरुनामो, विष्णुपंजर, अजवनामो, गुण-उत्पत्तिनामो आदि कृतियोंके भी स्फुट पत्र हैं। कुछ यन्त्र आदि भी लिखे हुए हैं। (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५१	(१) सुन्दरशृंगार	सुन्दरदास	१९वीं	१–४०	(अपूर्ण) इस गुटके पर पुरोहितजीकी सूचीमें
	(२) हरिरामदासजीकी वाणी	हरिरामदास	,,	१–१९	,, ७८० संख्या दी है और उसके
	(३) ,, ,, ,,	,,	,,	१०–३३	,, सामने 'फुटकर सवैया संग्रह अनेक
	(४) अनुभवप्रकाशउद्योत	रामदास	,,	३४–१३६	,, कवियोंका' लिखा है परन्तु इसमें
	(५) युक्तितरंगिणी			१४–३९	,, वह नहीं है। इसमें जो त्रुटित ग्रन्थ मिले हैं वे यहां अंकित कर दिये गये हैं। (सं.)
५२	रत्नावती	कवि जान	१९५९	१९३	र.का.–सन् १०४४ हिजारी। १६९१ विक्रमी सम्वत्। १८८९ की प्रतिसे प्रतिलिपीकृत। लि.क.–जती पूरणचन्द झूंझनूंमध्ये। इस प्रतिका लिपिकार हजारीमल श्रीमाल है। यह ग्रन्थ ९ दिनमें रचा गया था। (सं.)
५३	गुटका—				
	(१) दादूवाणी	दादू	१८वीं श.	४२	अपूर्ण व जीर्ण प्रति है। अस्थल गोपालदासजीसे प्राप्त।
	(२) ज्ञानसागर	सुन्दरदास	,,		
५४	फुटकर संग्रह	अनेक कवि	१९वीं.श.	स्फुट पत्र ५४	इसमें गरीबदासजीका अध्यात्मग्रन्थ भी है, शेष स्फुट हैं।
५५	गूढासागर	मनोहरदास	१९७९	२०	१९६१ की प्रतिसे प्रतिलिपीकृत।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५६	श्रीवाणीजी	श्रीवल्लभरसिक —	१९८८	३८	सं. १९७६की प्रतिसे प्रतिलिपीकृत। लि.क.–श्रीभगवान् शर्मा चतुर्मुख (चौमूं) निवासी। 'मिश्रबन्धुविनोद'में दो वल्लभरसिक नाम दिये हैं (१) पृष्ठ ५०५ सं० ३८४ पर। इनके द्वारा रचित ग्रन्थका नाम 'मांझ' लिखा है। इनका जन्म १६८१ और रचनाकाल सं. १७१० दिया है। दूसरे, वल्लभरसिकका उल्लेख पृष्ठ ७५५ सं० ७८० पर है। ये गदाधरभट्ट-सम्प्रदायके थे। इनके ग्रन्थ (१) स्फुट पद (२) वाणी लिखे हैं। रचनाकाल सं. १८०० विक्रमी। विवरणमें लिखा है कि 'वाणी छत्रपुरमें देखी।' यह नोट पुरोहितजी द्वारा गुटके पर ही लिखा हुआ है। (सं.)
५७	गुटका—				लाल खारवेका पुराना गुटका १०×६ अंगुल प्रमाण।
	(१) चित्रमुकुटकी बात		१९वीं श.	६८	पूर्ण, अशुद्ध।
	(२) ज्ञानमाला (कृष्णार्जुनसंवाद)		,,	६९–१२१	गीताका अनुवाद प्रतीत होता है। इसके नव अध्याय हैं। लि.क.–कनीराम जोशी।
	(३) वीतवारकी कथा			१२२–१४७	यह कथा पद्मपुराणके अन्तर्गत है, जिसका ढूंढाडी बोलीमें अनुवाद है। (सं०)
५८	गुटका—				
	(१) बलिवामनचरित्र	हृदयराम	१८३५	१४	लि.क.–चौधरी प्राणनाथ प्रागपुरामध्ये।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(५८)	(२) राजा चन्दकी वात	लछमनब्राह्मण	१८३९	२९	लि.क. पाना चौधरी, बगसगीरी हलद्या-[दिया] नन्दरामजीकी, खारवेके गत्तेका गुटका १३×९ अंगुलका है।
	(३) रुक्मणजीको व्यावलो	सहसमल (कोटपूतली-निवासी)	१८४२	२२	अनेक राग-रागिनियोंमें रचित।
	(४) ध्रुवचरित्र	परमानन्ददास	,,	६	अपूर्ण।
	(५) शनीचरजी की कथा		,,	५	नोट—इस गुटकेमें अङ्कित ५ ग्रन्थोंके अतिरिक्त पट्टी-पहाड़े, फुटकर दोहे आदि भी हैं। एक व्यायणजीकी गजल भी है।
५९	भँवरगीत (भाषा)	जनमुकुन्द	१९११	२२	खुले पत्रे। लेखक (रचयिता ?)की लिखी। चैनरामसे प्राप्त १३-१२-१९०४ ई०।
६०	दादूजन्मलीलापरची	जनगोपाल	१९८३	४८	लि.क.—ज्योतिषी कुञ्जविहारीलाल, जयपुर।
६१	विहारी सतसई (अकारादि-प्रकरणवद्ध)	विहारी	१९वीं.श.		अपूर्ण। गोपीचंदजीकी मोल लीनी १) में। ता० ६-१२-३९।
६२	गुटका—				
	(१) कविप्रिया	केशवदास	१८४२–४३	७	अपूर्ण, चौथे प्रभावसे कुछ आगे तक (१५५वें पद्य तक)
	(२) गीताभाषानुवाद	आनन्दराम		९–३४	केवल १५ अध्यायका अनुवाद।
	(३) पिङ्गल (अपूर्ण)			३५–४३	इसके आगे १ मीरांका पद, चरणदासका पद तथा महाराजा मानसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह, महाराजकुमार जगतसिंहके प्रशस्तिपरक कवित्त भी हैं। अन्तके २ पत्रोंमें श्रीकृष्णदास पयोहारी (गलतावाले)का स्तोत्र ‥ो है जो अपूर्ण है। (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६३	वैद्यकभाषा (वैद्यविनोदभाषा)	अनन्तराम	१८८७	६२	जयपुरके महाराजा सवाई प्रतापसिंहकी आज्ञासे रचित। लि.क.–सदासुख ब्राह्मण द्वारा श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर (पुरानी बस्ती)के समीप जयपुरमें लिखित। स्यात् देवलीमें कोटेके पुरोहितजीसे प्राप्त। देसी कागज पर पक्की स्याहीकी लिखी।
६४	विनयपत्रिका	तुलसीदास	१९१२	८५	लि.क.–सांव जोशी, खीरीनिवासी। घरू संग्रहमें जीजीवाई, श्री मोतीबाईकी है। अंगूरी कागज पर लिखी। श्री पुरोहितजी कहा करते थे कि यह मोतीवाई बड़ी योगिनी थीं। वह उनकी ज्येष्ठा भगिनी थी। (सं.)
६५	कृष्णस्तुतिके स्फुट पत्र			५	फटे पुराने पत्रोंमें १ से १०७ छन्द तक।
६६	गर्भचिन्तामणि	रामचरणजी	१९वीं	२५	देशी कागज पर छोटा-सा गुटका।
६७	गुटका—				
	(१) कबीरकी साखी (६० अंग)	कबीर	१८वीं		अपूर्ण। फटा हुआ जीर्ण गुटका। १० अंगुल सांचो (समचौरस), गत्ता नहीं है। आदिके ८५ पत्र त्रुटित हैं जो प्राप्त नहीं हैं। पत्रों पर संख्या अंकित नहीं है। पत्र इतने जीर्ण हैं कि छूते ही शीर्ण हो जाते हैं। अतः इस प्रति का विवरण पुरोहितजी की सूची के अनुसार ही लिख दिया गया है। (सं.)
	(२) हरिदासजीकी साखी ७	हरिदास	"		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६७)	(३) धन्नाकी साखी ७	धन्नाभक्त	१८वीं		
	(४) पीपाजीकी साखी १०	पीपा	,,		
	(५) परसजीकी साखी ७	परसराम	,,		
	(६) नानकजीकी साखी ७८	नानकजी	,,		
	(७) बखनाकी साखी ४	बखना	,,		
	(८) बूढणजीकी साखी ४	बूढण	,,		
	(९) सिरेबन्ध साखी १८	अनेक	,,		
	(१०) नवनिधिनाम		,,		
	(११) चौबीस सिद्धनाम		,,		
	(१२) अष्टांगयोग ३२ लक्षण		,,		
	(१३) षट्शास्त्राचार्यनाम		,		
	(१४) गोरखनाथजीकी शब्दी		,,		पत्र फटे और फटे हैं। १४९ तक संख्या है।
	(१५) चर्पटनागार्जुनसंवाद ५८ छन्द	चर्पट	,,		
	(१६) भरथरीनाथजीकी शब्दी ३३ साखी		,,		
	(१७) गोपीचन्दकी साखी १२				
	(१८) जालन्धरीपावजी की शब्दी		,,		९ तक हैं। आगेके पत्र नहीं हैं।
	(१९) काफरबोध (अपूर्ण)	गोरखनाथ	,,		अंत में "श्री गोरखनाथ महमद पादशाहसंवादे काफरबोध सम्पूर्ण।"
	(२०) अकलि-सिलूक	,,	,,		अजीब भाषा व वर्णन है। जोगशास्त्र सम्पूर्ण है।
	(२१) गणेश-गोरखसंवाद	,,	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६७)	(२२) महादेव-गोरखसंवाद		१८वीं श.		
	(२३) दत्त-गोरखसंवादग्रन्थ		,,		५१ छन्द हैं। अन्तमें ग्रन्थका नाम 'ज्ञान दीपवोध' लिखा है।
	(२४) ब्रह्मस्तोत्रश्लोक				भाषा अशुद्ध है।
	(२५) ब्रह्मजिज्ञासा-योगग्रन्थ				भाषा वार्तिक।
	(२६) साधपरख्या	पृथीनाथ			१०५ छन्दोंमें पूर्ण ग्रन्थ।
	(२७) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल			अपूर्ण।
	(२८) प्रह्लादचरित्र	,,			
	(२९) भरतचरित्र	,,			
	(३०) चौबीसगुरुलीला	,,			
	(३१) मोहविवेकग्रन्थ	,,			अपूर्ण और फटे टूटे पत्र हैं।
६८	गुटका—				
	(१) विचारमाला	अनाथदास	१८४६	१—१०	त्रुटित व पञ्चमविश्रामके पत्रे भी गायब हैं, बीचके पत्रे भी गायब हैं। ८×६ अंगुल।
	(२) अनुभवउल्लास		,,	११—१५	गत्ता फटा हुआ हरे लाल पार्चेका।
	(३) नेहाजीकी चेतावनी	नेहा	,,	१५—१८	नेहा कोई मुसलमान फकीर थे। फारसी शब्दों और मुसलमानी मतकी बातोंकी बहुतायत इसका प्रमाण है।
	(४) भगतपचीसी २७ कवित्त	खेमदास	,,	१८—२४	साधारण रचना। दादूपन्थी भक्तोंकी महिमा।
	(५) मुल्लापण्डितको संवाद १५ कुण्डलियाँ			२४—२६	कुण्डलियाँ अच्छी बनी हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६८)	(६) दादूजीकी साखी (२४७१ साखी, अङ्ग १३२)	दादूदयाल	१८४६	१–२००	अंगबद्ध है; कुछ पंडिताईका अडंगा वृथा किया है।
	(७) दादूवाणी पद	दादू	,,	२००–३६६	रागों व पदोंकी सर्वसंख्या नहीं दी है।
	(८) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	,,	३६६–४०६	तृतीय उल्लासमें पद्य ५६ से ८८ तक अप्राप्त हैं; पत्र फटे हुए हैं। (सं.)
	(९) बालकरामजीका कवित्त छप्पय ५२	बालकराम		४०६–४१८	
	(१०) रज्जबजीका कवित्त एवं वाणी	रज्जब	,,	४१८–४३७	इसके भी पत्र फटे हुए हैं। ८४ छन्दके आगे ९१वाँ छन्द है। (सं०)
	(११) भीखजनकी बावनी ५४ छप्पय	भीखजन	,,	४३७–४४९	र.का.–१६८३।
	(१२) गुरुदयाषट्पदी-अष्टक छन्द ६	सुन्दरदास	,,	४४९–४५०	
	(१३) भरमविधंसण-अष्टक ९ छंद	,,	,,	४५०–४५१	
	(१४) गुरुकृपा-अष्टक ९ छंद	,,	,,	४५१–४५४	
	(१५) गुरुउपदेश-ज्ञानाष्टक	,,	,,	४५४–४५६	
	(१६) गुरुदेवमहिमास्तोत्र	,,	,,	४५६–४५७	
	(१७) रामजी-अष्टक	,,	,,	४५७–४५८	
	(१८) नामाष्टक	,,	,,	४५८–४५९	
	(१९) आत्मा-अचल अष्टक	,,	,,	४५९–४६१	
	(२०) पञ्जाबी-अष्टक	,,	,,	४६१–४६२	
	(२१) ब्रह्मस्तोत्र-अष्टक	,,	,,	४६२–४६३	यह स्तोत्र भुजङ्गप्रयात-छन्दोंमें है। (सं.)
	(२२) पीरमुरीद-अष्टक	,,	,,	४६३–४६४	
	(२३) अजबख्याल-अष्टक	,,	,,	४६४–४६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६८)	(२४) ज्ञानझूलना-अष्टक	सुन्दरदास	१८४६	४६९–४६८	
	(२५) रेखता १५	खेमदास	,,	४६८–४७२	
	(२६) चिन्तावणी	हरिसिंघ	,,	४७२–४७५	
	(२७) भर्तृहरिशतवैराग्यछन्दटीका (पद्यानुवाद)	भगवानदास निरञ्जनी	,,	४७५–४८७	पूर्ण ।
	(२८) धनमद-खण्डन	,,	,,	४८७–४९९	यह भी भर्तृहरिके पद्योंका ही अनुवाद है।
	(२९) कवित्तसंग्रह कवित्त २६	दादू	,,	४९९–५०५	
		राघो			
		गोपाल			
		बालकराम			
		रघुवा आदि			
	(३०) कवित्तसंग्रह पुनः	खेमदास	,,	५०५–५३५	राग मारूके ऊपर तक बराबर कवित्त शान्त-रसके हैं।
	,,	राघो	,,		
	,,	कबीर	,,		
	,,	जहानशाह	,,		
	,,	अकबर	,,		
	,,	सुखराम	,,		
	,,	जैमल आदि	,,		अन्तमें जैमलकृत रामरक्षास्तोत्र भी है।
	(३१) नवरत्न-कवित्त १० छप्पय		,,	५३५–५३८	
	(३२) शान्तरसके कवित्त ९		,,	५३८–५४२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६८)	(३३) दादूवाणीकल्पतरु छप्पय १	लालजन	१८४६	५४२वां	
	(३४) भागवतकल्पतरु छप्पय १	जगन्नाथ	,,	५४२वां	
	(३५) नर-बत्तीसलक्षण		,,	५४३वां	
	(३६) सुन्दरदासजीकी साखी	सुन्दरदास	,,	५४३–५४५	
	(३७) उपदेशदिढाव-साधलक्षण	महानन्द	,,	५४५–५४७	प्रायः वचनिका है।
	(३८) दादूजीका कडखा पद्य ४७	सन्तदास गलताणी	,,	५४७–५५०	नोट–यह पवाडाप्रणाली पर लिखी हुई दादूजीकी प्रशस्ति है। आरम्भमें– कहूँ पवाडा प्रेमसों, काशीनगर मझार।' (सं.)
	(३९) नसीहतनामा पद्य २०	हरिदास	,,	५५०–५५२	
	(४०) भक्तविरदावली १७ पद्य	,,	,,	५५२–५५४	
	(४१) जगजीवनदासजीकी साखी-१०७	जगजीवनदास	,,	५५४–५६२	
	(४२) दृष्टान्तसाखी १२०	राघोदास	,,	५६२–५६६	
	(४३) परसरामजीका पद	परसराम	,,	५६६–५७०	
	(४४) नानकजीका पद	नानक	,,	५७०वां	अन्तमें–दादूद्वारे स्वामी श्रीनिरभैरामजीकी हजूरि लिखी बावाजी हरिदासजीका सिख बावाजी केवलदासजी का सिष्य बाबाजी गङ्गारामजी का सिष्य बाबाजी सन्तोषदासजी तिनका सिष्य रामधन खानेजात चौपना लिखा।
६९	अर्जुनवाणी	अर्जुनदास	२०वीं	८३	साधारण रचना।- लि.क.–विजयलाल शर्मा मुलाजिम पोथीखाना, जयपुर। यह बहुत हलकी साधारण रचना है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७०	गुटका— दादूवाणी	दादू	१८७८	५८६	छोटा गुटका लाल छींट बादामकी बूंटीका; ४ अंगुल चौड़ा और आठ अंगुल लम्बा है। लि. क.—वीनतीदास जमात-नागा, तैनात चौकी बालाबास गढ रणतभंवर।
७१	कबीरपंथीप्रक्रिया (अपूर्ण)		२०वीं	२०	अनगढ़ अक्षरोंमें लिखी हुई, जिसमें नित्यक्रिया आदिका वर्णन है; पूर्वका पाना नहीं है; सांचो-११×७॥ अंगुल।
७२	गीतामाहात्म्य			११–१८	फटा हुआ छोटासा गुटका अधूरा। सांचो-६×४॥ अंगुल। अंगूरी कागजका गत्ता।
७३	गुटका—				
	(१) रामचरणजीके पद व भजन १२३ पद	रामचरण	१९५१	६८	गुटका सफेद छींटका; सांचो ६×६ अंगुल है, गोतमदासजीका दिया हुआ।
	(२) सूरतरामजीके पद	सूरतराम	"	६९–७७	
	(३) मीरांका पद १	मीरां	"	७८वां	"साधांरो संग निवारो राग, भाभीजी गोरल पूजोजी राज"।
	(४) पण्डितसंवादग्रन्थ २६ पद्य	रामचरण	"	७९–८२	
	(५) नागाग्रन्थ ३७ छन्द	"	"	८२–८६	
	(६) साधुलक्षणवर्णनम् (लच्छि-अलच्छिजोग) ३३ छन्द	"	"	८६–९०	
	(७) लेलीनजीका पद व रेखता	लेलीन	"	८६–९३	९३ पृष्ठकी पीठ पर एक कोष्ठक है जो संभवतः प्रश्नकोष्ठक है। यह मूल प्रतिके बादका लिखा हुआ प्रतीत होता है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७३)	(८) नरसीजीके पद व अन्य पदसंग्रह	नरसी	१९५१	९३–१२७	
	पद	तुलसीदास	,,		
	,,	शाह हुसेन	,,		
	,,	अनन्तानंदकवि			
	,,	मीर	,,		
	,,	बालसखि	,,		
	,,	रणछोड़	,,		
	,,	घाटमदास	,,		
	,,	रूपदास	,,		
	,,	वखना	,,		
	,,	दादू	,,		
	,,	जगदीश	,,		
	,,	जगजीवन	,,		
	,,	नागरीदास	,,		
	,,	वसन्त	,,		
	,,	वखतावर	,,		
	,,	रसिकसनेही	,,		
	,,	रामवल्लभ	,,		
	,,	भारतीगंग	,,		
	,,	गंगादास	,,		
	,,	दास	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७३)	(८) पद	सूरदास	१६५१		
	,,	व्रजजन	,,		
	,,	विशनदास	,,		
	,,	सहजदास	,,		
	,,	काजीमहम्मद	,,		
	,,	सूरश्याम	,,		
	,,	भागीरथ	,,		
	,,	हरिदास	,,		
	,,	परमानन्द	,,		
	,,	जनतुलसी	,,		
	,,	वाजिद	,,		
	,,	गरीबदास	,,		
	(९) गुरुमहिमा २४ छन्द	रामचरण	,,	१२७–१३०	
	(१०) नामप्रताप ७२ छन्द	,,	,,	१३०–१३६	
	(११) चिन्तावणीग्रन्थ १२७ छंद	,,	,,	१३६–१५२	उत्तम है।
	(१२) शब्दप्रकाशग्रन्थ २८ छन्द	,,	,,	१५२–१५६	
	(१३) मनखंडनग्रन्थ ३० छन्द	,,	,,	१५७–१६०	
	(१४) चिन्तावणबोधग्रन्थ २८ छन्द	सूरतराम	,,	१६०–१६४	
	(१५) ककाबत्तीसी ३३ छन्द	,,	,,	१६४–१६७	
	(१६) ककाबत्तीसी ३४ छन्द	लेलीनराम	,,	१६७–१७१	
	(१७) पदसंग्रह	गीठजी	,,	१७१–१७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७३)	(१७) पदसंग्रह	नरसी	१६५१	१७१—१७७	
	,,	मुक्तानन्द	,,	,,	
	,,	वखतावर	,,	,,	
	,,	मीरां	,,	,,	
	,,	सूरदास	,,	,,	
	(१८) नामबत्तीसी ३२ छन्द	सूरतराम	,,	१७७—१८५	लि.क.—जगदीशराम, हाथरसमध्ये ।
७४	गुटका—				
	(१) दादूवाणी (पूर्ण)	दादूजी	१८वीं.श.	१—१७६	बड़ा गुटका । फुलेरेसे चिरञ्जीव रामगोपालजीने भेजा था, ता० ७-४-२७को सांभरसे साधु माधोदासजी ।
	(२) कबीरजीकी साखी (४३ अंग) ८१६ साखी	कबीर	,,	१७१—२०७	
	(३) कबीरजीका पद ४४२	,	,,	२०७—२७६	
	(४) सकलगहगहा (राग सूहा)		,,	२७७वां	
	(५) बावनी	,,	,,	२७७—२७६	
	(६) सतपदीरमैणी ७ छन्द	,	,,	२७६—२८०	
	(७) अष्टपदी बड़ी ८ छन्द	,,	,,	२८०—२८३	
	(८) दुपदीरमैणी २ बड़े छन्द	,,	,,	२८३—२८५	
	(९) अष्टपदीलंगडीरमैणी ८ छंद	,,	,,	२८५—२८७	
	(१०) बारहपदी १२ छन्द	,,	,,	२८७—२८८	
	(११) चौपदीरमैणी ४ पद	,,	,,	२८८—२८६	अन्त में—'दादू कबीर नामदेजी' ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१२) नामदेवजीके पद १५८ पद	नामदेवजी	१८वीं श.	२९०-३१२	
	(१३) रैदासजीके पद ८४ पद	रैदास	,,	३१२-३२६	
	(१४) रैदासजीकी साखी ४ साखी	,,	,,	३२७वां	
	(१५) हरिदासजीके पद १०१ पद	हरिदास निरंजनी	,,	३२७-३४३	
	(१६) हरिदासजीकी साखी ४	हरिदास	,,	३४४वां	
	(१७) बड़ा पद (राग मारू ३० अंतरे)	,,	,,	३४४-३४५	
	(१८) बारहपदी १२ छन्द	,,	,,	३४५-३४६	
	(१९) दसपदीरमैणी १० पद	,,	,,	३४६-३४७	
	(२०) जपुजी ३८ छन्द	नानक	,,	३४८-३५२	
	(२१) नानकजीके पद ४	,,	,,	३५३वां	राग महेलू।
	(२२) अलाहणीया ग्रन्थ	,,	,,	३५३-३५५	राग वडहंस।
	(२३) बखनाजीका पद	बखना	,,	३५५वां	
	(२४) कान्हाजीका पद २७	कान्हा	,,	३५६-३६१	
	(२५) कान्हाजीकी साखी ६ वड़ छन्द	,,	,,	३६१वां	
	(२६) अनभैप्रबोध १४० छन्द	गरीबदास (दादूसुत)	,,	३६१-३६८	अन्तमें इस ग्रन्थका नाम अध्यातमबोध लिखा है।
	(२७) गरीबदासके पद, १० पद ५ राग	,,	,,	३६८-३७०	
	(२८) गरीबदासकी साखी ४८ छन्द	,,	,,	३७०-३७२	
	(२९) वनवारीदास बाबाके पद २ २ राग	वनवारीदास बाबा	,,	३७२वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(३०) रामानन्दजीका पद (३ पद, २ राग)	रामानन्द	१८वीं श.	३७२–३७३	
	(३१) सुखानन्दजीका पद (१ पद, १ राग)	सुखानन्द	,,	३७३वाँ	
	(३२) आसानन्दजीका पद १	आसानन्द	,,	,,	
	(३३) कृष्णानन्दका पद, ४ पद, ३ राग	कृष्णानन्द	,,	३७३–३७४	
	(३४) धन्नाजीका पद (२ राग, २ पद)	धन्ना	,,	३७४वाँ	
	(३५) सेनजीका पद १	सेनजी	,,	,,	
	(३६) पीपाजीका पद १७ व राग ७	पीपाजी	,,	३७४–३७७	
	(३७) पीपाजीकी साखी १०	,,		३७७वाँ	
	(३८) सोझाका पद ७	सोझा	,,	३७७–३७९	
	(३९) परसजीका पद ७	परसजी	,,	३७९–३८०	
	(४०) परसजीकी साखी ३	,,	,,	३८०वाँ	
	(४१) सदनाजीका पद २	सदना	,,	,,	
	(४२) कमालजीका पद १	कमाल	,,	,,	
	(४३) ज्ञानतिलोकका पद १	ज्ञानतिलोक	,,	,,	
	(४४) छीतमजीकी जखड़ी ४ पद	छीतम	,,	३८०–३८२	राग मारू वड़े अंतरेकी, रचना अच्छी है।
	(४५) बहम्वलजीकी जखड़ी ३ पद	बहम्वल	,,	३८२–३८३	
	(४६) रहोवाजीको विणजारो	रहोवाजी	,,	३८३–३८४	राग जंगली गौड़ी।
	(४७) काजीकादनकी साखी-छन्द १२२	कादन	,,	३८४–३८८	सिन्धी बोलीमें।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(४८) शेख फरीदकी साखी; (साखी ७१, १ पद)	फरीद शेख	१८वीं.श.	३८८–३९२	
	(४९) काजी महमूदजीका पद व साखी २४ पद, साखी ३	महमूदजी	,,	३९२–३९५	
	(५०) शेख मावदीका पद ३	मावदीजी	,,	३९५–३९६	
	(५१) त्रिलोचनजीका पद ३	त्रिलोचन	,,	३९६–३९७	
	(५२) सोमजीका पद ५	सोमजी	,,	३९७–३९८	गुजराती भाषामें ।
	(५३) वैष्णव महिमा साखी	चतुर्भुज	,,	३९८–३९९	,,
	(५४) नरसी मेहताका पद ३	नरसी	,,	३९९–४००	
	(५५) भीमजीका पद १	भीमजी	,,	४००वां	मारवाड़ी भाषामें ।
	(५६) वछनागरजीका पद २	वछनागर	,,	,,	
	(५७) वीसाजीका पद १	वीसाजी	,,	,,	गुजराती भाषामें ।
	(५८) मछीन्द्रजीका पद १	मछीन्द्र	,,	,,	
	(५९) कीताजीका पद १ बड़ा		,,	४००–४०१	
	(६०) वेणीदासजीका पद ६	वेणीदास	,,	४०१–४०३	योगरहस्य; उत्तम ।
	(६१) शिवश्रमजीका पद ३	शिवश्रम	,,	४०३–४०४	गुजराती भाषामें योगरहस्य है ।
	(६२) वींझलजीका पद १	वींझल	,,	४०४वां	योगरहस्य ।
	(६३) गोविन्ददासजीका पद १	गोविन्ददास	,,	४०४–४०५	,,
	(६४) नरसिंहदासजीका पद १	नरसिंहदास	,,	४०५वां	उर्दू मिला फकीरी मजमून है ।
	(६५) मुकुन्दभारतीका पद २	मुकुन्दभारती	,,	,,	
	(६६) सन्तदासजीका पद १	सन्तदास	,,	,,	
	(६७) विद्यादासका पद १	विद्यादास	,,	४०५–४०६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(६८) नेतजीका पद ३	नेतजी	१८वीं श.	४०६वां	उत्तमपद है।
	(६९) सारीजीका पद १	सारीजी	,,	,,	
	(७०) वाल्मीकिजीका पद १	वाल्मीकिजी	,,	,,	
	(७१) नायकजीका पद १	नायकजी	,,	,,	
	(७२) अङ्गदजीका पद ४	अङ्गदजी	,,	४०६–४०७	
	(७३) भुवनजीका पद ३	भुवनजी	,,	४०७वां	
	(७४) सीहाजीका पद २	सीहाजी	,,	४०७–४०८	
	(७५) श्रीरङ्गजीका पद १	श्रीरङ्गजी	,,	४०८वां	
	(७६) दीपजीका पद २	दीपजी	,,	,,	
	(७७) घाटमदासजीका पद १	घाटमदास	,,	,,	
	(७८) चन्दनदासका पद १	चन्ददास	,,	,,	
	(७९) गोइन्ददासका पद १	गोइन्ददास	,,	,,	
	(८०) रङ्गीजीका पद २	रङ्गीजी	,,	४०८–४०९	४०९का पद अधूरा है। दूसरीके टेर भी पूरे नहीं हैं।
	(८१) व्यासजीका पद १	व्यास	,,	४०९वां	
	(८२) कीलजीका पद २, साखी २	कीलजी	,,	,,	
	(८३) नापाजीका पद २१	नापाजी	,,	४०९–४१२	
	(८४) परमानन्दजीके पद २१	परमानन्द	,,	४१२–४१५	
	(८५) सूरजी के पद १६	सूरदास	,,	४१५–४१७	
	(८६) जोगेश्वरी शब्दी १५५	गोरखनाथ	,,	४१७–४२४	
	(८७) गोरखनाथजीके पद ४३	,,	,,	४२४–४३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(८८) सप्तवारग्रन्थ	गोरखनाथ	१८वीं.श.	४३३वां	
	(८९) पन्द्रहतिथिग्रन्थ	"	"	४३३–४३४	
	(९०) प्राणसंकुलीग्रन्थ	"	"	४३४–४३५	
	(९१) शिक्षादर्पणयोग (वचनिका)	"	"	४३५–४३६	
	(९२) अभैमात्राग्रंथ "	"	"	४३६वां	
	(९३) नरवै(निर्भय) वोध (वचनिका)	"	"	४३६–४३७	
	(९४) मछीन्द्रगोरखवोधसंवाद-छन्द १२३	"	"	४३७–४५३	
	(९५) आत्मबोधग्रन्थ	"	"	४५३–४५४	
	(९६) रोमावलीग्रन्थ	"	"	४५४–४५५	
	(९७) ज्ञानचौतीसा (छन्द ३४ गद्यमिश्रित)	"	"	४५५–४५७	
	(९८) काफिरबोधग्रन्थ	"	"	४५७–४५८	महम्मदशाह गोरखसंवाद ।
	(९९) अकलिसिलूक	"	"	४५८वां	
	(१००) गोरखगणेशगोष्ठी छन्द ३०	"	"	४५८–४६१	
	(१०१) ब्रह्मस्तोत्र-निरञ्जन-अष्टाङ्ग (९ श्लोक)	शङ्कराचार्य	"	४६१वां	अशुद्ध संस्कृतमें लिखा है ।
	(१०२) साधपरिख्याजोग साखी २५	पृथ्वीनाथ	"	४६१–४६२	
	(१०३) चर्पटजीकी साखी ६६	चर्पटजी	"	४६२–४६५	
	(१०४) भरथरीजीकी शब्दी ३२ छन्द	भरथरी	"	४६५–४६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१०५) सप्तसंख	भरथरी	१८वीं श.	४६६–४६७	दो राग।
	(१०६) गोपीचन्दकी शब्दी १८ छन्द	,,	,,	४६७वां	
	(१०७) जलन्धरीपावकी शब्दी ११ छन्द	जलन्धरीपाव	,,	४६८–४६९	
	(१०८) हालीपावकी शब्दी साखी ७	हालीपाव	,,	४६९वां	
	(१०९) हालीपावका पद १	,,	,,	,,	
	(११०) मींडमींडकीपावकी शब्दी ७	मींडकीपाव	,,	,,	
	(१११) कणेरीपावकी शब्दी ७	कणेरीपाव	,,	४६९–४७०	
	(११२) सत्तीकणेरीका पद १	सतीकणेरी	,,	४७०वां	
	(११३) जतीहणवन्तकी शब्दी ८	हणवन्तजती	,,	,,	
	(११४) जतीहणवन्तका पद ३	,,	,,	४७०–४७१	
	(११५) नागाअर्जनकी शब्दी ३	नागार्जुन	,,	४७१वां	
	(११६) वालनाथकी शब्दी १२	वालनाथ	,,	,,	
	(११७) चौरङ्गनाथकी शब्दी ४	चौरङ्गनाथ	,,	,,	
	(११८) चुणकनाथकी शब्दी ४	चुणकनाथ	,,	४७१–४७२	
	(११९) सिद्ध गरीबनाथकी शब्दी ३	गरीबनाथ	,,	४७२वां	
	(१२०) सिद्ध हरतालीकी शब्दी ६	हरताली	,,	,,	
	(१२१) सिद्ध घोडाचोलीकी शब्दी १६	घोडाचोली	,,	४७२–४७३	
	(१२२) अजैपालकी शब्दी ९	अजैपाल	,,	४७३वां	
	(१२३) दत्तजीकी शब्दी १६	दत्त	,,	४७३–४७४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१२४) देवलनाथजीकी शब्दी ४	देवलनाथ	१८वीं.श.	४७४वां	
	(१२५) घूंधलीमलकी शब्दी १६	घूंधलीमल	,,	४७४–४७५	इसके आदिमें 'चौरासी पहला ओघा मारचा ता समैकी कथा" लिखा है।
	(१२६) गोरखनाथजीकी षट्पदी-छन्द ६	गोरखनाथ	,,	४७५वां	
	(१२७) जडभरतचरित्र छन्द ७८	जनगोपाल	,,	४७५–४७८	
	(१२८) दादूजनमप्रजन्तलीला (दादूपरची) छन्द ४२५	,,	,,	४७८–४६७	
	(१२९) कायाप्राणसंवाद छन्द ८ बड़े	,,	,,	४६७–४६८	
	(१३०) प्रह्लादचरित्र छन्द १६१	,,	,,	४६८–५०५	
	(१३१) ध्रुवचरित्र छन्द २२३	,,	,,	५०५–५१४	
	(१३२) दत्तजीकी २४ गुरुलीला-छन्द ५५	,,	,,	५१४–५१६	
	(१३३) मोहविवेकसंवाद छन्द १२६	,,	,,	५१६–५२१	
	(१३४) मोहमर्द राजाकी कथा (छन्द १०८)	जगन्नाथ (दादूशिष्य)	,,	५२१–५२६	
	(१३५) बारहमास्या	जनगोपाल	,,	५२६–५२८	बारह कड़ीका एक प्रबन्ध।
	(१३६) जनगोपालके पद १७	,,	,,	५२८–५३१	
	(१३७) जनगोपालके सवैया १०	,,	,,	५३१–५३२	
	(१३८) जनगोपालकी साखी ४	,,	,,	५३२–५३३	
	(१३९) चैनजीका पद १५	चैनजी	,,	५३३–५३६	पद उत्तम है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१४०) चैनजीकी साखी २०	चैनजी	१८वीं.श.	५३६–५३७	
	(१४१) चैनजीके सवैया १४	,,	,,	५३७–५३८	दादूजीकी स्तुतिके हैं।
	(१४२) चैनजीका कड़खा १० छन्द	,,	,,	५३८वां	,,
	(१४३) टीलाजीका पद २४	टीलाजी	,,	५३८–५४१	
	(१४४) आरती संग्रह (सिन्धी)	अनेक कवि (१) दूजण (२) बखना (३) जगजीवन (४) नरवद	,,	५४१–५४२	सब ६ आरती हैं।
	(१४५) बखनाके पद ४१	बखना	,,	५४२–५५१	
	(१४६) बखनाजीकी साखी १६	,,	,,	५५१–५५२	
	(१४७) साधुजीका पद २	साधुजी	,,	५५२वां	
	(१४८) पूरणजीका पद १	पूरणजी	,,	,,	
	(१४९) दूजणजीका पद ६	दूजणजी	,,	५५२–५५३	उत्तम हैं। 'गुरु दादूसिह आया आया रे।'
	(१५०) दूजणजीकी साखी ८	दूजणजी	,,	५५३वां	
	(१५१) जगजीवनजीका पद ४	जगजीवन	,,	५५३–५५४	
	(१५२) जगजीवनजीकी साखी १००	,,	,,	५५४–५५७	विरहका अङ्ग है।
	(१५३) जैमलजीकी साखी २४२	जैमल	,,	५५७–५६६	कई अंग हैं।
	(१५४) जैमलजीका पद ४	,,	,,	५६६वां	
	(१५५) रज्जबजीका पद ३, साखी ३	रज्जब	,,	५६७वां	
	(१५६) रज्जबजीके सवैया ५४	,,	,,	५६७–५७२	दादूजीके जीवन-चरित्रसे सम्बद्ध अच्छे सवैया हैं। रज्जब वाणीमें भी देखो।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१५७) रज्जबजीके पद तथा सवैये	रज्जब	१८वीं.श.	५७२–५७४	
	(१५८) रज्जबजीकी साखी	,,	,,	५७४वां	
	(१५९) रज्जबजीके सवैया	,,	,,	,,	
	(१६०) रज्जबजीका कवित्त छप्पय	,,	,,	५७४–५७५	
	(१६१) ब्रह्मलीलाग्रन्थ ४३ छन्द	मोहनदास	,,	५७५–५७७	
	(१६२) मोहनजीके सवैया ४	,,	,,	५७७–५७८	
	(१६३) मोहनजीके पद ५	,,	,,	५७८वां	
	(१६४) घडसीजीका पद १	घडसीजी	,,	५७८–५७९	
	(१६५) भक्तमाला ७२ छन्द	परसराम ?	,,	५७९–५८२	बड़े कामकी वस्तु है।
	(१६६) रज्जबजीकी साखी २	रज्जब	,,	५८२वां	
	(१६७) विष्णुकी चौबीससिद्धि २७ छन्द		,,	५८२–५८३	
	(१६८) गुरुउपदेशज्ञानअष्टक ८ छन्द	सुन्दरदास	,,	५८३–५८४	
	(१६९) गुरुदेवमहिमास्तोत्रअष्टक-८ छन्द	,,	,,	५८४वां	
	(१७०) सुन्दरदासजीका पद १	,,	,,	५८४,५८६	
	(१७१) बखनाजीका पद १	बखनाजी	,,	५८४,५८५, ५८६	
	(१७२) माधोदासजीकी साखी १	माधोदासजी	,,	५८५वां	
	(१७३) कबीरजीका पद १	कबीरजी	,,	,,	
	(१७४) नानकजीका पद ४	नानकजी	,,	५८५–५८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७४)	(१७५) बखनाजीका पद १	बखनाजी	१८वीं.श.	५८६वां	गुरुमहिमा।
	(१७६) सुन्दरदासजीका पद	सुन्दरदास	,,	,,	५८६ पर गुरुकी महिमा है आगे पाने नहीं हैं। जाना जाता है कि फटी पुस्तककी ही जिल्द बंधाई गई है। पीछेके पाने खो गये सो तो कहां से मिलते ?
७५	(१) शिव-यशोदासंवाद छन्द ४		१९वीं श.	१—३	पुराने पत्रोंकी छोटी पोथी है।
	(२) कृष्णकी बारामासी और एक ध्रुवपद (छन्द १२ और एक ध्रुपद)	यशोदालाल, कानडदास	,,	३—४	
७६	गुटका—				
	(१) दादूवाणी साखी (अपूर्ण) अंग ३७, साखी २५०१	दादूजी	१८वीं.श.		प्रथम भागके पानेमें ही है। दादूवाणीके साखी भागमें परचाके अङ्ग ४के १८८ तककी साखी नहीं है, इतनी रह गयी हैं। आगे पद-भाग सम्पूर्ण है। परन्तु सारा ही गुटका जीर्णशीर्ण व दीमक खाया हुआ है। और यह गुटका जोबनेर भाटखेड़ी वाले बाईजी नवनिधि कुमारी से प्राप्त हुआ।
	(२) दादू पद	,,	,,		
	(३) कबीरजीकी साखी अङ्ग ४३ व साखी ८२७	कबीरजी	,,	१—८०	प्रायः शुद्ध लिखी है। पीछेके पत्रोंको दीमक खा गई है।
	(४) कबीरजीका पद	,,	,,	८०—२१८	लहुडी ६ पदी रमैणी तक।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७६)	(५) नामदेवजी का पद राग १७, पद १४८	नामदेवजी	१८वीं.श.		राग धनाश्रीमें आरती तक।
	(६) नामदेवजीकी साखी १० साखी				करीब आधे पत्रे तक ऊपर-ऊपरके दीमक खाये हुए हैं, पृष्ठांकोंका पता ही नहीं चलता है। ऊपर नीचे दीमक खाए पत्ते हैं।
	(७) रैदासजीका पद-राग १२, पद ८३	रैदास	,,		
	(८) रैदासजीकी साखी ४	,,	,,		'इति श्री' की दो लीक हींगलुकी बच रही है।
	(९) हरिदासजीका पद-राग १०, पद १००	हरिदास निरञ्जनी	,,		
	(१०) हरिदासजीकी साखी ४	,,	,,		
	(११) हरिदासजीकी रमैणी १०	,,	,,		
	(१२) योगेश्वरीशब्दी चौपाई १५१	गोरखनाथजी	,,		यह दादूदयालजीकी स्तुति और ज्ञान-दानके हैं। इनमें वीररस, शान्तरसमें अध्यात्म भरा पड़ा है। ये कडखे गाये जाते हैं।
	(१३) चैनजीका कडखा (रागमें १०)	चैनजी	,,		
	(१४) केवलजीका कडखा १	केवलजी	,,		यहां तक ही पत्र हैं। आगे पत्र ही नहीं हैं। इस कडखेमें—'फेट सहितकी आगे गुरूज गोला कहैं सूर सन्मुख रह गये दंग है'''।' इतना ही लिखा है।
७७	बारहमासीसंग्रह गुटका—				
	(१) बारहमासी खैरातीसाह(छन्द १३)	खैरातीसाह	१९वीं श.	१—२०	प्राय: कविता साधारण परन्तु आशय रहस्यमय। अशुद्ध मेरठी शब्दोंके प्रयोगके कारण मेरठनिवासी प्रतीत होता है। गुटका १०×७ अंगुल, ऊपर लाल खारवेका रेजीका गत्ता।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७७)	(२) बारहमासी १२ छन्द	मुरलीदास	१९वीं श.	२०—२६	प्रत्येक छन्दके अन्तमें 'या ते भनत मुरलीदास बलि जाऊँ' यह अन्तरा हींगलूसे लिखा हुआ है और मीलानका टुकड़ा आता है।
	(३) बारहमासी १२ छन्द	अज्ञातकर्तृक	,,	२६—२८	आषाढ़ माससे जेठ तकका वर्णन है।
	(४) बारहमासी १३ कवित्त	काशीराम	,,	२८—३५	कवित्तोंमें कविता अच्छी है।
	(५) बारहमासी १२ कड़खा छन्द	मगनजी	,,	३५—४२	गोपी-प्रेम, कृष्ण-मिलनका वर्णन है।
	(६) बारहमासी १२ दोहे तथा १२ झूलणा छन्द	रघुकवि	,,	४२—५०	पत्नी द्वारा चतुराईसे पतिको बारह मास तक बिलमा कर विदेश गमनसे रोक रखनेका वर्णन है।
	(७) बारहमासी १३ चौपाई	भवानीदास	,,	५०—५४	साधारण रचना है।
	(८) ,, १२ छन्द	लालदास	,,	५४—५८	कविता हीन और चिन्त्य है।
	(९) ,,	वेणीमाधव	,,	५८—६२	यह प्रख्यात बारहमासी है। लिपिकार भिन्न है। (सं.)
७८	गुटका—				दीमक खाया हुआ और अपूर्ण है।
	(१) रूपदासजीकी बाणी (लच्छ-अलच्छ-जोगग्रन्थ) दूहा ५, छंद ६३, चौपई ४; सर्व ७२	रूपदास, चरणदासशिष्य	,,	१—४३	अपूर्ण। छोटा दीमक खाया हुआ फटा गुटका; ८×५ अंगुल, पाने थोड़से, साधारण रचनामें ऊंचा ज्ञान।
	(२) मनसुखग्रन्थ दोहा ३३; चौपई ५; कुंडलिया ४	,,	,,	४३—७५	
	(३) रजमाबोध	,,	,,		
	(४) फुटकर साखी	,,	,,		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७९)	(१) कविप्रिया (अपूर्ण)	केशवदास	१९वीं.श.	१२–९६	किसी मथुरावाले चौबेजीसे प्राप्त, नीमके थानेमें। चमड़े का गत्ता। कई पत्रे नहीं। लि.क.–कल्याणदासराव पारीक पुरोहितांका। लि.स्था.–सांगानेर। इसके अन्तमें जयसिंह तथा जगतसिंहकी प्रशस्ति पर कुछ छन्द हैं। (सं.)
८०	हमीररासो	महेश कवि	१९३७	४८	
८१	(१) स्वरोदय	रसराशि	१९९२	१–५	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा
	(२) रसकौतुक, (राजसभारंजन) समस्या प्रबंध, प्रथम प्रभाव ९९ दोहे।		,,	१–५	
	(३) मांझ मलिक मुकाम, २८ मांझे	रसराशि	,,	१–३	
	(४) कवित्तशत ७१ कवित्त	,,	,,	१–१३	अपूर्ण।
	(५) पृथ्वीमङ्गल (हितोपदेशपद्यानुवाद)	द्वारकानाथभट्ट देवर्षि, (वाणी कवि उपनाम)	,,	१–१६७	महाराज पृथ्वीसिंह जयपुरके लिए १८२८ संवत्‌में रचित।
८२	रघुराजविनोद	पुरन्दर	१९९४		रचनाकाल १९४१ संवत्। यह प्रति नवलकिशोर प्रेससे छपी हुई पुस्तककी नकल है। यह बहुत सुन्दर काव्य है। रींवा-महाराज रघुराजसिंहजीका यश विविध प्रकारसे वर्णित है। जोधपुर-नरेश, जयपुर-महाराज रामसिंहका यश और थोड़ा इतिहास भी इसमें वर्णित है। रोचक, मनोहर, रसीले छन्द हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
८३	(१) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल		१–२१	यह गुटका सांगानेरके राव रामनारायणने १) में सांगानेर में दिया था, जब हम स्व. पुरोहित गोपीनाथजीके साथ उनका पुस्तक-संग्रह देखने सांगानेर गए थे। स्यात् यह संवत् १९८३ के कार्तिक मासकी बात है।
	(२) बेली (कृष्ण-रुक्मिणी)	पृथ्वीराज राठौड़		२१–४९	
	(३) विजैव्याह	बारहठ मुरारीदान		४९–७१	
	(४) सप्तश्लोकी गीता			७२वाँ	
	(५) चतुःश्लोकी भागवत			७२–७३	
	(६) चतुःश्लोकी महाभारत			७३वाँ	यह भारत-सावित्री है जिसमें ४-५ ही श्लोक ले लिए हैं।
८४	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१९७२	२६	पूर्ण परन्तु अशुद्ध; अष्टाङ्ग योगकी कुछ-कुछ टीका और चक्रोंके चित्रसे भी है।
८५	आत्मबोध	बाबा बेनामीसाहब	१९४१	१३४	
८६	फुटकर पद-कवित्त		२०वीं.श.		जीर्ण, त्रुटित; संवत् १९९३ में मिला।
८७	जयपुर राजवंशावली				महाराजा जगतसिंहजी तक है। १६ पन्ने प्रायः अशुद्ध हैं।
८८	होली हजारा	स्व.पु. हरिनारायणजी द्वारा संगृहीत			इसमें विभिन्न स्थानों एवं सूत्रों से प्राप्त १ हजार होलीके गीतोंका संग्रह है। (सं०)
८९	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास	१८६९	९०	इस गुटके के पीछे कुछ स्फुट कवित्तभी लिखे हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(९०)	(१) मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास	१७७७	१–९१	इस गुटके के आदिके १६ पत्रोंमें जिनपर अलगसे संख्या लगी है, रागमाला एवं रसविलास नामक दो कृतियां लिखित हैं। रागमाला का लिपिकाल १८१० है तथा रसविलासका १७७७ है। (सं०) लि. क. देवीदास कायथ, षंडेलाकी पोथीसे प्रतिलिपीकृत । लि. क. देवीदास कायथ (सं०)
	(२) मोहविवेक	जनगोपाल	,,	९२–१०२	
	(३) माधवानल-कामकुंवलांकी कथा	आलम		१०३–१५३	
	(४) नैननामां	वाजीद	,,	१५४–१५७	
	(५) स्फुट सवैया आदि		,,	१५७–१६०	
	(६) ढोला-मारुवणीकी वात चोपई	कुसललाभ	१८००	१६०–२१४	र.का. १६७७, र.स्था. जेसलमेर, लि.क. संगरामसींघ 'नरूकाराव'
	(७) श्रीरामशतनामस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहितोक्त			
९१	(१) श्यामबत्तीसी	श्याम	१७९६	१–४	
	(२) अधूरे-पूरेके कवित्त		,,	५–६	
	(३) स्फुटकवित्त	चंदकवि, गङ्ग, गद, कबीर	,,	८–१२	७ व १०वां पत्र अप्राप्त।
	(४) कवित्तादि, (शिखनखवर्णन-प्रास्ताविक इत्यादि)	भरमी कवि	,,	१३–१८	
	(५) कवित्त एवं गूढा	अनेक कवि	,,	१९–२०	
	(६) गुण-ध्रुवचरित्र	परमानन्द	,,	२१–२५	
	(७) हरिनाममाला	शङ्कराचार्य	,,	२५–२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६१)	(८) सप्तश्लोकी गीता	महाभारतोक्त	१७६६	२६वां	
	(९) चतुःश्लोकी भागवत	भागवतोक्त	,,	२७वां	
	(१०) पचीस नाम	वेदव्यास	,,	,,	
	(११) श्रीरामस्तोत्र	श्रीलक्ष्मणप्रोक्त	,,	,,	
	(१२) रामाष्टक	शङ्कराचार्य	,,	२८वां	
	(१३) चौबीस अवतार कवित्त	अग्रदास (नाभादास)	,,	,,	
	(१४) दूहा-प्रास्ताविक कवित्त-गूढा		,,	२९–३६	कुल १४६ पद्य हैं।
	(१५) कवित्त तथा हीरावेधी कवित्त ३, गूढा		,,	३६–३७	हीरावेधी कवित्तोंका प्रारम्भिक पद्यांश—'आगरे' केसोंह प्यारे 'सूरति' तिहारी विन देषेंतें 'चंदेरी' रंग 'बीजापुर' जात हैं।' (सं.)
	(१६) दूहा तथा अन्तर्लापिका कवित्त		,,	३८–४०	
	(१७) गुण नाग दव(म)णि (छंद-भुजंगी) पवाडो	सांई कवि	,,	४४–५३	
	(१८) कवित्त आदि	सुन्दरदास आदि	,,	५४–५६	
	(१९) कवित्त १५	रसषांन	,,	५६–५८	
	(२०) स्फुट कवित्त	अनेक कवि	,,	५८–६६	ये कवित्त अनेक कवियों द्वारा रचित हैं। इनमें गंगाजीको प्रभाव, वेसर-वेसरमोती, बारहमासा आदिके कवित्त हैं। अधिकतर नैन (नेत्र)के कवित्त हैं। (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६१)	(२१) हीयाली कवित्त (कहमुकरीके छन्द)	अनेक कवि	१७६६	६७–७०	इसमें 'कवित्त मंछ उथल' तथा पत्रके प्रास्ताविक दोहे एवं बिहारीकविके एक दो दोहों पर पद्यटीका है। (सं.)
	(२२) कवित्त अष्टाविधानी	कवि पीथल	,,	७०–७१	चक्रबन्ध काव्य।
	(२३) सवैया छप्पय आदि		,,	७१–७४	
	(२४) मधुमालती	चतुर्भुजदास	,,	१–३८	लि.स्था.--गिरवरपुर, साहदेवजी बीजावरगी-पठनार्थ।
६२	(१) मधुमालती	,,	१८६६		लि.क.--मनसाराम पांडे।
	(२) हितोपदेश भाषा	विष्णु शर्मा	,,	३८–६६	,,
	(३) रतनावतीकी वारता	जान कवि	,,	६७–१४२	,, ,, रचना–सं. १६६१, हिजरी १०१४।
६३	मधुमालती	चतुर्भुजदास	१६६६ सने १६३६, ६ जून	१७५	यह प्रतिलिपि १८५३की प्रतिसे लिपीकृत है। इसी पुस्तकमें ३५ स्फुट पत्र और हैं जो भगवानदास लेखक द्वारा प्रेसकापीके रूपमें किये हुए हैं। (सं.)
६४	(१) हमीर रासो (१ कवित्त, नीसाणी महाराजि प्रतापस्यंघजीकी षिडिया हुकमचंदजीरी कही आदि)		१६वीं.श.	१–१०	१-३ पत्र तक कवित्त हैं।
	(२) नीसाणी महाराजकुमार रायचंद मनोहरदासोतरी	भूधरदास	,,	१०–१७	
	(३) कवित्त		,,	१७–२७	राव हणू आदिके सम्बन्धमें।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(९४)	(४) गुणझमाल रावजी श्री इन्द्र-सिंहजीरी	सांदू सबलसींघजीरी कही	१९वीं.श.	२७–४८	
	(५) गीत			४८–५१	अनेक रावोंके सम्बन्धमें।
	(६) शिवनारायणका कवित्त	तुलसीदास	,,	१–५	
	(७) ,, स्फुट कवित्त	भूधर, शिवराम आदि	,,	५–७	
	(८) रामचरित	तुलसीदास	,,	७–२४	१९६ पद्योंमें रचित।
	(९) पदराग	,,	,,	२४–२९	शिवस्तुतिविषयक।
९५	कक्का बत्तीसी	रसीलीलाल गोपाल	,,	१६	
९६	रसिकप्रिया	केशवदास (इन्द्रजित)	,,	४६	अपूर्ण। पत्र १-४ एवं ८-२६ तक अप्राप्त।
९७	शाखोच्चार (रामचरणजीकी साखी आदि)		,,	१७+४=२१	पत्र १, २ तथा ८-१० तक अप्राप्त। पत्र ४ नामप्रताप, स्वरोदय एवं जमपुरी अठाईस कुंडको आख्यान आदिके हैं। (सं.)
९८	रूपदीपक पिङ्गल	जयकृष्ण कवि	,,	७	रचनाकाल १७७३।
९९	रामायण	तुलसीदास	१८०५	११८	
१००	अमीरनामा		२०वीं.श.	१४९	उर्दू लिपिमें लिखित। यह टोंकके नवाब अमीरखांकी जीवनी है। इसका अंग्रेजी अनुवाद हो चुका है। राजस्थानके इतिहासके लिए महत्वपूर्ण पुस्तक है। (सं.)
१०१	सर दफ्तरे अब्बुल फजल		,,	११९	उर्दू लिपिमें मुद्रित।
१०२	(१) ज्ञानसमुद्र छन्द ३०६	सुन्दरदास	१९१०	१६	लि.क.—आशाराम।
	(२) सर्वाङ्गयोग आदि ग्रन्थ	,,	१९०९	५०	लि.क.—आशाराम, रामगढ़में लिखित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१०२)	(३) सवैया (सवईया)	सुन्दरदास	१९२१	४९	लि.क.–आशाराम, चूरूमें लिखित।
	(४) साखी	,,	१९०९	१–३६	,, ,, रामगढ़में लिखित।
	(५) शब्द	,,	१९०९	३६–६६	,, ,, ,,
	(६) विपर्य्यय-अलङ्कारवर्णनकाव्य सटीक	,,	२०वीं श.	११	
१०३	विप्रजयशब्दको अंग	,,	१९वीं श.	३	
१०४	विपर्य्यय-अलङ्कारवर्णनकाव्य सटीक	,,	१८९७	१०	लि.स्था.–चूरू।
१०५	(१) सर्वतोभद्रबंध (समुद्रबंध) सवैया		१८२८ (?)	१	र.का. योग द्वार व्याकरण भू. संवत माघ उजार। ऋतु तिथि निशिपति वार शुभ, रच्यो बंध वधिसार ॥३॥
	(२) मनुष्यबंध सवैया	,,	१९वीं श.	१	
	(३) स्वर्ग-नरकका खेल-चित्र	,,	,,	१	
	(४) खड्गबंध २ (पट्टिशबंध)		२०वीं श.	२	
१०६	(१) गुरुकृपाज्ञानाष्टकस्तोत्र	,,	१९३१	१–३	स्व. पुरोहितजीने केवल 'अष्टकसंग्रह' लिखा है। (सं.)
	(२) गुरुमहिमाष्टक ,,	,,	,,	३–५	
	(३) ब्रह्माष्टक ,,	,,	,,	५–६	
	(४) स्तुत्यष्टक ,,	,,	,,	६ठा	
	(५) प्रार्थनाष्टक ,,	,,	,,	७वां	
	(६) सद्गुरुमहिमा निशानी	,,	,,	७–९	
	(७) दशों दिशाके सवैये	,,	,,	९–११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१०७	चित्रकाव्य	सुन्दरदास, मोहनदास	१९वीं	४६	
१०८	(१) फुटकर कवित्तोंका संग्रह (६ चकवै, १४ रतन, १४ विद्या)			१	
	(२) सुन्दरदासजी एवं मोहनदासजीका पद्यमय पत्र-व्यवहार	,,	,,	१	
	(३) दासजीकी नाममहिमा	दासजी	,,	१	
१०९	रजबजीका गुणकवित्त	रजब	,,	६	
११०	(१) सुन्दरदासजीके छन्द	सुन्दरदास	,,	३	
	(२) प्रणाली		,,	१	
	(३) महन्तलीलाप्रदीपन		,,	२	बालकृष्ण महन्तकी लीलावर्णन। (सं.)
१११	भीष-बावनी	भीषजन	,,	४	
११२	निगडबंधका अर्थ			१	
११३	सुन्दरदासजीको ग्रंथ (ज्ञानसमुद्र)	सुन्दरदास	१७४२	२७५	यह पुस्तक पूर्ण तो २६२ वें पृष्ठ पर हो जाती है। इसके बादके पृष्ठों पर चित्रकाव्य अङ्कित हैं तथा स्वामी सुन्दरदासजीके हस्ताक्षरोंमें कई छन्द लिखित हैं (?) पृष्ठ २७५के अतिरिक्त ९ पृष्ठ और हैं जिन पर भी चित्र-काव्य लिखित हैं। प्रति जीर्ण एवं शीर्ण है। सुन्दरदासजीकी रचनाओंकी प्राचीनतम प्रति। प्रतिके अन्तमें — संवत् १७४२ वर्षे आषाढ़ सुदि षष्टी शनिवासरे पोथी लिखाइतें स्वामी सुन्दरदासजी, लिषतं रूपादास महाजन फतेपुरमध्ये, पोथी स्वामी सुन्दरदासजीको ग्रन्थ सम्पूर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
११४	(१) विहारीसतसई-अमरचन्द्रिका-टीकासहित	मू. विहारीदास	१९८५	५४	चन्द्रिका-र.का. १७७१। संवत् १८३७की प्रतिसे लिपीकृत। लि.क.–अयोध्याप्रसाद चतुर्वेदी।
	(२) चिन्तामणिपिङ्गल	चिन्तामणि कवि	,,	१६	लि.क.–अयोध्याप्रसाद चतुर्वेदी। सं. १७७७की प्रतिसे लिपीकृत।
	(३) सूरतिपिङ्गल	सूरत कवि	१९८६	१२	लि.क.–अयोध्याप्रसाद चतुर्वेदी। सं. १९०४की प्रतिसे लिपिकृत।
११५	अमरचन्द्रिका (विहारीसतसईकी टीका)	,, ,,	२०वीं.श.	२४	अपूर्ण। रचनाकाल १७९४।
११६	शतकत्रयभाषा एवं पद्यानुवाद (नीति-मंजरी)सहित	मू. भर्तृहरि	,,	१६७	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा गौड़, जयपुर।
११७	श्रीकृष्णविलास	कविगोपालदान	,,	३८	लि.क.–गोपीचंद शर्मा गौड़, जयपुर। सं. १९०की प्रतिसे लिपिकृत।
११८	श्रीदादूग्रन्थावली	दादूदयालजी	१९८७	१४३ पेज	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा गौड़, जयपुर।
११९	श्रीभक्तमाल सटीक	टी. राघवदासजी	१९८३	२०४ ,,	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा, जयपुर। पेज १२५, १२६ १३१, १३२ नहीं हैं।
१२०	सभासारनाटक	नागराभट्ट रघुराम कवि	२००२	२६ ,,	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा, जयपुर। १८९२की प्रतिसे लिपीकृत।
१२१	युक्तितरङ्गिणीसतसई	कुलपति मिश्र			र.का.–१७४३। कुलपति मिश्रकी औलाद चत्रभुज द्वारा लिखित १९०७की प्रतिसे लिपीकृत। लि.क.–गोपीचन्द शर्मा गौड़, जयपुर। पत्रसंख्या ३७ तक भगवान् शर्माकी लिपि है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१२२	अवधा (अवदी) नाममाला	कविवर उदैराम	२०वीं.श.	५४	पद्य सं. ६३८ कुल है। लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर (?)
१२३	नाममाला (गीतवेलियो)	रतनूहमीर	,,	२६	र.का.—१७७६, (१७०६ ?) लि.क.—गोपीचन्द शर्मा (?)
१२४	एकअखरीनाममाला	रतनूवीरभाण	,,	१२	लि.क.—गोपीचन्द्र शर्मा। इसमें कुल पद्य १३२ हैं। १३१वें पत्रमें रचनाकाल इस प्रकार दिया है—'समत हर रिख सभीयो, भगत राग लख व्रंक। क्रस्न सप्तमी अरु गुरु माला करी अवंक ॥१३१॥ इस दोहे पर यह नोट लिखा है—"इस दोहेका शुद्ध पाठ नहीं मिला है अन्य प्रतिके अभावसे। महाराजा अभयसिंहजीका राज्यकाल विक्रम संवत् १७८०से १८०६ तकका है। यदि हर रिषसे ७३ लिया जाय तो १७७३का संवत् माना जाना उपयुक्त होता है और शुद्ध पाठ मिलनेसे महीनेका नाम भी निकल सकता है। कृष्णा सप्तमी तो है ही।"
१२५	अनेकारथी-एकाक्षरीनाममाला	बारहठ उदैराम कवि	,,	२६	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
१२६	डिङ्गल-अभिधानसंग्रह (डिंगलकोशान्तर्गत)	कविराजा मुरारीदान (मिश्रणसूर्यमल्लात्मज बूंदीवासी)	,,	८०	,, ,, ,,
१२७	(१) एकअपरीनाममाला	रतनूवीरभांण (माधोआचारज)	,,	१–१२ पेज	लि.क.—आसीया बुधा।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
	(२) राव अमरराजजीरी वार्ता	विहारीदास महडु	२०वीं श.	१३-१८ पेज	लि.क.-आसीया बुधा।
	(३) वात वरजोमयारामकी	आसिया बुधा	,,	१९-२४ ,,	अपूर्ण ,, ,, क्रमाङ्क २३५(१)में इस पुस्तकका अवशिष्ट अंश प्राप्त है (सं.)
१२८	शनैश्चरजीकी कथा	जैतसिंह कवि	१९६०	१२	र.का.-१८३५। लि.क.-वनराम जोसी, झुंझनूमध्ये।
१२९	,, ,,	रामानन्द	१९८९	४५ पेज	र.का.-१८२०। लि.क.-गोपीचंद शर्मा गौड़, जयपुर।
१३०	(१) सेवाकी वारि (नीसानी छंद)	कवि कुलपतिमिश्र	१९९६	६ ,,	लि.क.-गोपीचंद शर्मा गौड़, जयपुर। चत्रभुजकी १९०५की प्रतिसे लिपीकृत।
	(२) कुलपति मिश्रकी वंशपरम्परा	पुरोहित हरिनारायणजी(?)	२०वीं श.	३ ,,	
१३१	श्रीहरिध्यानम्	कवि कुलपतिमिश्र	१९७२	१६+२ १८	अन्तिम दो पृष्ठ पर पुरोहित हरिनारायणजी द्वारा रचित इस ग्रन्थकी अपूर्ण भूमिका लिखित है। (सं.)
१३२	गुनचम्पावतीविलास	कविपूरण	२००२	३४ पेज	लि.क.-गोपीचन्द शर्मा गौड, जयपुर। र.का. १८०२।
१३३	रसरामृत	देवर्षिभट्ट मण्डन कवि	१९९७	८४ ,,	लि.क.-भगवान् शर्मा, चौमू-निवासी।
१३४	अमृत-अटलपदावली	अमृतरामजी	१९९५	४३ ,,	लि.क.-गोपीचंद शर्मा जयपुर।
१३५	अमृत-पदमुक्तावली	,,	१९९६	३६ ,,	,, ,, ,, ,,
१३६	कृष्णरुक्मिणीरी वेल	राठोड़ पृथ्वीराज (कल्याणमलोत)	१९९७	६७ ,,	,, ,, ,, ,,
१३७	श्यामवत्तीसी एवं प्रास्ताविक	भरमी कवि आदि	१९९९	३६ ,,	लि.क.-कृष्णाकुमारी जयपुर। (स्व. पुरोहितजीकी पौत्री)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१३८	७१ बारहमासियोंका संग्रह	नाना कवि	२०वीं.श.		इन ७१ बारहमासियोंका विवरण स्वर्गीय पुरोहितजीकी सूचीमें नहीं है। (सं.)
	(१) बारहमासी राधाकृष्ण	गोपाल कवि	,,	४	
	(२) ,, ज्ञानकी	तुलसीदास	,,	४	
	(३) ,, गोपियां व ऊधोकी	हरिविलास	,,	२	
	(४) ,, ,, ,,	अज्ञात कवि	,,	१	
	(५) ,, श्रीकृष्णके विरहकी	,, ,,	,,	२	
	(६) ,, श्रीकृष्णकी	हरिश्चन्द्र	,,	१	
	(७) ,, श्रीकृष्णके विरहकी	सूरश्याम	,,	१	
	(८) ,, ज्ञानकी	मोतीराम	,,	२	
	(९) ,, ऊधो-गोपी-संवाद	सूरजमुनि	,,	२	
	(१०) ,, विरहिनीकी	गनेशप्रसाद	,,	३	
	(११) ,, रामचंद्रजीकी	भवानी	,,	२	
	(१२) ,, गोपियोंके विरहकी	सरदार	,,	१ ला	छंद संख्या १०।
	(१३) ,, ,, ,,	,,	,,	१ ला	छन्द सं. ८।
	(१४) ,, विरहिनीकी	,,	,,	१—३	
	(१५) ,, गोपियोंके विरहकी	खेमसखी	,,	२	
	(१६) ,, भरतजीकी	लालदास	,,	२	
	(१७) ,, वेणीमाधवजीकी	सूरदास	,,	१	
	(१८) ,, कौशल्याजीकी	देवीसिंह	,,	१	
	(१९) ,, जगन्नाथजीकी	युगलकिशोर	,,	२	
	(२०) ,, कन्याविक्रयकी	छगन	,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम		कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१३८)	(२१) बारहमासी	गोपी-बलदाऊजीकी	किङ्करप्रभु	२०वीं श.	१	
	(२२) ,,	कुंवरी-संग-विहार वर्णनकी	अज्ञात	,,	३	
	(२३) ,,	राधाजीकी	,,	,,	२	
	(२४) ,,	ललिता सखीकी	ललिता सखी	,,	१	
	(२५) ,,	विरहिनीकी	बालमुकुन्द	,,	२	
	(२६) ,,	,,	,,	,,	३	
	(२७) ,,	क्वारीकी	घन्नमहाराज	,,	३	
	(२८) ,,	भक्त प्रह्लादकी	अज्ञात	,,	२	
	(२९) ,,	ध्रुवजीकी	पं. गुलराज हरीतवाल	,,	३	
	(३०) ,,	मीरांबाईकी	नन्दराम ब्राह्मण	,,	३	
	(३१) ,,	हरिश्चन्द्रकी	गुलराज हरीतवाल	,,	२	
	(३२) ,,	सत्यनारायणजीकी	मगनीराम चिडावानिवासी	,,	३	
	(३३) ,,	गोपियोंकी	तुलाराम	,,	२	
	(३४) ,,	रामके विवाहकी	अज्ञात	,,	२	
	(३५) ,,	ज्ञानकी	कालूराम आचार्य	,,	२	
	(३६) ,,	उपदेशकी	अमृत	,,	२	
	(३७) ,,	गोपीचन्द और राणीकी बातचीत	अज्ञात	,,	२	
	(३८) ,,	गोपियोंकी कृष्ण-विरहमें	टीरू विप्र	,,	२	
	(३९) ,,	द्रौपदीकी	अनन्त	,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१३८)	(४०) बारहमासी रामनामकी	रामलाल (रामसखि)	२०वीं श.	३	
	(४१) ,, ईश्वरविनयकी	महादेव वैश्य	,,	३	
	(४२) ,, कृष्णके विरहकी	रामबकस	,,	१	
	(४३) ,, ,, ,,	,,	,,	२	
	(४४) ,, ,, ,,	अग्र कवि	,,	१	
	(४५) ,, ,, ,,	सूरदास	,,	१	
	(४६) ,, उद्धवगोपीसंवाद	,,	,,	१	
	(४७) ,, अंग्रेजी महीनोंकी	गेंदनलाल गौहर	,,	२	
	(४८) ,, निहालदेकी	घनाघन	,,	३	
	(४९) ,, दयानन्दजीकी दया	अज्ञात	,,	५	ऊमरकाव्यगत
	(५०) ,, गणेशजीकी	बाबू भगवतीप्रसाद दारूका	,,	४	
	(५१) ,, निहालदेविलापकी	चौधरी शिगराम वर्मा	,,	३	
	(५२) ,, राधाकृष्णकी	ललितकिशोरी	,,	३	
	(५३) ,, शृङ्गारकी	,,	,,	९	
	(५४) ,, जाहरमल सोनीके विरहकी	जाहरमल सोनी वृन्द वन-निवासी	,,	५	
	(५५) ,, विरहकी	अलाबख्श	,,	५	
	(५६) ,, श्रीकृष्णकी	यशोधालाल	,,	२	
	(५७) ,, श्रीकृष्ण-कुब्जाकी	सल्लर	,,	१	
	(५८) ,, जनगोपालजीकी	जनगोपाल	,,	३	
	(५९) ,, खैरासाहकी	खैरासाह	,,	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१३८)	(६०) ,, मुरलीदासजीकी	मुरलीदास	२०वीं.श.	३	
	(६१) ,, विरहकी	अज्ञात	,,	१	
	(६२) ,, ,,	कविकाशीराम	,,	२	
	(६३) ,, ,,	मगनजी	,,	२	
	(६४) ,, ,,	रघु	,,	४	
	(६५) ,, ,,	लालदास	,,	२	
	(६६) ,, ,,	नरपति नाल्ह	,,	२	वीसलदेवरासागत
	(६७) ,, भक्तिकी	ज्ञानवतीदेवी माण्डव्य	,,	२	
	(६८) ,, विरहकी	मीरांबाई	,,	१	
	(६९) ,, राधिकाविरहकी	कुशलेश	,,	३	
	(७०) ,, जोगकी	पृथ्वीनाथजी	,,	२	
	(७१) ,, विरहकी	चन्दनदास स्वामी	,,	१	छन्दोविन्मण्डनगत
१३९	आरतीपद (व्रजरसतरङ्ग)	श्रीसुदर्शणदासजी (श्यामा सखी)	१९८९	४७	
१४०	जयसाह-सुजसप्रकाश	देवर्षिभट्ट मंडनकवि	१९९०	२०	लि.क.—भगवानशर्मा चौमूनिवासी धंनालालात्मज
१४१	रावलचरित्र	,, ,,	१९९१	४३ पेज	,, ,, र.का.—१८७६।
१४२	जाट-इतिहाससे जयपुरके राजाओंका हाल		२०वीं.श.	९	लि.क.—गोपीचंद (?)
१४३	रसिकाह्लाद रुक्मिणीमंगल	हरिसेवकविप्र श्रृंगारोप नाम कवि	,,	११०	र.का.—१८४२।
१४४	हमीररासो (हमीरायण)	कवि महेश	१९९६	४८ पेज	लि.क—गोपीचंद शर्मा

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१४५	हमीरायण	खेम (?)	१९८५	१५७ पेज	लि.क.–गोपीचंद शर्मा गौड जयपुर। १७८४ संवत्‌की प्रतिसे लिपीकृत।
१४६	,,	,,	२०वीं.श.	५० ,,	
१४७	(१) रूपमञ्जरी	कवि नन्ददास	१९९६	२१ ,,	लि.क.–गोपीचंद शर्मा। १७९१की प्रतिसे लिपीकृत।
	(२) छप्पै दशों अवतारोंके	तुलसीदास	२०वीं.श.	१	लि.क.–गोपीचंद शर्मा।
१४८	वैदिकवैष्णवसदाचार	हरेकृष्ण मिश्र (जयसिंहीयप्राड्विवाक)	,,	३२	संस्कृतभाषाबद्ध।
१४९	माधवसिंहार्याशतक (माधवविलास)	श्याम लट्टू	,,	२२	संस्कृतभाषाबद्ध, पूना भाण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीटयूटकी १८३४की प्रतिसे लिपीकृत है। र.का.–१८१२ जयपुर।
१५०	रसरहस्य	कुलपति मिश्र	१९७३	४६	लि.क –गणेशब्राह्मण। चतुर्भुज कविकी सं. १९०५ वाली प्रतिसे लिपीकृत।
१५१	हरिध्यानम्	,,	१९७२	१२	लि.क.–श्री हरिनारायणजी पुरोहित।
१५२	नबाव खानखानाकी बरवै	नबाव खानखाना	२०वीं.श.	३	केवल ४४ पद्य ही लिखित हैं।
१५३	स्वामी जगजीवनदासजीकी वाणी	जगजीवनदास	१९८३	६०७ ,,	लि.क.–ज्योतिषी कुंजबिहारी जयपुर।
१५४	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)		२००१	३८५	१६२ कवियोंकी कविताओंका संग्रह। संवत् १८५३की प्रतिसे लिपीकृत।
		१ दादू। २ जगजीवन ३ कबीर। ४ चैन ५ रज्जब		१ला	नोट—इन १६२ कवियोंमें ६ कवियोंके नाम संभवतः दुबारा लिखे गये हैं। अतः यह समझना चाहिये कि १५६ कवियोंकी कविताए तो निश्चयपूर्वक इस ग्रन्थमें संगृहीत हैं। इसका

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	६ जगन्नाथ	२००१	२रा	लिपिकर्त्ता गोपीचन्द शर्मा गौड जयपुर निवासी है। (सं.)
		७ परसराम	,,	३रा	
		८ जैमल। ९ मोहन	,,	४था	
		१० बोजी		,,	
		११ दूजण	,,	५वाँ	
		१२ रामदास	,,	६ठा	
		१३ नानक	,,	८	
		१४ वाजीद	,,	१३वाँ	
		१५ संतोषा	,,	१४वाँ	
		१६ रांका	,,	१५–१६	
		१७ मल्ल। १८ हुसेन	,,	१७वाँ	
		१९ गुपाल। २० माधवदास		,,	
		२१ रैदास। २२ बखना	,,	१९वां	
		२३ राइमल्ल	,,	२०वां	
		२४ नागर। २५ अग्रदास	,,	२१६वां	
		२६ पासा		,,	
		२७ तुलसीदास	,,	२२वेंमें	
		२८ ईसरा	,,	२७ ,,	
		२९ संकर	,,	२९ ,,	
		३० तुरसी	,,	३० ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	३१ सम्मन	२००१	३६वेंमें	
		३२ बुरहान	,,	३७ ,,	
		३३ अहमद	,,	३८ ,,	
		३४ सरफ। ३५ जमाल	,,	४२ ,,	
		३६ बीठला	,,	४३ ,,	
		३७ मदसूदन	,,	४४ ,,	
		३८ हबीब	,,	४५ ,,	
		३९ किसोर	,,	४८ ,,	
		४० पृथु	,,	५१ ,,	
		४१ हरिबंस	,,	६० ,,	
		४२ साहा। ४३ सांई	,,	६१ ,,	
		४४ जानराइ	,,	६७ ,,	
		४५ फतू	,,	६८ ,,	
		४६ सैदनां। ४७ कुत्तब	,,	७३ ,,	
		४८ जसवन्त	,,	७४ ,,	
		४९ मूसन	,,	७९ ,,	
		५० गंभा	,,	८० ,,	
		५१ टोडर	,,	८१ ,,	
		५२ गरीबदास	,,	८८ ,,	
		५३ बिसंन		,,	
		५४ केसव	,,	८९ ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	५५ महंमदि	२००१	९८वेंमें	
		५६ मुकंद	,,	९९ ,,	
		५७ कवितदास	,,	१०७वेंमें	
		५८ लालन		,,	
		५९ नवल। ६० सेऊ	,,	१०८ ,,	
		६१ चिनंग		,,	
		६२ सजणां	,,	११० ,,	
		६३ कासिम	,,	११६ ,,	
		६४ मुंनिंद्र	,,	१२१ ,,	
		६५ हेतम	,,	१२७ ,,	
		६६ ब्यास	,,	१३२ ,,	
		६७ पृथीदास	,,	१३३ ,,	
		६८ कालू। ६९ करमाणंद	,,	१३६ ,,	
		७० पिरांग	,,	१३७ ,,	
		७१ गोप। ७२ पहुकर	,,	१३९ ,,	
		७३ पीवा	,,	१४० ,,	
		७४ बषू। ७५ स्यांम	,,	१४१ ,,	
		७६ जोधा		,,	
		७७ जगतराइ। ७८ शभो		,,	
		७९ अगर। ८० नागरा	,,	१४२ ,,	
		८१ मथुरा	,,	१४४ ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	८२ सूरिया । ८३ गोरष	२००१	१४६वेंमें	
		८४ गनेश । ८५ गोविंद	,,	१४७ ,,	
		८६ चरपट	,,	१५१ ,,	
		८७ तुलसीराम	,,	,,	
		८८ राघव	,,	१५३ ,,	
		८९ देवति । ९० नंद	,,	१५५ ,,	
		९१ तरंग	,,	१५७ ,,	
		९२ सोकडि	,,	१६१ ,,	
		९३ उध	,,	१६२ ,,	
		९४ रमतिया	,,	१६३ ,,	
		९५ लाषा	,,	१६५ ,,	
		९६ बींझरा । ९७ दास	,,	१६६ ,,	
		९८ हेतम			यह नाम दुबारा आया है जो कविसंख्या ६५ पर अंकित है।
		९९ जगन	,,	१६७ ,,	
		१०० भेदा । १०१ सोभा	,,	१६८ ,,	
		१०२ फरीद		,,	
		१०३ कमंच	,,	१७० ,,	
		१०४ ब्रह्मा		,,	
		१०५ रमिता (रमतिया पृष्ठ १७६ वें)	,,	१७४ ,,	रमतिया कवि सं. ९४वें पर भी आया है। (सं)
		१०६ असन	,,	१७६ ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	१०७ निहाल	२००१	१८३वेंमें	
		१०८ भीष		१८४ ,,	
		१०९ मनसुषा	,,	१८४ ,,	
		११० सुंदर	,,	१८५ ,,	
		१११ अमरिया	,,	१९७ ,,	
		११२ भारथिभोजाणी	,,	,,	
		११३ उदन	,,	,,	
		११४ रघू	,,	२०४ ,	
		११५ नरसा जोगी	,,	२०८ ,,	
		११६ गुरमुखा	,,	,,	
		११७ मुनिंद्र	,,	२१२ ,,	यह नाम भी कवि संख्या ६४ पर अंकित है। (सं)
		११८ उवैराज	,,	२१६ ,,	
		११९ रजिया	,,	२१९ ,,	
		१२० बिसंभर	,,	२२५ ,,	
		१२१ तुंगनी	,,	,,	
		१२२ कांमां	,,	२४३ ,,	
		१२३ स्यांमदास	,,	२४४ ,,	हो सकता है कि कवि संख्या ७५ पर अङ्कित कविसे यह भिन्न हो। (सं.)
		१२४ पिरोज	,,	२४५ ,,	
		१२५ डूंगर	,,	२४६ ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	१२६ नाराइंन	२००१	२४६वेंमें	
		१२७ कमाल	,,	२५१ ,,	
		१२८ नाथ	,,	२५७ ,,	
		१२९ श्रीबाल गु:हाई	,,	२५८ ,,	
		१३० अजित	,,	२६३ ,,	
		१३१ मसउद	,,	,,	
		१३२ परमसुख	,,	२६४ ,,	
		१३३ कील्हा	,,	,,	
		१३४ धनी	,,	२६६ ,,	
		१३५ बीजा	,,	२६९ ,,	
		१३६ लाल	,,	२७० ,,	
		१३७ ऊतिया	,,	,,	
		१३८ षोजी	,,	२७१ ,,	यह नाम भी कवि संख्या पर भी अंकित है। (सं.)
		१३९ नरहरि	,,	२७४ ,,	
		१४० भरथरी	,,	२८१ ,,	
		१४१ कल्यांन	,,	,,	
		१४२ पृथीनाथ	,,	२८९ ,,	
		१४३ सूवा	,,	२९० ,,	
		१४४ हिलम	,,	२९४ ,,	
		१४५ स्याम	,,	२९९ ,,	यह नाम भी ७५ एवं १२३वें कविका ही हो सकता है।
		१४६ हरोज	,,	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१५४)	गुनगंजनामा (कवितासंग्रह)	१४७ चंद	२००१	३००वेंमें	
		१४८ कान्हड	,,	३०४ ,,	
		१४९ सांवलियो	,,	,,	
		१५० रसन	,,	३१० ,,	
		१५१ सरवण	,,	३११ ,,	
		१५२ कासी	,,	३३० ,,	
		१५३ रूपराम	,,	३३३ ,,	
		१५४ चेतनि	,,	३४३ ,,	
		१५५ वेंन	,,	३४६ ,,	
		१५६ अवू	,,	३६१ ,,	
		१५७ मियनो	,,	३६५ ,,	
		१५८ संता	,,	३६६ ,,	
		१५९ माढवो	,,	३७१ ,,	
		१६० मामन	,,	३७४ ,,	
		१६१ जटौ	,,	३८० ,,	
		१६२ जमला	,,	३८३ ,,	
१५५	(१) लघुतानामा (लघुनांमों ग्रन्थ)	खेमदास	१९९३	१–४ पेज	लि.क.–गोपीचंद शर्मा
	(२) भगतिबिरदावली	दास (?)	,,	१–३ ,,	,, ,, ,,
१५६	बषनाजीका शब्द व साखी	बषनाजी	१८९९	३५	लि.क.–रामनारण, मंगलदास
१५७	भाषास्वरोदय	गोरक्ष	१९वीं.श.	१	
१५८	बषनाजीका पद व वाणी	बषनाजी	१९८३	७३ ,,	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा । संख्या १५६ वाली प्रतिका ही प्रतिरूप हो ? (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१५९	सीतारामरहस्यचन्द्रिका	मांगीलाल (रूपसरस ?)	१९९२	१३६ पेज	प्रायः पद्योंमें रूपसरसकी ही अधिक आवृत्तियां दृष्टिगोचर होती हैं अतः इसीकी यह कृति हो । मांगीलाल तो इस प्रतिका लिपिकार हो सकता है अथवा रूपसरस उसका उपनाम हो । लि.क.–गोपीचन्द शर्मा । मांगीलाल खंडेलवालकी १९३८ संवत्‌की प्रतिसे लिपीकृत । जयपुरमध्ये । (सं०)
१६०	(१) तत्वमञ्जरी	रामानुजदास	,,	१–७ ,,	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा गौड़, जयपुर ।
	(२) गुरुप्रतापादर्श	,,	,,	१–४ ,,	,, ,,
	(३) बालप्रबोधनी वार्ता	,,	,,	१–८ ,,	,, ,,
	(४) गुरुपरम्परा	,,	,,	१–१४ ,,	,, ,,
	(५) ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	,,	१–६ ,,	,, ,,
१६१	सुन्दरदासजीकी चौतीसी व बावनी	सुन्दरदास स्वामी	२०वीं.श.	५	,, ,,
१६२	ज्ञानबावनी		,,	१४	,, ,,
१६३	हीराबावनी वा कक्कापच्चीसी, पद्य २५	हीरा	,,	१	,, ,,
१६४	कबीरदासजीकी चौतीसी	कबीरदास	,,	३	,, ,,
१६५	,, ,, बावनी	,,	,,	४	,, ,,
१६६	प्रबोधबावनी, पद्य ४७	जिनरंगसूरि	,,	७	,, ,,
१६७	भीषजनकी बावनी	भीषजन	,,	११	,, ,,
१६८	रामजीकी बारहखड़ी, पद्य ३४	गोस्वामी तुलसीदास	,,	३	,, ,,
१६९	सुदामाजीकी बारहखड़ी, पद्य ३६	सुदामा	,,	३	,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१७०	रामचन्द्रजीको कक्को पद्य ३३६	टोडरमल	२२वीं श.	२३	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा ।
१७१	बारहखड़ी ,, ३४	रत्नसार (पं. रामरत्न)	,,	७	,, ,,
१७२	बावनी योगग्रन्थ ,, ४४	हरिदास	,,	३	,, ,,
१७३	विनयदोहावली ,, ३३	प्राणसुखराय कानूनगो	,,	३	,, ,,
१७४	बडी बारहखड़ी	,,	,,	५	,, ,,
१७५	बुल्हेशाहकी सेहर्फी ,, ३१	बुल्हेशाह	,,	५	,, ,, उर्दू बारहखडी
१७६	बालशब्दबोध (रामायण)	फिक्कुरदास	,,	३	,, ,,
१७७	ज्ञानत्रिलोकजीकी बावनी ,, ३४	ज्ञानत्रिलोकीजी	,,	३	,, ,,
१७८	बाराखरी (१) ,, ३४	ललितकिशोरी	,,	३	,, ,,
१७९	,, (२) ,, ३४	,,	,,	३	,, ,,
१८०	अखरावट ,, ३३	मलिकमहम्मद जायसी	,,	४	,, ,,
१८१	बारहखड़ी ,, ४२	सूरतसिंह	,,	८	,, ,,
१८२	बाराखड़ी ,, ३०	सुदामादास	,,	३	,, ,,
१८३	बारहखड़ी(ककक्काबत्तीसी),, ३३	लालदास	,,	७	,, ,,
१८४	कक्काबत्तीसी ,, ३७	सन्तदास	,,	३	,, ,,
१८५	किसनबावनी ,, ६१	कृष्णदास	,,	६	,, ,,
१८६	कृष्णचरित्रकी बारहखड़ी (दशमस्कंधकी) ,, ७०	श्रीनिवास	,,	५	,, ,,
१८७	लावनी रंगतिखडी ककहरा अढंग ,, ५	गणेश कन्हईलाल	,,	२	,, ,, इसमें कई एक अर्थ गुप्त हैं । बुधविलासगत ।
१८८	श्री चन्द्रसखीजीका पद	चन्द्रसखी	,,	२ पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा । रासपदसंग्रहगत ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१८९	विष्णु-सीताराम-सुखथानकर एण्ड हिज कंट्रीव्यूसन टू इन्डोलोजी	एस. एम. कतरे, एम. ए. पी. एच. डी.	२०वीं.श.	६२ पेज	आंग्लभाषामें टंकित ।
१९०	(१) श्रीकुलशेखरवृत्तम्	श्रीप्रपन्नामृत (रामानुज-चरित्र) गत	२००२	११ ,,	लि.क.–गोपीचंद शर्मा । १८३२ संवत्‌की प्रतिसे लिपीकृत ।
	(२) प्रपन्नामृतग्रन्थक्रमसूची			३ ,,	
१९१	(१) नीतिसारनाटक	सुकवि चंद	१९९२	४८ ,,	र.का.–द्वीप गगन योगीश शशि १७०७ (१९-०७ ?) लि.क.–गोपीचन्द शर्मा । १९०७की प्रतिसे लिपिकृत ।
	(२) सभासारनाटक	नागराभट्ट रघुराम (देवलियामध्य कवि नागर-मिसल)	,,	३१ ,,	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा । १९१४की प्रतिसे लिपीकृत ।
	(३) योगवासिष्ठसार भाषापद्यानुवादसहित	गणपति	,,	५० ,,	लि.क.–गोपीचंद शर्मा । १८९६की प्रतिसे लिपीकृत । र.का.–१८२२ । माधवसिंहराज्ये ।
१९२	(१) भाषाभूषण पद्य १६६	महाराजा जशवन्तसिंह (जोधपुरीय)	२०वीं.श.	१–९	
	(२) लुप्तोपमाविलास	कवि हीराचंद कानजी	,,	१०–१२	
	(३) उपमासंग्रह	,, ,,	,,	१३–१५	र.का.–१९२२ ।
१९३	प्रास्ताविक कवित्त आदि			८ पेज + २	दो अतिरिक्त लम्बे पृष्ठोंमें रामलालजी कवि द्वारा कथित कवित्त एवं पूरवदेशकी सखी, बंगालदेशकी सखी, पंजाब, ढूंढारदेश तथा मारवाड़की सखीविषयक कवित्त हैं । (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१९४	शिशुबोध व्याकरण	काशीनाथ	१९६१	११	लि.क.–रामप्रताप शर्मा, मनोहरपुरनिवासी ।
१९५	” ”	”	”	८	
१९६	छन्दरत्नावली	हरिरामदास निरंजनी डीडवाणिया	१८४८	२३	र.का.–१७९५ । स्थान-डीडवांणा । लि.क.–रुघनाथदास निरंजनी माधुपुरमध्ये ।
१९७	वैद्यकोपचारसंग्रह	महाराज गजसिंह	१९१७	६१	र.का.–१६६५ । लि क.–सुखदेव । इस ग्रंथमें स्वर्णादिधातु बनानेकी भी विधि लिखित और पाकादिका विस्तृत वर्णन है । (सं०)
१९८	विष्णुपूजनप्रयोग (संक्षिप्त)		१९वीं.श.	६	
१९९	नवरत्नकाव्यम् (पद्यात्मकभाषानुवाद-सहितम्)		२०वीं श.	१२	इसमें आये हुए एक पद्यके अनुवादक पं. सरयूप्रसाद मिश्र हैं ?
२००	खंडेलवालोंकी उत्पत्ति	श्रीहरिनारायणजी पुरोहित	१९७५	९	लि.क.–श्रीनारायण पुरोहित ।
२०१	जैनी खंडेलवालोंके ९४ गोत्र		१९७२	१०	” ”
२०२	विक्रमादित्यकथा	कवि नरपति	१९७३	५३	लि.क.–श्री गणेश, श्री हरिनारायणजी पुरोहितजी पठनार्थं ।
२०३	हरिसारिणी (कवित्तरामायणसार-माला) १०९ छन्द	पुरोहित हरिनारायणजी संगृहीत		१२+६=१८ पेज	
२०४	गोगा चोहान (गोगा पीर)	अनुवादक– हरिनारायणजी पुरोहित	२०वीं श.	४	दिनाङ्क: ७-२-१९१४ ई. राजपूतगजटसे मुंशी देवीप्रसादजी द्वारा उर्दू में उद्धृत ।
२०५	पण्डितराजजगन्नाथ:			४	पण्डितराजकी जीवनीका विश्लेषणात्मक संस्कृतलेख ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२०६	ऐनसाहब (ऐनानन्द) संबंधी ज्ञातव्य		२०वीं.श.	३	
२०७	नोट ओन दी रीलीजस हिन्दी पोइट्री इन राजस्थान		,,	४	
२०८	(१) मुकुन्दमाला	कुलशेखरनृपति	१९८०	१–५	लि.क.–पुरोहित श्रीनारायण, जयपुर ।
	(२) मुकुन्दमुक्तावली	,, ,, (?)	,,	६–८	,, ,, ,, ,,
	(३) श्रीकृष्णनामनिरूपणम्	महाभारत उद्योगपर्व सप्ततितमाध्यायगत	१९८८	८–९	लि.क.–गोपीचन्द शर्मा ,,
	(४) भगवच्छरणागतिः	महाभारत एकसप्ततितमाध्यायगत	,,	९वां	,, ,, ,,
	(५) भीष्मगीतम्	भागवत प्रथमस्कंधनवमाध्यायगत	,,	१०वां	,, ,, ,,
	(६) शुकोक्तस्तोत्र	भागवत द्वि. स्क. चतुर्थाध्यायगत	,,	११वां	,, ,, ,,
२०९	रागमञ्जरी एवं तत्सम्बन्धी पत्र-व्यवहार	पुण्डरीक विट्ठल (कर्णाटक जातीय)	२०वीं.श.	३९+५=४४	अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेरकी प्रतिसे लिपीकृत।
२१०	ईश्वरविलासकाव्य	कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट	,,	१३९	भाण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीटच्यूट पूनाकी प्रतिसे लिपीकृत ।
२११	अन्यत्पंचाशिका भाषा		१७८२	१५	प्रति जीर्ण-शीर्ण एवं मध्यत्रुटित है तथा पत्र चिपके हुए हैं ।
२१२	मानमंजरीनाममाला	कवि नन्ददास	१९५९	२५	लि.क.–शिववकस मिश्र मंडनपुरनिवासी (मंडावामध्ये)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२१३	(१) प्रतापपचीसी		१९१८	१–१४	लि.क.–भंडारी रामदास ।
	(२) कृपदीप		"	१५–२६	र.का.–१७७८ । लि.क.–रामदास ।
	(३) गुरुचेलांरा समादरा दुहा		"	२६–२८	लि.क.–रामदास ।
२१४	सदयवच्छ-सावलङ्गाकी वारता	सुरसैण कवि	१९५९	५७	जयपुरकी नोलीमें; लि.क.–साध भगवानदास निरंजनी मंडावामध्ये ।
२१५	हरिरस	ईश्वरदास बारहट	१९६७	१२	इस पुस्तकके पीछेके पृष्ठोंमें बापजी श्री अलूजीका कह्या कवित्त ८ हैं । प्रति जीर्ण एवं वर्षाभिविक्त है । (सं०)
२१६	वैद्यकसारसंजीवनग्रन्थ	सुन्दरविप्र	१९६३	६	लि क.–दामोदर शर्मा साहित्योपाध्याय बिराट् मध्ये ।
२१७	आरतीसंग्रह		१९०७	३१	इसके आदिके १५ पृष्ठोंमेंसे उसमनकी कथा, हरीदासजीकी बारषडी, कानजीकी बारामासी, लिखित हैं । लि.क.–रामदेव । आरती संग्रहका लिपिकाल १९१४ है । (सं०)
२१८	(१) सरस्वतीस्तोत्र			१ला	
	(२) नीसाणी जयस्यंघ सवाया			२–३	
	(३) स्फुट औषधि एवं ज्योतिष			४–२३	
	(४) वंशावली कछवाहाकी			२४–५०	
२१९	लीलावतीके हिसाबी प्रश्न तथा इश्तिहारोंकी नकल ।			९४	इस पुस्तकमें सभी स्फुट पत्र हैं ।
२२०	गुनचंपावतीविलास	आगिया कवि पूरन	१८०२	७१+२=७३	र.का. सं. १८०२ । अन्तिम दो पृष्ठों में चम्पावती-अष्टक अपूर्ण लिखित है । प्रतिका द्वितीयपत्र अप्राप्त है । (सं०)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२२१	सभासारनाटक	कवि रघुरामभट्ट (कवि नागर मीसल नागरा)	१८९२	४२	लि.क.—लीछमणराम कायस्थ ।
२२२	तसबीर वारैठ रामनाथजी रतनूकी तथा कुबेरदानजीका पत्र १		२०वीं.श.	१+१=२	
२२३	श्रीकृष्णविलास	कवि गुपालदान	१९०६	५३	महाराजाधिराज भूप किसनेशकी आज्ञासे रचित। लि.क.—गणेश जोशी आभावासनिवासी । लि.स्था.—नृसिंहपुरा ।
२२४	निम्बार्कमंगलाष्टक आदि (भर्तृशतक ?)		१९वीं.श.	२	इसमें रामानुजकृत पंचकस्तोत्र, शङ्कराचार्यकृत सिद्धान्तबिन्दु एवं दो अन्य कृतियां लिखित हैं।
२२५	(१) ध्यानलीला	कुलपति मिश्र	,,	१–३	
	(२) पञ्चाध्याय	नन्ददास ?	,,	३–१४	
	(३) वनलीला	माधोदास	,,	१४–१६	
	(४) जुगति तरंगिणी सतसई	कुलपति मिश्र	,,	१६–५२	रचना—१७४३; अपूर्ण ।
	(५) स्फुट कवित्त (परमारथ)	बनारसी आदि कवि	,,	५३–५६	
	(६) ,, कवित्त-दोहा	आलम, गंग आदि	,,	५६–६७	
	(७) दोहा दर्पण	दूनाराइ (?)	,,	६८–७०	
२२६	सामुद्रकग्रन्थ-भाषापद्यानुवाद	शिवसिंह (राज) शेखावत	१९८५	२७ पेज	र.का.—१८७५ । लि.क.—गोपीचंद शर्मा जयपुर ।
२२७	कवित्तसंग्रह, छंद १६२		१९९३	२६ ,,	महताबचंद खारैड़ जयपुरकी प्रतिसे लिपीकृत । लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२२७)	(१) ढूंगरके कवित्त, छन्द ११	ढूंगर	१९९३	पेज १—२	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा जयपुर ।
	(२) छत्रपतिके कवित्त, छंद १	छत्रपति	,,	२ रा पेज	,, ,,
	(३) ब्रह्मकवि (वीरबल)के कवित्त, छंद २	ब्रह्मकवि (वीरबल)	,,	२—३ पेज	,, ,,
	(४) जगदीश कविके कवित्त छं. १	जगदीश	,,	३—रा पेज	,, ,,
	(५) गंगकविके कवित्त ,, १	गंग	,,	३ ,,	,, ,,
	(६) प्रसिद्धकविके कवित्त ,, ४	प्रसिद्ध	,,	३	,, ,,
	(७) आलमशेख कवित्त ,, १०	आलमशेख	,,	५—६ठा	,, ,,
	(८) सेनापतिके कवित्त ,, १३२	सेनापति	,,	७—१९ पेज	,, ,,
२२८	फुटकर कवित्त	रसखान, कासीराम, चिंतामनि आदि	२०वीं.श.	२	,,
२२९	प्रतापप्रीतिमंजरी (अपूर्ण)	भारती (महाराजा प्रतापसिंह)	१९९५	३९ ,,	,, ,,
२३०	विहारीसतसईकी अमरचंद्रिकाटीका	सूरतमिश्र	१९८५		र.का,—१७९४ । अपूर्ण । लि.क.—अयोध्याप्रसाद ।
२३१	डिंगल गीत—		१९२५ ई.	१३	लि.क.—क्षेत्रमल्ल ।
	(१) राव हणूंतसिहजीका छन्द २		,,	१	गीतोंकी विगत श्रीपुरोहितजीकी सूचीमें नहीं है । (सं०)
	(२) नीसाणी महाराज प्रतापसिंहजीकी	विडिया हुकमचंद	,,	१—५	
	(३) रावत महाराजकुमार रायचंद मनोहरदासोतरी निसाणी	बारहट भूधरदास	,,	५—९	
	(४) गीत ६		५ सितम्बर १९२५	९—१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२३२	गुणभमाल रावजी श्रीइन्द्रसिंहजीरी	सांदू सबलसिंह	२०वीं श.	१४	
२३३	(१) सत्योपदेश	उमेदराम वारहट	,,	१–२	
	(२) राजनीति	,, ,,	,,	२–५	
	(३) भाषाचाणक्य	,, ,,	,,	५–१५	रचना—१८७२ ।
	(४) वाणीभूषण	,, ,,	,,	१५–२४	,, १८६१ ।
	(५) मरसियाकवित्त	,, ,,	,,	२५–२७	अलवरके राजा बखतावरसिंहजी एवं उनके साथ सती हुई रानियोंकी ।
२३४	(१) डिंगल-गीतसंग्रह	बांकीदासजी आदि अनेक	१९२७ई.	१०	बहुतसे राजा-महाराजाओंके विषयमें रचित । लि.क.—छीतरमल पुरोहित सावरवाला ।
	(२) दुहा जेहल-जसजडावरा	आसीया ,, ,,	,,	१–७	,, ,, ,, ,,
	(३) स्फुट कवित्त-दूहा एवं नीसाणी राधीरा सिरदार जीवराजजी	आसीया बुधा	,,	७–१०	
२३५	(१) मयाराम दरजीरी बात	,, ,,	२०वीं श.	१–९	इस पुस्तकमें बस्ता १२७(३)पर अङ्कित बातका शेष भाग लिखित है ।
	(२) स्फुट गीत ४		,,	९–१०	
	(३) नीसाणीयां वीरमायणरी		,,	१०–१८	दसकत बुधारा छै । गांव वागू मांये लषी छै ।
२३६	वृन्दावनशतक	बारहट शिवबक्स (दत्त)	,,	८ पेज	अपूर्ण । हणूंत्यालिवासी बारहट मुरारीदानजी पालावतकी प्रतिसे लिपीकृत ।
२३७	डिंगलपुस्तक	अनेक कवि	,,	११२+१२= १२४ पेज	जोधपुरके कविराजा सिहरदानजीकी पुस्तक नम्बर २ (२)की प्रतिलिपि । १२ पेज सूची-पत्रके हैं ।
२३८	(१) प्रेमरत्नाकर	भया रतनपालजू	१९८४	२० पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा जयपुर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२३८)	(२) नांवसार	राठोड फतेस्यंघ महेसदासोत	१६८४	२० पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा जयपुर। यह वस्तु-परिचायक उपादेय भाषा ग्रन्थ है। (सं.)
२३६	रूपदीप पिंगल	कवि जयकृष्ण कृपाराम	१६८६	१० ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२४०	शिवप्रकाशग्रन्थ (वैद्यक)	हररूपदास प्रोहित (सिवड)	१६८६	१०७ ,,	रचना—१८७५शिवगढ़में शेखावत शिवराजाज्ञासे निर्मित। हररूपदासकी प्रतिसे लिपीकृत। लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२४१	रामाश्वमेध	शिवराज भूप शेखावत	१९वीं श.	५१ ,,	
२४२	(१) महाराज शिवसिंहजी राठोररा कवित्त	सुरताणियां साहिबदान	१६८५	१—३३ ,,	,, ,, ,,
	(२) स्फुट कवित्तादि ३००	अनेक कवि	,,	१—२३ ,,	
२४३	शिवनारायणका कवित्त (शिवजीकी स्तुतिविषयक छंद	तुलसीदास आदि	१६८२	१५	लि.क.—पुरोहित क्षेत्रमल्ल (छीतरमल)
२४४	राजवल्लभ (वास्तु-शिल्पग्रन्थ) मूल	मण्डन सूत्रधार	१६८४	६६ ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२४५	(१) माताजीकी दिवायण	बारहट ईशरदासजी	२०वीं श.	१—५	
	(२) हालां झालांका कुण्डलिया	,,	,,	६—८	
२४६	निन्दा-स्तुतिग्रन्थ	,,	,,	१२	
२४७	ईसरदासजी बारहटका जीवन-चरित्र एवं तत्सम्बन्धी ज्ञातव्य पत्र		,,	१०+५=१५	
२४८	(१) वृत्तमुक्तावली (प्रथमगुम्फः)	कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट	,,	१६	भाण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
	(२) ,, (द्वितीयगुम्फः)	,, ,,	,,	५०	पूनाकी प्रतिसे लिपीकृत।
२४९	अन्योक्तिवर्णन (अपूर्ण)	महाकवि गणपतिभारती	१६६५	७ पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२५०	नौशेरवां बादशाहके पहननेके दस ताज		२०वीं श.	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२५१	माधवानल-कामकंदला एवं तत्सम्बन्धी ज्ञातव्य पत्र	आलम कवि ?	१९९२	११२+६ पेज	यह प्रति दो प्रति द्वारा सम्पादित है।
२५२	माधवानल-कामकंदला	,,	२०वीं.श.	४८	
२५३	अकबर-बीरबलबारता		१९९४	३४	लि.क. पं. नाथूराम पुजारी, जयपुर।
२५४	सर्वानुक्रमणिकायां ऋग्वेदीयानुवाकानुक्रमणी	कात्यायन	२०वीं.श.	१२ ,,	
२५५	चतुरसिरोमनिजीके पद	चतुर सिरोमनि (?)	१९८८	८ ,,	लि.क. गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२५६	(१) मोहमर्दन	कविराजा बांकीदासजी	१९९१	१–२ ,,	
	(२) गंगालहरी	,, ,,	,,	२–४ ,,	
	(३) मावडियामिजाज	,, ,,	,,	४–७ ,,	
	(४) वैसक (वेश्या) वार्ता	,, ,,	,,	८–१० ,,	
	(५) चुगलमुखचपेटका	,, ,,	,,	१०–१२ ,,	
	(६) कुकविबत्तीसी	,, ,,	,,	१२–१४ ,,	
	(७) कृपणदर्पण	,, ,,	,,	१४–१५ ,,	
	(८) कायरबावनी	,, ,,	,,	१६–१८ ,,	
	(९) बैसवार्त्ता	,, ,,	,,	१८–२१ ,,	
	(१०) विदुरबत्तीसी	,, ,,	,,	२१–२२ ,,	
	(११) श्रीराधेजीके शिखनख-वरणनकी झमाल	,, ,,	,,	२३–२६ ,,	
२५७	विजयविवाह ४५९ पद्य	बारहट मुरारीदास	२०वीं.श.	१७	
२५८	एकाक्षरनिघण्टुकोष ५३ श्लोक हैं।	वररुचि	,,	४ ,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२५९	चित्रामनी	सेख फरीद	२०वीं.श.	२	
२६०	,,	नारायणदास	,,		
२६१	नवरत्नकाव्य (भाषापद्यानुवाद एवं भाषासहित)		,,	७	स्वर्गीय पुरोहित श्रीहरिनारायणजी द्वारा संगृहीत एवं सुसम्पादित प्रति है। (सं.)
२६२	मंत्रगणना		,,	३	अजमेरके वैदिकयंत्रालय द्वारा मुद्रित ऋग्वेद-संहिताके मंत्रोंकी गणना।
२६३	(१) कृपणपचीसी	कविराजा बांकीदास	,,	१	
	(२) ,, ,,	,, ,,	,,	२	
२६४	कवित्तसंग्रह		,,	५६	कवि प्यारेलालजीकी जीर्ण प्रतिसे लिपीकृत।
२६५	शिवशतक (अपूर्ण)		,,	४ पेज	हर्षनाथ (सीकर) शिव भगवान्‌की स्तुति एवं प्रशस्तिपरक है। (सं.)
२६६	(१) पद्मनाथ-देवालयप्रशस्तिशतकम्	मणिकण्ठकवि (गोविन्द-कविसूनु, कवीन्द्ररामपौत्र	१९९४	७ ,,	रचना–११५०। पद्मनाथ देवालयमें देवस्वामि-पुत्र पद्मशिल्पी सिंहवाज एवं माहुल शिल्पी द्वारा शिलामें उत्कीर्ण। लि.क. गोपीचन्द शर्मा जयपुर। कुल ११२ श्लोक हैं। (सं.)
	(२) ,, ,, ,,	,, ,,	२०वीं.श.	१२ ,,	
२६७	शिलालेख-प्रतिलिपिसंग्रह		,,	१४	इनकी विगत पुरोहितजीकी सूचीमें नहीं है।(सं.)
	(१) हनुमतबाडीके उत्तर दरवाजे के पूरवके कोण पर लगा शिलालेख एवं तोरमाणका शिलालेख		,,	१	संवत् १८०३में उत्कीर्ण। १३ श्लोकात्मक लेख उत्कीर्ण है।
	(२) चाटसूका शिलालेख	भानु (बालादित्य)	,,	३ ,,	३८½ श्लोकात्मक प्रशस्ति सूत्रधार रजुकसुत भाइ (र)ल द्वारा उत्कीर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२६७)	(३) ग्वालियरदुर्गके चट्टान पर खुदे हुए मंदिरमें स्थित शिलालेख		२०वीं.श.	२ पेज	
	(४) ग्वालियरदुर्गके शिवमन्दिरमें लगी हुई प्रशस्ति		,,	२ ,,	११६१में रचित एवं उत्कीर्ण।
	(५) १– आमेरके सूर्यमन्दिरकी प्रशस्ति		,,	१ ,,	१०११में उत्कीर्ण।
	२– सुहनीयके जैनमंदिरमें प्रतिमाके पदस्थल पर खुदा हुआ शिलालेख		,,		१०१३ ,, ,,
	३– कछवाहा राजा वज्रदामाका शिलालेख		,,		१०३४में सुहनीयके जैनमंदिरकी प्रतिमाके पदस्थल पर उत्कीर्ण।
	(६) १– जयपुर म्यूजियममें सुरक्षित आमेरके राजा मानसिंह कछवाहाका शिलालेख		,,	१ला ,,	१६६६में उत्कीर्ण।
	२– आमेरकें कछवाहा राजा मानसिंह की प्रशस्ति		,,	१–२ ,,	यह प्रशस्ति वृन्दावनमें निर्मित गोविन्ददेवजीके मन्दिरमें उल्लिखित है।
	(७) १– कछवाहा राजा मानसिंहका हिन्दीभाषाबद्ध शिलालेख		,,	१ला ,,	वृन्दावनस्थित श्रीगोविन्ददेवजीके मन्दिरकी बाईं ओर वृन्दादेवीके मन्दिरकी परिक्रमामें उत्कीर्ण।
	२– श्रीमानसिंह राजाका शिलालेख		,,	,, ,,	१६५४ सं.का। यह शिलालेख रोहत्तास गढ़के भीतरी द्वार पर उत्कीर्ण है।
	३– राजा जगन्नाथ कछवाहेकी प्रशस्ति		,,	२रा ,,	सं. १६७०। यह प्रशस्ति मेवाड़के कस्बे मांडलमें बत्तीस खंभों की छत्रीमें उत्कीर्ण है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२६७)	४– पुष्करस्थित ब्रह्माजीके मन्दिरकी मरम्मतका शिलालेख		२०वीं.श.	२रा पेज	१७७६ सं. । आंबेरके प्रोहित गीरधारदासजीकी बेटी जोसी श्यंभूरामकी माता बाई फुंदी द्वारा कराई गई मरम्मतविषयक ।
	(८) कोटाराज्यान्तर्गत कुंवालजी नामक तीर्थके कुंड पर लगा हुआ रणथंभोरके चौहान राजा हम्मीरका शिलालेख	वैजादित्य	,,	४ ,,	सं० १३४५में सूत्रधार त्रिविक्रमसुत राजुक द्वारा उत्कीर्ण । श्लोक सं. ३९ ।
	(९) नरवरके कच्छपघातवंशकी प्रशस्ति		,,	२ ,,	सं० ११७७में बवाड़ी ग्रामदानके विषयमें वीरसिंहदेव द्वारा समाज्ञापित । ठाकुर अर्जुनसुत पण्डित सलखक द्वारा लिखित ।
	(१०) दूबकूंडके कच्छपघातवंशकी प्रशस्ति	उदयराज	,,	४ ,,	सं० ११४५में तील्हण द्वारा उत्कीर्ण ।
	(११) जयपुरराज्यान्तर्गत जमवाय-रामगढ़में जमवाय माताके मन्दिरकी तहकीकात-भोम्याजीकी मूर्त्तिका विवरण		,,	१ ,,	
२६८	(१) श्रीमद्भागवत-प्रथमस्कंध-भाषा-पद्य (प्रथमाध्याय)	व्रजवासी	१९८८	४ ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर ।
	(२) श्रीमद्भागवत-द्वादशस्कंध-भाषा-पद्य (त्रयोदशाध्याय)	,,	,,	,, ,,	,, ,, ,, ,, रचना–१८१२ (?)
२६९	डिंगल-कवितासंग्रह	अज्ञातकर्तृक	२०वीं.श.	१८ ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर (?)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२७०	विवेक-वारतानीसाणीगुण	गाडण केसवदास	२०वीं.श.	१० पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर (?)
२७१	कवितासंग्रह	आढा पहाडखांन	,,	५ ,,	,, ,, ,, ,,
२७२	,, ,,	वीठू मेहाजी	,,	४ ,,	,, ,, ,, ,,
२७३	,, ,,	(१) कविया करनीदास (२) मोतीसर पिरभूदान (३) वारहट ईसरदास (४) गाडण गोपीनाथ (५) आसीया जोधा (६) वरहट जोधराज (७) रंभ (८) आसीया मालाजी (९) जालमां (१०) साधू उमेदजी (११) मोहन (१२) आसीया दला (१३) बद्रीदास (१४) सूर (१५) वीठू (१६) साधू संगरामजी (१७) आसीया पीरजी।		७ ,,	,, ,, ,, ,,
२७४	कवितासंग्रह	पडिया हुकमीचन्द	,,	२ ,,	,, ,, ,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२७५	कवितासंग्रह	आसीया बुधा	२०वीं.श.	२६ पेज	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर (?) इस संग्रहमें जोधपुरके राव सरदारोंके गीतोंके अतिरिक्त दो कृतियां लिखित हैं। इनमें १ तो 'द्वावैत' महाराजा मानसिंह, जोधपुरकी है जिसमें तत्कालीन महामन्दिर, जोधपुरका इतिहास वर्णित है। दूसरी कृति 'सूर-दातारो समवादो' नामक है। इसमें सूर और दाताके प्रश्नोत्तर हैं। (सं.)
२७६	पिंगलग्रन्थ	दामोदर (?)	१९८९	१६ ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर। जयपुर-निवासी चौबे सूर्यनारायणजीकी प्रतिसे लिपीकृत।
२७७	बांकीदास-ग्रन्थावली सटीक	मू. बांकीदास टी. कविया मुरारिदान	२०वीं.श.	३३ ,,	श्रीपुरोहितजी द्वारा सुसम्पादित प्रति। (सं.)
	(१) जेहल जसजडाव		,,	१–६	
	(२) भुरजालभूषण		,,	७–११	
	(३) मोहमर्दनदर्पण		,,	१–२	
	(४) गङ्गालहरी		,,	२–४	
	(५) मावडियामिजाज		,,	४–७	
	(६) वेस्यावार्ता		,,	७–९	
	(७) चुगलमुषचपेटका		,,	९–११	
	(८) कुकविबत्तीसी		,,	११–१२	
	(९) कृपणदर्पण		,,	१२–१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२७७)	(१०) कायरबांवनी		२०वीं.श.	१४–१६	
	(११) वैस्यवार्ता		,,	१६–१९	
	(१२) विदुरबत्तीसी		,,	१९–२०	
	(१३) गीतरसझमाल श्रीराधिकाजीको सिघ-नषवरननको		,,	२०–२२	
२७८	वांकीदासग्रन्थावलीके दूसरे भागकी भूमिका		,,	४ पृ०	
२७९	वांकीदास ग्रन्थावलीसे सम्बद्ध सामग्री एवं पत्रव्यवहारादि		,,	५६ ,,	
२८०	जयपुरका इतिहास	मुंश देवीप्रसाद मुन्सिफ द्वारा संगृहीत	१९०४	६१ पेज	दिल्लीमें मुद्रित प्रतिकी प्रतिलिपि।
२८१	महाराजा मानसिंह कछवाहा		१९९१	१२ ,,	लि.क.—गोपीचन्द शर्मा, जयपुर।
२८२	महाराणा प्रतापसिंह		२०वीं.श.	५७ ,,	,, ,, ,,
२८३	बीसलजीके मन्दिरमें शिलालेख		,,	३ पृ०	संवत् १२३१।
२८४	जयपुरसम्बन्धी ख्यातरी फुटकर वातां	कविराजा वांकीदासजी द्वारा संगृहीत	,,	५ पेज	
२८५	मानसिंहजीके राजलोकका व्योरा		,,	५ पृ०	
२८६	फर्जंदे दौलत महाराजा श्रीमिर्जा राजा मानसिंहजी प्रथम	श्रीहरिनारायणजी पुरोहित, बी. ए.	,,	७१ ,,	
२८७	ऐतिहासिक पत्र		,,	१६ ,,	
२८८	जयपुरके राजाओंका वंशवृक्ष	बालाबकसजी हणूंत्या	,,		मुद्रित प्रतिसे ९-११-३० ईस्वी प्रतिरूपित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२८९	महाराजा श्रीसवाई रामसिंहजी द्वितीय-का इतिहास		२०वीं.श.	२ पृ०	
२९०	मनोहरचरित्र (छठा अध्याय) तथा हनुमानशर्माका १ पत्र	पं. हनुमानशर्मा द्वारा संगृहीत	,,	३०+१= ३१ पेज	चोमूंके ठाकुर मनोहरसिंहजीका ऐतिहासिक वृत्त।
२९१	(१) राजपूतानेके कुछ ज्ञातव्य वृत्तान्त		,,	१—४ ,,	
	(२) रजवाड़ोंके झंडे और राजचिह्न	मुंशी देवीप्रसादजी द्वारा संगृहीत	,,	१—४ ,,	
२९२	(१) भैरूं कवि और उसकी कविता	सूर्यकरण पारीक	,,	१—६	
	(२) आश्चर्यकूप	पुरोहित हरिनारायणजी	,,	७वां	
२९३	राजस्थानी कविताएँ एवं लेख	रामनिवास हारीत आदि	,,	६	
	(१) सहेलीनें कागद	,,	,,	१ला	
	(२) किणका	ठाकुर रामसिंह तंवर	,	२रा	
	(३) दूहा	बदरीप्रसाद आचार्य	,,	३रा	
	(४) ,,	चन्द्रसिंह (बादलीवाला ?)	,,	४था	
	(५) ,,	मुरलीधर व्यास(लालानी)	,,	४था	
	(६) फूलड़ांरो हार	मनोहर शर्मा	,,	५वां	
	(७) नागर पान	जयशंकर (विद्याधर-शास्त्री ?)	,,	६ठा	
२९४	भारथचरित्र	देवर्षि भट्ट मंडन कवि	१९९०	३४	लि.क.—धन्नालालात्मज भगवानशर्मा चौमू-निवासी। र.का०—१८७६।
२९५	राठोडचरित्र	,, ,, ,,	,,	४६	लि.क.—धन्नालालात्मज भगवान्शर्मा चौम-निवासी। र.का.—१८७६।
२९६	राजपूतानेकी रियासतोंका ब्योरा		,,	८६ पेज	लि.क.—पुरोहित श्रीनारायण पंवालियावाला।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२९७	महाराजा मानसिंह प्रथमका चित्र (फोटो)		२०वीं.श.	१	
२९८	हिन्दी, उर्दू व इंगलिशके मुद्रित व लिखित ऐतिहासिक पत्र		,,		
२९९	मानविजय (पंचरंग) नाटक	हनूमान्‌शर्मा चौमू निवासी	१९८३		मुद्रित प्रति, श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस, मुंबई ।
३००	वीरनारायण (ऐतिहासिक उपन्यास)	हरिचरणसिंह चौहान	१९९५		,, ,, मथुराभूषण प्रेस ।
३०१	नाथवंशप्रशस्तिः	आशुकवि श्रीहरि शास्त्री	१९९३		,, ,, जयपुर प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर ।
३०२	हिन्दी, उर्दू एवं इंग्लिशके ऐतिहासिक फुटकर कागज				
३०३	जयपुर रियासतके मुख्य-मुख्य ठिकानेदारोंके जमींदारी तथा विशेषाधिकारोंकी रिपोर्टके उत्तरका हिन्दी-अनुवाद	मि. जैक्शन, बार.-एट. ला.	२०वीं.श.		मुद्रित । रिपोर्ट देने वाले मि. विल्स, सी. आ.ई. ई. ।
३२४	आमेरके महाराजा सवाई जयसिंहके ग्रन्थ और वेधशालाएं	पं. केदारनाथशर्मा राज-पण्डित	,,		मुद्रित । नागरीप्रचारिणी पत्रिका, भाग ५ सं० २ से उद्धृत ।
३०५	,, ,,	,,	,,		,, ,, ,,
३०६	कोटड़ियोंका वर्णन व हवाला		,,	७	
३०७	सरनालका युद्ध		,,	५	
३०८	अहमदाबादका महान् युद्ध			९	
३०९	(१) हिन्दी, उर्दू एवं इंगलिशके ऐतिहासिक फुटकर पत्र				

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३०९)	(१५) लंवाणका हाल		२०वीं.श.	२ पेज	जुबानी वासुदेवसहायजी शुक्ल वकील, लंवाण।
३१०	गुटका—				
	(१) सौन्दर्यलहरीस्तोत्र	श्रीशङ्कराचार्य	१८३६	१—२८	लि.क.—सेवाराम कासीराम जोसी। लि.स्था.—षी(की) लचीपुर।
	(२) श्रीभैरवाष्टक (विश्वरूप) स्तोत्र		,,	२९—३१	,,
	(३) विविध गायत्री (चतुर्विंशति-गायत्री)		,,	३१—३५	,,
	(४) हिंगुलाजमातृस्तोत्र		,,	३६—३७	,,
	(५) लक्ष्मीगणपतिस्तोत्र (गणेश-मालास्तोत्र)	,,	,,	१—४	
	(६) लक्ष्मीनृसिंहमंत्रकवच	नृसिंहपुराणे ब्रह्मसावत्री-संवादगत	,,	४—६	,,
	(७) पंचमुखीहनुमत्कवच	सुदर्शनसंहितोक्त	,,	७—१०	,,
	(८) ब्रह्मकवच (चंडीकवच)	हरिहरब्रह्मप्रोक्त (मार्कण्डेयपुराणगत)	,,	११—१८	,,
	(९) आपदुद्धारवटुकभैरवस्तोत्र	रुद्रयामलगत	,,	१८—३१	,,
	(१०) विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र	महाभारते शान्तिपर्वगत	,,	३१—५३	,,
	(११) भगवद्गीता	व्यासप्रोक्त	,,	५४—१५४	,,
	(१२) आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तर पुराणगत	,,	१५५—१८३	,,
	(१३) शिवमहिम्नस्तोत्र	पुष्पदन्ताचार्य	,,	१८४—१९५	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३१०)	(१४) गजेन्द्रमोक्षणस्तोत्र	शौनकप्रोक्त	१८३६	१९५–२१५	लि.क.–सेवाराम कासीराम जोसी, किलचीपुर
	(१५) भीष्मस्तवराज	महाभारत-शान्तिपर्वगत	,,	२१६–२३३	,,
	(१६) श्रीरामन्द्रस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	,,	२३४–२४९	,,
	(१७) त्रैलोक्यमोहनरामकवच	ब्रह्मयामलगत	,,	२४९–२५४	,,
	(१८) विष्णु (शिव) महिम्नस्तोत्र	(विष्णुप्रोक्त ?)	,,	२५५–२६७	,,
	(१९) इन्द्राक्षीस्तोत्र	स्कंदपुराणे इन्द्रप्रोक्त	१८३७	२६७–२७१	,,
	(२०) ज्वालामालिनीमालामंत्र		,,	२७२–२७६	,,
	(२१) सूर्यकवच	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	१८७१	२७७–२७९	,,
३११	गुटका—		१९५१		
	(१) रघुनाथपंचरत्नम् (प्रातः-स्मरामि पञ्चकस्तोत्र)		,,	१–३	लि.क.–दुर्गासहाय, नोमका थाणा।
	(२) हनुमत्पंचरत्नस्तोत्र		,,	३–४	,,
	(३) रामचन्द्रस्तवराज	सनत्कुमारसंहितागत	,,	१–२२	,,
	(४) गोपालसहस्रनामस्तोत्र	सम्मोहनतंत्रगत	,,	१–४४	,,
	(५) रामरक्षास्तोत्र	रामानन्द	,,	१–८	,,
३१२	सन्तानगोपालसहस्रनामस्तोत्र	सम्मोहनतंत्रगत	१९१७	२४	
३१३	गङ्गाष्टकस्तोत्र	शङ्कराचार्य	१९वीं.श.	१२	
३१४	पद्मावतीस्तोत्र		१९१९	२	लि.क.–जोपट दाधीच गिरिधारी साकंभरपुर (सांभर)
३१५	सिद्धिलक्ष्मीस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणगत	१९२१	४	लि.क.–ब्राह्मणभास्कर।
३१६	विष्णोर्दिव्यसहस्रनामार्चनम्		१९१७	१६	लि.क.–रामानुजदास।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
३१७	(१) आसुरीप्रयोगः		१९वीं श.	१–३	
	(२) धनदायक्षिणीकवचम्	रुद्रयामलगत	,,	३–रा	
३१८	रामरक्षास्तोत्र	रामानन्द	,,	५	
३१९	लक्ष्म्युपाख्यानस्तोत्र	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	१९४३	३	सुलिखित । लि.क.–विद्यार्थी हरिनारायण ।
३२०	श्रीदुर्गास्तोत्रम्	नारायणप्रोक्त	,,	४	,, ,,
३२१	संकटभंग (हरि) कवच	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	,,	४	लि.क.–हरिनारायण ।
३२२	राधास्तोत्र	,,	,,	५	,, ,,
३२३	गोलोकमहिम्नस्तोत्रम्		,,	३	,, ,,
३२४	(१) नारायणहृदयस्तोत्र	अथर्वोत्तरखंडगत	१९वीं श.	१–६	
	(२) लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	,,	,,	६–२५	
३२५	गायत्रीवर्णजपस्तोत्र	विश्वामित्रसंहितायां वेद-व्यासप्रोक्त	,,	८	
३२६	मृत्युलांगूलमंत्र	अथर्ववेदोपनिषद्गत	,,	२	
३२७	सर्वमन्त्रोत्कीलनस्तोत्र	शिवरहस्य-मत्स्येन्द्र-संहितागत	१८९०	२	लि.क.–घासीराम प्रोहित डागी ।
३२८	श्रीसतीस्तोत्रम् (प्रातः स्मरामिस्तोत्रादि पुण्यश्लोकाः)		१९वीं श.	१	
३२९	श्रीवेङ्कटेशस्तोत्रम्		,,	२	लि.क. मोतीराम ।
३३०	यमुनाष्टकस्तोत्र	श्रीवल्लभाचार्य	,,	५	,, ,,
३३१	पुरुषसूक्तम्		,,	५	,, ,,
३३२	,,		,,	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
३३३	शुकदेवकृता स्तुति	भागवतद्वितीयस्कंधगत	१९वीं श.	३	
३३४	नवरत्नस्तोत्र	श्रीवल्लभाचार्य	,,	६	
३३५	मूलरामायणम् (प्रथमसर्ग)	वाल्मीकि	१९२४	२०	लि.क.—रामकुमार, जयपुर।
३३६	,, ,,	,,	,,	२४	,, ,, ,,
३३७	हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणगत	१९वीं.श.	२	
३३८	हनुमदष्टकस्तोत्र (हिन्दी)		१९३३		
३३९	नारायणकवच	भागवतषष्ठस्कंधगत	१९वीं.श.	७	
३४०	चाक्षुषोपनिषत्स्तोत्रम्		,,	१	
३४१	प्रपन्नपरित्राणम्	श्रीलोकाचार्य	,,	१	
३४२	मृत्युञ्जयस्तोत्र	नृसिंहपुराणगत	,,	१	
३४३	शिवरामस्तोत्र	रामानन्दसरस्वती	,,	२	
३४४	कालिकात्रैलोक्यमोहनकवच	रुद्रयामलगत	,,	३	ये तीनों पत्र स्फुट एवं विभिन्न कृतियोंके हैं।(सं)
३४५	सप्तश्लोकी गीता		,,	२	
३४६	श्रीरामस्तोत्रम्		१८५१	३	पद्यान्तिमचरण-'श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि'
३४७	श्रीनृसिंहस्तोत्र	वेदान्ताचार्य (कवितार्किक)			लि.क. लछमण, बंभोरमध्ये।
३४८	अच्युताष्टकम्		१९वीं.श.	२	
३४९	हनुमत्स्तोत्र		,,	१४	लि.क. रामरूप प्रोहित, झिलवायमध्ये।
३५०	,, ,, न्यासविधिः		,,	३	
३५१	मुकुन्दमाला	कुलशेखराचार्य	,,	४	
३५२	महामृत्युञ्जयस्तोत्र		,,	३	
३५३	आलवंदारस्तोत्र सटीक	मू. यामुनाचार्य, टी. अज्ञात	,,	१७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
३५४	क्षमाषोडशी सटीक	मू. श्रुतप्रकाशिकाचार्यसुत वेदाचार्य, टी. अज्ञात	१९वीं.श.	६	
३५५	सरस्वत्यष्टक	गर्गप्रोक्त	,,	२	
३५६	नारायणसूक्तभाष्यादि		,,	४	ये चारों पत्र २ स्फुट एवं विभिन्न कृतियोंके हैं।
३५७	(१) नारायणहृदयस्तोत्र	अथर्वोत्तरखंडगत	१८७२	१–५	
	(२) आद्यामहालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वरहस्यगत	,,	६–२३	
३५८	सप्तशती (दुर्गा) नवार्णन्यासादि		१९वीं.श.	११	इसमें नवार्णन्यासविधि, सप्तशतीस्तोत्रन्यास, रात्रिसूक्त एवं देवीसूक्त अनुग्रह स्तोत्र लिखित है। (सं.) लि.क.–लक्ष्मीनारायण खंडेलवाल ब्राह्मण, जयपुर।
३५९	श्रीलक्ष्मीस्तव	श्रीवत्साङ्क	,,	५	
३६०	श्रीरामगायत्रीपञ्चन्यास		,,	४	
३६१	हरिनामषोडशी	अद्वैताचार्यसंग्रहवात (?)	,,	५	अच्युतानन्दास्वाद चतुर्थनिग्रह पटल।
३६२	अष्टश्लोकी व्याख्यान	वैष्णवदास	१९१६	३	
३६३	(१) विष्णुपञ्जरस्तोत्रम्		१८वीं.श.	१–४	सर्व प्रथम १५ पद्योंका विष्णुस्तोत्र है, तदनन्तर पञ्जरस्तोत्र।
	(२) लक्ष्मीनृसिंहमंत्रकवच		,,	४था	अपूर्ण।
३६४	गारुडोपनिषत्	हरिहरब्रह्मप्रोक्त	,,	५	
३६५	अतिमानुषस्तोत्र (श्रीरंगराजस्तोत्र) (अध्यात्मचिन्ता)	सौम्यजामातृमुनि	१९वीं.श.	२६	
३६६	श्रीवेङ्कटेशलक्ष्मीकवच	वाराहपुराणे शौनकप्रोक्त	,,	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
३६७	सुदर्शनस्तोत्र		१९वीं.श.	३	
३६८	राघवाष्टकस्तोत्र	श्रीनिवास वेदान्ताचार्य	,,	१	
३६९	सुन्दरबाहुस्तोत्र	रामानुजयामुनाचार्य	,,	२३	
३७०	श्रीरङ्गप्रपत्ति		१९३४	४	लि.क.—रामकुमार ब्राह्मण, जयपुर
३७१	श्रीरङ्गमङ्गलम्		१९१३	२	,, ,, ,,
३७२	महानारायणमंत्रराजस्तोत्रचिन्तामणि	वाराहपुराणगत			
३७३	वरदराजस्तव		१९वीं.श.	१४	
३७४	श्रीवेङ्कटेशस्तोत्र		१९११	८	,, ,, ,,
३७५	वेङ्कटनाथार्य (वेदान्ताचार्य)स्तुति		१९वीं.श.	४	अपूर्ण ।
३७६	जितं ते स्तोत्र (प्रथमत: पञ्चाध्यायान्त)	पाञ्चरात्रागमे महोपनिषदि ब्रह्मतंत्रे अष्टाक्षरकल्पगत	,,	१६	
३७७	श्रीवानाद्रिनाथप्रपत्ति:		,,	५	
३७८	(१) लक्ष्मणकवच	सुदर्शनसंहितागत	,,	१—८	
	(२) श्रीनिवासकवच		,,	९—११	
३७९	हनुमद्द्वादशनामस्तोत्र		१९९३	३	लि.क.—भगवान्शर्मा, चौमू
३८०	दुर्गास्तव	महाभारते विराटपर्वगत	१९वीं.श.	२	
३८१	सप्तशतीस्तोत्रन्यासविधि				
३८२	महामृत्युञ्जयविधानम्	मंत्रमहोदधिगत	,,	१	
३८३	गुरुमहिमा (रामपूजापद्धति)		,,	६	अपूर्ण
३८४	अध्यात्मचिन्तास्तोत्रम्	सौम्यजामातृमुनि	,,	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
३८५	अध्यात्मचिन्तास्तोत्रव्याख्यान	वरदराज	१९वीं श.	७१	
३८६	मूलसूत्र (पञ्चमाध्याय)	ब्रह्मसंहितायां भगवत्सिद्धान्तसंग्रहगत	१७३२	१०	
३८७	(२) गुरुपरम्परास्तोत्र	हरिव्यासदेव सूचित		५–६	लि.क.–महादेव ब्राह्मण।
	(१) निम्बार्कपद्धति मंत्रव्याख्यातविधि	सनत्कुमारनारदसंवाद	१९६१	१–५	नीमकाथाणा ग्रामे।
३८८	(१) विष्णोःस्थानाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र		१८वीं श.	१–५	सुन्दर लिखित एवं शोभन पत्र
	(२) गुरपरम्परा (रामानुजीय) स्तोत्र		,,	११–१२	
३८९	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणगत	,,	२२	
३९०	,, ,,	,, ,,	१९वीं श.	३२	
३९१	सप्तशती दुर्गास्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणगत	१८वीं श.	१०३	लि.क.–पीताम्बर, वाराणसी मध्ये।
३९२	श्रीकृष्णलहरी		१९वीं श.	८	
३९३	इन्द्राक्षीस्तोत्र	पद्मपुराणे इन्द्रप्रोक्त	१९२७	२०	लि.क.–रूड़मल पुजारी, विलोंछी ग्राम।
३९४	पुरुषोत्तमसहस्रनाम	वैश्वानरप्रोक्त	१९२३	३३	,, गोपीनाथ व्यास
३९५	राधारससुधानिधिस्तव	गोविन्दस्वामी (गोस्वामी हितहरिवंश)	१९वीं श.	७०	
३९६	गङ्गाष्टक	वाल्मीकि	,,	४	
३९७	(१) आदित्यहृदयस्तोत्र	रामायणे युद्धकाण्डे अगस्त्यप्रोक्त	,,	१–४	
	(२) विष्णुषट्पदी	शङ्कराचार्य	,,	४ था	
	(३) संकष्टनाशन श्रीलक्ष्मीनृसिंहस्तोत्र	,,	,,	५–६	
	(४) हरिहरात्मकस्तोत्र	,,	,,	७–वां	अपूर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४०४	श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रहिरण्यगर्भहृदयं नाम	आदित्यब्रह्मपुराणे काश्मीरवर्णनगत	१९०६	१५	
४०५	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	सिद्धेश्वरतंत्रगत	१७वीं.श.	१३	
४०६	सरस्वतीस्तोत्र		१९वीं.श.	२	
४०७	नृसिंहप्रातःस्मरण	श्रीरामानुज	१८वीं.श.	३	
४०८	(१) हनुमदष्टकस्तोत्र	श्रीरामचन्द्रप्रोक्त	,,	१–३	
	(२) शत्रुञ्जयहनुमत्स्तोत्र	,,	,,	३–६	
	(३) हनुमत्स्तवराज	सुदर्शनसंहितागत	,,	६–९	
	(४) हनुमदष्टकस्तोत्र		,,	९–१०	
	(५) हनुमन्मंत्र (शाबर)		,,	१०वां	
४०९	गायत्रीरामायण	वाल्मीकीयरामायणगत	१९३०	४	लि.क.–जगन्नाथ।
४१०	श्रीराममहिम्नःस्तोत्र	विजयरामाचार्य चतुर्भुजाचार्यशिष्य	१९१८	८	लि.क.–रामानुजदास, ग्राम दूदू।
४११	(१) सूर्यस्तवराज	साम्बपुराणगत	१९वीं.श.	१–२	
	(२) गङ्गाष्टक	वाल्मीकिमुनि	,,	२–३	
४१२	(१) सिद्धान्तबिन्दुस्तोत्र	शङ्कराचार्य	१८वीं.श.	१ला	
	(२) भुजङ्गप्रयातछन्दःस्तोत्रम्(भवान्याः)	,,	,,	,,	लि क.–हरिचन्द्र।
	(३) कोशनामानि २८		,,	,,	,, ,,
४१३	[त्रि]वेणीस्तोत्रम्	,,	१९वीं.श.	४	
४१४	शालग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणगत	,,	४	
४१५	तुलसीस्तोत्र	स्कन्दपुराणे रेवाखंडगत	,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४१६	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र	वाल्मीकिरामायणे रामप्रोक्त	१८२६	६	लि. क.—ड्योढ़ीराम, मालपुरामध्ये ।
४१७	श्रीरामपूजा	अगस्त्यसंहितागत	१९वीं.श.	१०	
४१८	लक्ष्मीनृसिंहसहस्रनामस्तोत्र	नृसिंहपुराणे मार्कण्डेयप्रोक्त	,,	८	लि. क. वैष्णव बालमुकुन्ददास ।
४१९	,, ,,	,, ,,	१८९७	१७	,, चतुर्भुज रामानुजदास ।
४२०	राधास्तोत्र		१९वीं.श.	२	
४२१	(१) गङ्गास्तोत्र	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत		१—२	
	(२) महापुरुषस्तोत्र	,, (अष्टादशाध्याय ब्रह्मखंडे)		२—६	
४२२	नमोन्त विष्णुसहस्रनामपाठ	महाभारतगत	१८वीं.श.	२३	पत्र २ से १३ तक अप्राप्त । अन्तिम पत्रमें बटुककवचकी फलस्तुति अपूर्ण लिखित है (सं.)
४२३	अधिकारसंग्रहस्तोत्र सव्याख्य	मू. वेङ्कटनाथ वेदान्ताचार्य, टी० अज्ञात	१९वीं.श.	३२	
४२४	सुदर्शनाष्टकस्तोत्र		,,	२	
४२५	श्रीरामापदुद्धारकस्तोत्र		१९३०	६	लि.क.—जगन्नाथ ।
४२६	गोपालसहस्रनामस्तोत्र सभाष्य	कश्चित् निंबार्कसम्प्रदायीय	१९वीं.श.	५५	किंचिदपूर्ण ।
४२७	(१) सन्तानगोपालविधिः		,,	१	
	(२) ,, ,,		,,	१	
	(३) ,, ,, (सयंत्र)		,,	२	
४२८	मूलरामायण (आदित्यहृदयं नाम, हनुमत्स्तोत्र)	वाल्मीकिमुनि	,,	७	अपूर्ण ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४२९	आदित्यहृदय हनुमत्स्तोत्र	वाल्मीकिमुनि	१९वीं.श.	३	अपूर्ण।
४३०	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणगत	१८वीं.श.	७–१५	,,
४३१	आदित्यहृदयस्तोत्र (स्फुटपत्र)		१९वीं श.	२	,,
४३२	अपामार्जनस्तोत्र	दाल्भ्यऋषिप्रोक्त	,,	१४	,,
४३३	सप्तश्लोकी गीता		,,	४	
४३४	(१) हनुमद्वडवानलस्तोत्र	सुदर्शनसंहितागत	,,	१–३	
	(२) हनुमत्कवच	ब्रह्माण्डपुराणे श्रीरामप्रोक्त	,,	३–१०	
	(३) आपन्निवारक हनुमत्स्तोत्र	विभीषणप्रोक्त	,,	१०–१२	
	(४) हनुमत्स्तुति छन्द		,,	१३वां	अपूर्ण। राजस्थानी भाषामें निबद्ध
४३५	हनुमदष्टक		,,	३	,,
४३६	हनुमत्कवच		,,	४	,,
४३७	श्रीनारायणस्तोत्र		,,	४	,,
४३८	ब्रह्मकवच	हरिहरब्रह्मप्रोक्त	,,	३	,,
४३९	श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र		,,	५	,,
४४०	(१) सुदर्शनाष्टक		,,	१ला	
	(२) आदित्यहृदयस्तोत्र	रामायणगत	,,	१ला	,,
४४१	दधिमथ्यष्टक		,,	१ व ३रा पत्र	,,
४४२	(१) शिवमानसीपूजा	शङ्कराचार्य	,,	१–२	
	(२) देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र		,,	२–४	
४४३	अघोरमंत्र		,,	२	अपूर्ण
४४४	महागणपतिस्तोत्र		,,	१	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४४५	शिवादिस्तोत्राणां स्फुटपत्राणि		१६वीं.श.		अपूर्ण।
४४६	षष्ठीस्तोत्र		,,	२	
४४७	शीतलास्तोत्र	स्कन्दपुराणोक्त	,,	२	
४४८	चक्रेश्वरीस्तुति		,,	१	
४४९	अम्बिकास्तुति		,,	१	
४५०	शत्रुविध्वंसिनीस्तोत्र		,,	२	
४५१	,, ,,		,,	२	
४५२	(१) अन्नपूर्णास्तोत्र		,,	१ला	अपूर्ण
	(२) सरस्वतीस्तोत्र	ब्रह्मपुराणगत	,,	१ला	
४५३	बगलामुखीस्तोत्र		,,	४	,,
४५४	राधारससुधानिधिस्तोत्र		,,	१२	,,
४५५	नवाक्षरीमंत्र (बगलायाः)		,,	१	,,
४५६	गोपालपंचाङ्ग		,,	१३	,,
४५७	गोपालसहस्रनाम		,,	९	,,
४५८	विष्णुसहस्रनाम सटीक		,,	२८	,,
४५९	(१) कलशस्थापनविधि		,,	१—१२	
	(२) नारायणहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	,,	१—१३	
	(३) लक्ष्मीस्तोत्र	,,	,,	१—४०	
	(४) शत्रुविध्वंसिनी (स्वामिवश्यकरी-स्तोत्र	शिवार्णवतंत्रगत	,,	१—३	
	(५) अन्नपूर्णास्तोत्र	रुद्रयामलगत	,,	१—६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(४५९)	(६) तर्पणविधिः		१९वीं.श.	१–१६	
४६०	,, ,,		१९६०	१०	
४६१	भूतशुद्धिः प्राणप्रतिष्ठांच		१९वीं.श.	६	
४६२	,, ,,		१९३०	९	
४६३	,, ,,		१७६९	६	
४६४	संध्योपासनम्		२०वीं.श.	८	
४६५	पार्थिवपूजनम्		१९वीं.श.	६	
४६६	बलिवैश्वदेवकर्म		,,	२	
४६७	पुण्याहवाचन	दानखंडोक्त	,,	६	
४६८	एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग		१९०८	५	
४६९	महालक्ष्मीपूजा		१९वीं.श.	३	
४७०	वेदस्थापनसंक्षेप		,,	६+२	अपूर्ण। दो पत्र किसी अन्य पुस्तकके प्रतीत होते हैं (सं०)
४७१	तैत्तिरीयोपनिषत्		,,	२	अपूर्ण
४७२	दण्डकम्		,,	३९	
४७३	प्रपन्नसंध्या		,,	४	
४७४	प्रातःसंध्या		,,	८	
४७५	नवग्रहमंत्रजपविधि		,,	११	अपूर्ण
४७६	भूतशुद्ध्यादिप्राणप्रतिष्ठा (हनुमत्कवचमालामंत्र)		,,	१	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४७७	रुद्राष्टाध्यायके स्फुटपत्र		१९वीं.श.	२	
४७८	रुद्राष्टाध्यायी		,,	८–४४	अपूर्ण
४७९	पार्थिवचिन्तामणि (शिवपार्थिवपूजन)		,,	१४	,,
४८०	कुशकण्डिका		१८वीं श.	४–८	,,
४८१	विष्णुपूजनप्रयोग		१९३५	५	,, लि.क.–पु. हरिनारायणजी खेजड़ाका रास्ता, जयपुर
४८२	देवीमानसीपूजा		१९वीं.श.	११	अपूर्ण
४८३	विवाहपद्धतिः		,,	३०	,,
४८४	विवाहपद्धतिके स्फुटपत्र		१८वीं.श.	१५	
४८५	शिवमानसपूजा		,,	२–५	
४८६	संध्योपासनविधि		२०वीं.श.	३	अपूर्ण
४८७	,,		१९वीं.श.	२–१०	लि. क.–रोडूराम ब्राह्मण ।
४८८	,,		१९३५	७	अपूर्ण । लि.क.–पुरोहित हरिनारायणजी
४८९	आह्निककृत्य		१९वीं.श.	६	,,
४९०	नित्यतर्पणके स्फुटपत्र		१८व.श.	३	
४९१	श्राद्धपद्धतिके स्फुटपत्र		,,	११	
४९२	नवरात्रस्थापनविधिः		१९वीं.श.	२	अपूर्ण
४९३	दत्तककर्मसंग्रह	महामहोपाध्याय कृष्ण तर्कालङ्कार भट्टाचार्य	,,	२	
४९४	छायापुरुषलक्षम्		१८वीं.श.	३	
४९५	स्वप्नबोधाध्याय	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१९५२	१	राजस्थानी भाषामें

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
४९६	सुगनावली स्फुटपत्र		१९वीं.श.	१	राजस्थानी भाषामें
४९७	जन्मकुण्डली फलके प्रकीर्णपत्र		,,	२	
४९८	दशाफलके ,,		,,	२	
४९९	गुरुद्वादशराशिविचारफल		,,	१	प्रकीर्णपत्र
५००	सूर्यफलम्		,,	२	
५०१	चमत्कारचिन्तामणिके प्रकीर्णपत्र	नारायण	,,	५	
५०२	शीघ्रबोधके प्रकीर्णपत्र		,,	२	
५०३	मुहूर्तचिन्तामणिके प्रकीर्णपत्र		,,	५	
५०४	बालबोध	मुञ्जादित्य	१८वीं.श.	६	अपूर्ण
५०५	जातकपद्धति	केशव	१७वीं.श.	७	,,
५०६	लघुजातक		१८वीं.श.	८	,,
५०७	बृहज्जातक		,,	४	,,
५०८	पन्चाङ्गोंके प्रकीर्णपत्र		१९वीं.श.	—	
५०९	सारिणीके ,,		,,	२	
५१०	ज्योतिषके स्फुटपत्र		,,	—	
५११	गोपीगीत	वेदव्यास (भागवतदशमस्कंधगत)	,,	१६	
५१२	भ्रमरगीत	,, ,,	,,	१६	
५१३	महिषीगीत	,, ,,	,,	१६	
५१४	वेणुगीत	,, ,,	,,	१६	
५१५	,,	,, ,,	,,	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५१६	चतुर्थीव्रतकथा	शिवपुराणगत	१९वीं.श.	७	
५१७	रामायणमाहात्म्य	स्कन्दपुराणगत	,,	८	
५१८	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	,,	५	
५१९	गौत्रिरात्रव्रतकथाके स्फुटपत्र		,,	४	
५२०	व्यतीपातकथाके ,,		,,	५	
५२१	विश्वम्भराकी कथा (पल्लीपतनविचार)		१९१४	४	त्रुटित
५२२	प्रदोषव्रतकथाका प्रकीर्णपत्र		१९वीं.श.	१	
५२३	लक्ष्म्युपाख्यान (दीपमालिकाकथा)		,,	१०	अपूर्ण
५२४	काममंत्ररहस्यार्थ (रहस्यत्रितयार्थ, अष्टाक्षरीमंत्रार्थ)	रामानुजशिष्यः कश्चित्	,,		
५२५	धनुर्मासमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	,,	६—२८	,,
५२६	गीताभाषापद्यानुवादके स्फुटपत्र		,,	१८	
५२७	मुक्तिमंत्र (रहस्यत्रयार्थ)	रामानुजशिष्यः कश्चित्	१८वीं.श.	२९	
५२८	पुरुषोत्तममाहात्म्य	स्कन्दपुराणगत	१९वीं.श.	८७	अपूर्ण । सप्तत्रिंशाध्यायपर्यन्त ।
५२९	दत्तात्रेयतंत्रम्	ईश्वरप्रोक्त	,,	९४	
५३०	अर्जुनस्य दशनामानि तथा राममंत्र		,	२	
५३१	जानकीमंत्र		,,	१	
५३२	सर्वोत्कीलनमंत्र		,,	२	
५३३	(१) प्रत्यङ्गिरामंत्र		२०वीं.श.	१—२	लि.क.—पुरोहित हरिनारायणजी, जयपुर ।
	(२) शत्रुविध्वंसिनीस्तोत्र		,,	२—३	,,
५३४	कार्त्तवीर्यसहस्रनामस्तोत्र	डामरतन्त्रोक्त	१९२५	२०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५३५	सन्तानगोपालयंत्रविधिः		१९वीं.श.	१	
५३६	मंत्रसार	नित्यनाथविरचित सिद्धि-खण्डगत	,,	६	स्फुटपत्र
५३७	कार्त्तवीर्यार्जुनदीपदानविधिः		,,	३	
५३८	कलान्यास (मायाकामबीजादिन्यासः)		१९००	८	लि.क.—फतेराम
५३९	(१) अर्थवद्ग्रहणंसूत्रप्रतिपत्ति		१९वीं.श.	१५	व्याकरण
	(२) सारस्वतव्याकरणके स्फुटपत्र		,,	३	,,
५४०	समयाचारतंत्र (संवित्स्तोत्र)	गोस्वामि श्रीशिवानन्द-भट्टकृत कुलप्रदीपचतुर्थ-प्रकाशगत	,,	६	
५४१	हमीररासो		,,	२	स्फुटपत्र
५४२	रुक्मिणीमंगल		,,	२८	,,
५४३	रुक्मिणीजीरो व्याहलो		,,	१०	,,
५४४	जानकीमंगल		,,	१	,,
५४५	प्रेमप्रकास	व्रजनिधि	,,	४–९	अपूर्ण
५४६	सतनामप्रकास	कबीर	,,	२	
५४७	मारवाड़ी तमासा		,,	१३	स्फुटपत्र
५४८	इंद्रजालविधि		,,	२	,,
५४९	शिवपञ्चरत्न		,,	१	
५५०	रसिकजीके हिन्दी पद		,,	४	,,
५५१	स्नेहसंग्राम एवं अन्य कवित्त		,,	४	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५५२	भागवत-दशमस्कंधभाषापद्यानुवाद		१९वीं.श.	६	स्फुटपत्र
५५३	भैरव, दुर्गा एवं सूर्यकी आरती		,,	३	,,
५५४	शाखोच्चार (हिन्दी)		,,	२	,,
५५५	दादूदासजन्मलीलाग्रन्थ		,,	६४	अस्तव्यस्त पत्र एवं अपूर्ण ।
५५६	हिन्दीभाषाबद्ध पुस्तकोंके स्फुटपत्र		,,		
५५७	भक्तमाल	नाभादास	१९२५		रचनाकाल १७६९ ।
५५८	फहरिस्त जयपुरके जागीरदारानकी				वही ।
५५९	दिल्लीकी पातस्याहीका ब्योरा		२०वीं.श.	१२	
५६०	गवर्नरजनरल, वायसराय आर० ई होलेन्ड की स्पीच				१९२१ सन्में जयपुर आये, उस समय में दी गई। मुद्रित (हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश)
५६१	दिल्लीके दरबारे खासका चित्र			१	मुद्रित । वेङ्कटेश्वर समाचार का उपहार ।
५६२	जयपुरराज्य कौन्सिल व जागीरदारों से निवेदन	वीरसिंह तँवर (हाकिम, इतिहास विभाग, राज्य अलवर)			मुद्रित
५६३	फोटोस्टॅटकापी कायमस्यंघ राजावतके पत्र की			१	
५६४	माधवेश विवाह बनड़ा गीत		,,	२	जयपुरके महाराजा सवाई माधवसिंह (द्वितीय) के विवाहोत्सव पर गाए हुए (सं.)
५६५	इतिहाससम्बन्धी सामग्री				स्फुट पत्रादिमें टिप्पणियां ।
५६६	(१) सिद्धान्तचन्द्रिका	रामाश्रमाचार्य	१९१७	५२+४८=१००	पूर्वार्द्ध : लि.क.—गोपीनाथ व्यास, जयनगर ।
	(२) ,, (उत्तरार्द्ध)	,,	,,	५६+३९=९५	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६०४	श्यामचरित (षष्ठाध्यायी)	श्रीमुखानन्द (श्रीसाह्ला-वासपुरसमीपस्थ वूरवेदिकाग्रामस्थ वसिष्ठगोत्र सनातनात्मज)	१९४०	११	लि.क.—बलदेव; हिन्दीका अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थ ।
६०५	सिद्धोपाय	रामानुजमतीयः कश्चित्	१९२१	१३	
६०६	अर्थपञ्चकविवेक	शठकोपदास	१९१४	११	
६०७	लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्ग	देवीरहस्यगत	१९वीं.श.	२५	
६०८	रघुवंश (द्वितीयसर्ग)	कालिदास	१८वीं श.	८	
६०९	,, (चतुर्थपञ्चमसर्गौ)	,,	,,	१४	
६१०	रघुवंशटीका (विशेषार्थबोधिनी) द्वितीयसर्गस्य	गुणविनय	,,	१४	
६११	अष्टावक्रगीताटीका	विश्वेश्वर	१८वीं.श.	७२	लिपिस्थान—रामगढ़ । लि.क.—लक्ष्मणदास कुचामननिवासी ।
६१२	रामस्तवराज सटीक	रामानुजीयः कश्चित्	,,	८	अपूर्ण ।
६१३	भगवद्भक्तिरत्नावली सटीक	मू. विष्णुपुरी, टी. अज्ञात	१७११	५१	लि.क.—विहारीदास हरिरामशिष्य ।
६१४	तत्त्वबोधप्रकरण		१९०७	१०	
६१५	संगीतरघुनन्दनम् महाकाव्य सटीक	विश्वनाथसिंहदेव टी. स्वोपज्ञ	१९२६	६०	अज्ञात एवं अप्रकाशित । विशिष्ट प्रति, आदितः षोडशसर्गान्त ।
६१६	रामगीतगोविन्दकाव्य	जयदेवकवि	१९२६	१४	आदितः षष्ठसर्गान्त । विशिष्ट प्रति ।
६१७	(१) ब्रह्मनामावलीरत्नस्तोत्र	शङ्कराचार्य	१८वीं.श.	१–२	
	(२) ब्रह्मनिरामयाष्टकम् ,,	,,	,,	२–२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
५८६	कुमारसंभव	कालिदास	१९वीं श.	१२	प्रथम द्वितीय सर्ग
५८७	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	,,	७	प्रथम सर्ग
५८८	रत्नकोश (वस्तुविज्ञानव्याख्या)		२०वीं श.	१८	
५८९	अमरकोश	अमरसिंह	१९१७–१८	४२+६६+२७ = १३५	लि.क.—गोपीनाथ छात्र
५९०	,,	,,	१९वीं श.	३–२३ ३–५९	अपूर्ण
५९१	,, सटिप्पण	,,	१९०२	१७+३८+२६ = ७१	
५९२	वाग्भूषणशतककाव्यसटीक	रामचन्द्र	१८वीं श.	१५	लि.कि.—गोविन्द शर्मा
५९३	वृत्तरत्नाकर	भास्कर	१९वीं श.	७	अपूर्ण।
५९४	काव्यस्फुटपत्राणि		,,		
५९५	सन्तदासजीकीवाणी आदि गुटका	सन्तदास आदि	१९३६	१२९	इसमें रामचरण, भीषजन, मीरां आदिके पदोंके साथ पिसणसिंगार ग्रन्थ भी लिखित है।
५९६	श्रीनारायणधर्मसारसंग्रह	रामानुजमतानुसारी	[१८]३७	६२	लि.क.—नारायण ब्राह्मण गौड़
५९७	नित्यकर्मविधि:		१८वीं श.	८४	लि.क.—काश्मीर देशान्तर पं. पुण्यजनराजराम।
५९८	स्मृतिसार	चतुर्विंशतिमुनिप्रोक्त	१८८९	३३	अपूर्ण। यह कोई धर्मशास्त्रका निबन्ध ग्रन्थ है।
५९९	सुदर्शनशतकस्तोत्र	कूरनारायण	१८वीं श.	२१	
६००	योगशत		१८८७	१६	आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ।
६०१	वज्रसूचीशास्त्र	शङ्कराचार्य	१९वीं श.	२	
६०२	वाक्य (तत्वमसीति) सुधाप्रकरणसटीक		१८वीं श.	२९	
६०३	रामायणपाठविधि: (हयग्रीव पाञ्चरात्रानुसारी)	रामानुजकल्पद्रुमोक्त	१८७२	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६०४	श्यामचरित (षष्ठाध्यायी)	श्रीमुखानन्द (श्रीसाल्हावासपुरसमीपस्थ वूरवेदिकाग्रामस्थ वसिष्ठगोत्र सनातनात्मज)	१९४०	११	लि.क.—वलदेव; हिन्दीका अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रन्थ ।
६०५	सिद्धोपाय	रामानुजमतीयः कश्चित्	१९२१	१३	
६०६	अर्थपञ्चकविवेक	शठकोपदास	१९१४	११	
६०७	लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्ग	देवीरहस्यगत	१९वीं.श.	२५	
६०८	रघुवंश (द्वितीयसर्ग)	कालिदास	१८वीं श.	८	
६०९	,, (चतुर्थपञ्चमसर्गौ)	,,	,,	१४	
६१०	रघुवंशटीका (विशेषार्थबोधिनी) द्वितीयसर्गस्य	गुणविनय	,,	१४	
६११	अष्टावक्रगीताटीका	विश्वेश्वर	१८वीं.श.	७२	लिपिस्थान—रामगढ़ । लि.क.—लक्ष्मणदास कुचामननिवासी ।
६१२	रामस्तवराज सटीक	रामानुजीयः कश्चित्	,,	८	अपूर्ण ।
६१३	भगवद्भक्तिरत्नावली सटीक	मू. विष्णुपुरी, टी. अज्ञात	१७११	५१	लि.क.—विहारीदास हरिरामशिष्य ।
६१४	तत्त्वबोधप्रकरण		१९०७	१०	
६१५	संगीतरघुनन्दनम् महाकाव्य सटीक	विश्वनाथसिंहदेव टी. स्वोपज्ञ	१९२६	६०	अज्ञात एवं अप्रकाशित । विशिष्ट प्रति, आदितः षोडशसर्गान्त ।
६१६	रामगीतगोविन्दकाव्य	जयदेवकवि	१९२६	१४	आदितः षष्ठसर्गान्त । विशिष्ट प्रति ।
६१७	(१) ब्रह्मनामावलीरत्नस्तोत्र	शङ्कराचार्य	१८वीं.श.	१—२	
	(२) ब्रह्मनिरामयाष्टकम् ,,	,,	,,	२—२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(६१७)	(३) हंसाष्टकम्	शङ्कराचार्य	१८वीं.श.	२–२	
	(४) हस्तामलकम्	,,	,,	२–३	
	(५) विज्ञाननौका	,,	,,	३२	
६१८	पाकार्णवग्रन्थ (आयुर्वेद)		१९२९	२३	लि.क.–रोडूराम वैद्य।
६१९	क्षेमकुतूहल (महानसविधिः)	क्षेमशर्मा-नरवैद्यमन्मथात्मज	१९वीं.श.	४४	अज्ञात अप्रकाशित ग्रन्थ।
६२०	श्रीतनयासंग्रह गुरुपरम्परा च	रामानुजीयः कश्चित्	,,	७	अपूर्ण।
६२१	मुहूर्त्तचिन्तामणिभाषा	सुकवि शंभुनाथ	,,	१३	अचलेशके आदेशसे निर्मित सं. १८८३ में।
६२२	जगन्मङ्गलस्तोत्र (जैन) सटिप्पण	पद्मदेव	२०वीं.श.	४	अपूर्ण।
६२३	सर्वज्ञस्तवन (देवाःप्रभो स्तोत्र) सटीक	जयानन्दसूरि	१७वीं.श.	२	वर्णाशिषिवत।
६२४	समवसरणस्तोत्र	धनदेव	,,	६	
६२५	ज्ञानलोचनस्तोत्र	सुवादिराज-पोमराजतनय	१७४४	५	लि.क.–उपाध्याय कल्याणकीर्ति।
६२६	पातञ्जलयोगशास्त्रवृत्ति (राजमार्तण्डाभिधा)	श्रीधारेश्वर	१९१४	५४	लि.क.–पुरुषोत्तम मिश्र वृन्दावनसमीपस्थ-अठखंभा-लाखापुर।
६२७	तत्वत्रयचूलार्थसंग्रह	वेदान्ताचार्य वरदनाथापरनाम	१९वीं.श.	१७	
६२८	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवासदास-गोविन्दाचार्यशिष्य वाधूलकुलोद्भव	,,	३२	
६२९	हठयोगप्रदीपिका	स्वात्माराम योगींद्र	,,	२३	लि.क.–ब्राह्मण श्रीवैष्णव जयनारायण रामानुजदास दुद्रमध्ये।
६३०	वृन्दविनोदसतसया	कविवृन्द	१८७७	४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६३१	भक्त [माल] कथा		१९वीं.श.	६९–९२ २–४०	पद्यवद्ध अपूर्ण।
६३२	प्रश्नप्रदीप (ज्योतिष)	काशीनाथ	१८वीं.श.	११	अपूर्ण ।
६३३	प्रश्नावली (वेदान्त)		,,	९	हिन्दी ।
६३४	गायत्रीसंग्रह		,,	१३	
६३५	भागवत (प्रथमस्कंध) मूल	वेदव्यास	१९वीं.श.	२२–५१	अपूर्ण व त्रुटित ।
६३६	,, (चतुर्थस्कंध) सटीक	,,	,,	२२–९७	२३ से २९ तक अप्राप्त। अपूर्ण व त्रुटित प्रति।
६३७	,, (तृतीयस्कंध) सटीक	,,	,,	२८–१३४	अपूर्ण व त्रुटित प्रति। १२७ एवं १२८ तथा १३० से १३३ तक अप्राप्त ।
६३८	,, (पञ्चमस्कंध) ,,	,, टी. श्रीधरस्वामी	,,	६	अपूर्ण।
६३९	,, (षष्ठस्कंध) ,,	,, ,,	१८३९	६२	
६४०	(१) ,, (सप्तमस्कंध) ,,	,, ,,	१८४८	६१	लि.स्था.–मथुरा।
	(२) ,, (अष्टमस्कंध) ,,	,, ,,	,,	५८	,,
	(३) ,, (नवमस्कंध) ,,	,, ,,	,,	५१	,,
६४१	,, (दशमस्कंध पूर्वार्द्ध) ,,	,, ,,	१९वीं.श.	अस्तव्यस्त पत्र	एवं प्रकीर्ण।
६४२	,, दशमस्कंध उत्तरार्द्ध	,, ,,	१७वीं.श.	६२–१३०	अपूर्ण ।
६४३	,, दशमस्कंध पूर्वार्द्ध	,, ,,	१८वीं.श.	१२–१३७	त्रुटित ।
६४४	,, दशमस्कंध उत्तरार्द्ध	,, ,,	,,	१०४	
६४५	नारदीयपुराण (पूर्वभाग)	वेदव्यास	१९वीं.श.	२२६	
६४६	शालिहोत्र (भाषा)	नकुल	१८८९	८–३३	पत्र ९वां अप्राप्त।
६४७	नाडीपरीक्षा			२–९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६४८	कर्मकाण्डके प्रकीर्ण पत्र				
६४९	वैद्यबोधभाषा	अखेराम	१९वीं.श.	९	अपूर्ण ।
६५०	सिहरफी	बुल्हेशाह	१९५९	२	जीर्ण एवं खंडित ।
६५१	आचार्यपरम्परा		१९वीं.श.	१	रामानुजाचार्यसम्बन्धी प्रकीर्ण पत्र ।
६५२	छन्दरत्नावली	हरिरामदास निरंजनी डीडवाणिया	,,	७	रचना–१७९५ डीडवाणा में ।
६५३	भक्तमाल सटीक	नाभादास, प्रियादास	१९३५	१६९	लि.क.–नन्दराम ब्राह्मण जोलोनगर ।
६५४	वेदान्तसंज्ञा		१९०५	२२	लि.क.–साधु रामदयाल ।
६५५	ईश्वरस्वरोदय (हिन्दी)	ईश्वरदास	१९५८	४०	रचनाकाल १९५६ संवत्से पूर्व ।
६५६	प्रबोधसुधाकर	शङ्कराचार्य	१९५६	१३	लि.क.–भवानीदत्त जोशी, झूंझणूं ।
६५७	भर्तृहरिशत वैराग्यवृन्द	भगवानदास निरंजनी	१९वीं.श.	३१	
६५८	रसधातुसिद्धिक्रियाको मानप्रमाण		,,	१	
६५९	जहरनिरूपण		२०वीं.श.	३	
६६०	छन्दरत्नावली	हरिरामदास निरंजनी डीडवाणिया	,,	११	
६६१	आत्मविचारग्रन्थ	माणक	१९वीं.श.	७	
६६२	योगशतभाषा सटीक		१८६९	१८	आयुर्वेद । लि.क.–रामसुख, भोडकीमध्ये ।
६६३	रूपदीपपिङ्गल	रामजीदास	१९वीं.श.	५	अपूर्ण ।
६६४	रसमञ्जरी सटीक	भानुदत्त	१८वीं.श.	५६	,,
६६५	श्रीगुणरत्नकोशः	श्रीभट्टारकस्वामी	१९१७	१२	लि.क.–नारायण ।
६६६	योगचिन्तामणि	शिवानन्द यति श्रीरामचन्द्रशिष्य	१८वीं.श.	१३२	अपूर्ण ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६६७	चाणक्यनीतिसार		१९०४	८	लि.क.—वृन्दावनदास, वृन्दावनमध्ये।
६६८	सुभाषितसर्वस्वम्	गोपीनाथ	१९वीं.श.	८४+४	पत्र ४ अतिरिक्त हैं।
६६९	प्रशस्तिप्रकाशिका	त्रिपाठी बालकृष्ण	१८७७	१०	पत्रलेखनविधिसंग्रह।
६७०	नित्यतर्पणविधि		१९वीं.श.	५	
६७१	गणपतिस्तोत्र	दशरथप्रोक्त	,,	२–३	इसीमें लक्ष्मीसूक्त एवं गङ्गास्तोत्र अपूर्ण लिखित हैं।
६७२	,,	शङ्कराचार्य	,,	१	
६७३	रामकवच (त्रैलोक्यमोहननाम)	ब्रह्मयामलगत	,,	५	
६७४	श्रीबालमुकुन्दचित्र				रेखाङ्कित।
६७५	श्रीविष्णुचित्र				,,
६७६	श्री (सहस्रार) (सुदर्शन) यंत्र				,,
६७७	भगवद्गीता भाषाटीकासहित सुबोधिनीनाम्नी	मू. वेदव्यास	१८६६	१४१	प्रथम पत्र खंडित व त्रुटित।
६७८	(१) सामान्यनिरुक्ति		१९वीं.श.	५४	अस्तव्यस्त पत्र।
	(२) ,,			५०	,,
६७९	तर्कसंग्रह	अन्नम्भट्ट	,,	३	अपूर्ण।
६८०	शक्तिवादः			६	,,
६८१	सिद्धान्तलक्षण जागदीशी	माधवभट्ट	,,	६१	अस्तव्यस्त पत्र।
६८२	परिभाषेन्दुशेखरटीका	नागेश	,,	१२९	अपूर्ण।
६८३	लोहार्गलमाहात्म्य भाषाटीकासहित	सारोद्धारान्तर्गत	२०वीं.श.	७४	आदितः अष्टाध्यायान्त।
६८४	,, ,, (मूल)	,,	१९५६	३१	आदितः अष्टाध्यायान्त, सूर्यमंदिरमें लिखित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
६८५	लोहार्गल माहात्म्य (मूल)	सारोद्धारान्तर्गत	१९५६	२२	अष्टाध्यायात्मक। लि.क.—धनानाथ जोशी।
६८६	,, ,, ,,	,,	१९५८	२३	,, ,, शिवनारायण शर्मा, नवलदुर्ग।
६८७	,, ,, ,,	पद्मपुराणान्तर्गत	१९५९	११	पञ्चाध्यायान्त।
६८८	,, ,, ,,	,,	२०वीं.श.	१२	,,
६८९	,, ,, ,,	,,	१९५६	१०	,, लि.क.—विश्वेश्वर कान्यकुब्ज, जयपुर।
६९०	,, ,, ,,	वाराहपुराणान्तर्गत	१९५९	५	
६९१	,, ,, ,,	ब्रह्म ,,	२०वीं.श.	९	षष्ठाध्यायपर्यन्त।
६९२	,, ,, ,,	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	,,	१५	,,
६९३	,, ,, ,,	सारोद्धारगत	,,	४	प्रथमाध्याय। प्रेस कापीके रूपमें।
६९४	कोटिकावर्णनम्	नानापुराणसारोद्धारे गङ्गाभक्ति प्रकाशगत	,,	३	
६९५	लोहार्गलसम्बन्धी सामग्री				
६९६	श्रीगणेश्वरमाहात्म्य (गालवाश्रमका माहात्म्य)	भविष्योत्तरपुराणगत	१९६२	२५	हनूमान्शर्मारचित भाषाटीकायुक्त, बालचंद्र प्रेस, जयपुरमें मुद्रित।
६९७	माधवेन्द्रशंसानिचय (माधवस्तुति)	संग्राहक-पु.हरिनारायणजी	२०वीं.श.	१४	इंग्लिश-हिन्दी-संस्कृत।
६९८	लावणीसार	लालागणेशलाल फर्रुखाबादी आदि	,,	५	इसमें सभी रचनाएँ राधाकृष्णलीलाविहारकी एवं रामायणादि भगवत्सम्बन्धी हैं। यह चुनी हुई लावनियोंका संग्रह है। (सं०)
६९९	आत्मलहरीकी भाषाटीका		,,	३८	तीन कापियोंमें लिखी।
७००	कबीरजीका ककहरा	कबीर	,,	६	चिपके हुए पत्र।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७०१	वावनीसंग्रह				
	(१) सुन्दरबावनी	सुन्दरदास	२०वीं.श.	२	अपूर्ण किन्तु सुसम्पादित प्रति (सं०)
	(२) प्रबोधबावनी	जिनरंगसूरि	१९६०	६	रचना–१७३१ । लि.क.–जीवनरामशर्मा, जयपुर ।
७०२	भीषबावनी	भीषजन	२०वीं.श.	२८ पेज	
७०३	संगीतकी पुस्तक (सवाईजयसिंहादि-प्रशंसापरक कवित्तादि)		१९वीं.श.	६	स्फुट पत्र। इसमें तीन पत्र तो विहारीसतसई के हैं। (सं०)
७०४	भजनसंग्रह		२०वीं.श.	७	
७०५	सदैवछ सावलंगाकी बात		१८५३	४०	लि.क.–सालगराममिश्र पीपलदामध्ये ।
७०६	हिन्दीके प्राचीन महाकवियोंके पदोंका संग्रह		१९वीं.श.	१८४+६	जीर्णशीर्ण प्रति ।
७०७	सिंहासनबत्तीसी (हिन्दी)		१९२६	१६८ पेज	देहलीमें मुद्रित ३,४ पेज अप्राप्त ।
७०८	वाणीसंग्रह		१९वीं.श.	६४	इस गुटकेमें कवित्त, बात, औषधि, हिसाब आदि सभी लिखित हैं। अगरदासकी वाणियां अधिक हैं । (सं०)
७०९	विहारीसतसईके स्फुटपत्र सटीक		,,	४०	
७१०	(१) शालिहोत्र		१८९७	१–१३	अपूर्ण । १०, ११वाँ पत्र अप्राप्त ।
	(२) निघण्टुसार		,,	७८	लि.क.–लोहकार भगवानदास ।
७११	प्राचीनकथासंग्रह				
	(१) हररस	ईसरदास	१८०६	७	आदिसे अपूर्ण ।
	(२) राठोड़कहाणा तिणरी विगत		,,	६५–६८	
	(३) जगमालजी, गीदोलीरी बात		१८१३	६९–८०	लोढावासमध्ये लिपीकृत पं० गोरधन ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१)	(४) गोची अचलदास नै लालमेवाड़ी-री वात		१८१३	८१–८९	मोरटहुकामध्ये लिखित ।
	(५) दांखिनी आदि नायिकाओंके लक्षण तथा स्फुट कवित्तादि		"	८९–९६	
	(६) च्यार जुगरा राजांरी वंसावली		"	९७–१००	
	(७) ज्ञानतिलक (संस्कृत)		१८०६	१०१–१०२	लि. स्था.–बाघावास ।
	(८) हरिनाममाला ,,	शुक्राचार्य	"	१०३वाँ	
	(९) हरिपंचविंशतिनामानि		"	१०३–४	
	(१०) गङ्गास्तोत्र		"	१०४वाँ	
	(११) अष्टदलकमलका भेद	गोरखनाथ	"	१०५वाँ	
	(१२) चतुःषष्टियोगिनीस्तोत्र		"	१०५–१०६	
	(१३) दशावतार		"	१०६–७	
	(१४) चंडीरक्षास्तोत्र (राजस्थानी)		"	१०७–८	
	(१५) शिवाष्टकस्तोत्रम्		"	१०८–९	
	(१६) एकादशीकथासंग्रह		"	१०९–१२३	राजस्थानी भाषा ।
	(१७) निसाणी ठाकुरांश्रीदुरगदासजीरी	आसिया मोहन	"	१२३–१३२	
	(१८) माताजीरो छन्द		"	१३२–१३५	
	(१९) छन्द पाबूजीरो		"	१३६–१३८	
	(२०) गोग-रसावला		"	१३८–१४२	
	(२१) हितोपदेश पंचाख्यानभाषा	विष्णुशर्मा	१८०८	३–१६६	
	(२२) अर्जुनगीता	महाभारतयज्ञपर्वगत	१८०६	१६७–१७८	लि.क.–गोरधन । बाघावासमध्ये ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थमाला	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७११)	(२३) पन्नगपवाडो (नागदमण)	सांइया झोला	१८०६	१७८–१८७	
	(२४) आरती भगवानरी	ईसर	,,	१८७वाँ	
	(२५) रामरासो		,,	१८८–२३३	अपूर्ण।
७१२	रुक्मिणीव्याहलो आदि		१९वीं.श.	२–१६०	इसमें दानलीला, स्नेहलीला, औषधि, मोहमरदकी कथा एवं पदादिसंग्रह लिखित हैं। बीच बीचमें पत्र अप्राप्त हैं। (सं०)
७१३	अहेवालसमुद्रका करना आदि		,,	४१	अपूर्ण।
७१४	(१) नृसिंहकी स्तुतिके पद		२०वीं.श.	६	
	(२) ,, को भजनपद		,,	८	
७१५	भगवद्गीता भाषापद्यानुवाद	भावनादास	१९३२	९७	श्रीधर शिवलाल के ज्ञानसागर प्रेस में मुद्रित।
७१६	,, ,, सहित	ज्ञानदास	१९२२	३–२८८	हिन्दू प्रेस में मुद्रित।
७१७	पुरुषोत्तम (विष्णुदिव्य) सहस्रनाम		१९वीं.श.	४८	
७१८	भगवद्गीता	वेदव्यास	,,	११५	
७१९	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितायां नारदोक्त	,,	२८	
७२०	भगवद्गीता परमानन्दप्रबोधनाम्नी भाषापद्यबद्ध टीकासहित	मू. वेदव्यास, टी. नाजर आनन्दराम	,,	२७५	
७२१	(१) पट्टीपहाड़ा		१८५२	१–३	लि.क.—रामसेवक।
	(२) सनेहलीला		,,	४–१६	,, ,,
	(३) विजैविवाह			१७–५७	
	(४) सनीसरजीकी कथा			५८–६७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७२२	स्तोत्रादिपुस्तिका (श्लोकार्थसंग्रहः)		२०वीं.श.	१०	
७२३	हनुमत्कवच	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	,,	११	
७२४	श्रीरामद्वादशनामानि	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१९वीं.श.	२	
७२५	भागवतसारपच्चीसी	चन्दकवि(गुसांई चन्दालाल)		४ पेज	सवाई प्रतापसिंहाज्ञासे निर्मित। कृतिके कर्त्ता महापुरा(जयपुर)के गोस्वामिवंशके प्रतीत होते हैं (सं.)
७२६	(१) ,, ,,	,,	,,	१–१०	
	(२) स्फुट कवित्त		,,	११वां	
	(३) बाललीला (कृष्णचरित)	कृष्णदास	,,	११–१५	मध्य त्रुटित।
	(४) कवित्त	पद्माकर	,,	१६–१९	
७२७	भागवत दशमस्कंध भाषापद्यानुवाद		,,	२०–१२४	अपूर्ण। इसके अनन्तर पत्रोंमें गोपीनाथकृत लावणी आदि हैं।
७२८	एकादशीकथासंग्रह		,,	१३–१५२	राजस्थानी। अपूर्ण।
७२९	भगवद्गीता सुबोधिनीटीकासहित	मू. वेदव्यास, टी. श्रीधरस्वामी	१८वीं.श.	९७	
७३०	(१) हमीररासो	महेशकवि	१८५३	१–७४	लि.क.–रायचन्द साहावडा।
	(२) पातली (महाप्रसादकी)	रघनाथ	,,	७५–७७	,, ,,
	(३) इतिहासभाषाकृति (इतिहाससारसमुच्चय)	लालदास	१८५४	१–१४४	,, , पद्यबद्ध
	(४) नासिकेतपुराणभाषा (गद्य)	नंददास	,,	१–६४	अपूर्ण
७३१	(१) भजनसंग्रह (पिसणसिंगार)	सेवादास	,,	१–१८	
	(२) बारखड़ी (ककावत्तीसी)	लालदास	,,	१९–३७	लि.क.–पंचोली केसोराम बायग्राम।
७३२	(१) गायत्रीपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलतंत्रगत	१८७६	११–५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७३२)	(२) नारायणवर्म	भागवतषष्ठस्कंधगत	१८७६	६२–६७	
	(३) पञ्चमुखीहनुमत्कवच		१८६०	१–३	लि.क.–गोटाराम ।
	(४) नृसिंहसहस्राक्षरमन्त्र	कपिलमुनिप्रोक्त		३–६	
७३३	(१) माधवकामकन्दला चौपाई		१९वीं.श.	२–१११	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
	(२) बारखड़ी (कुदरतका कक्का)			१११–१४	अपूर्ण ।
	(३) ऐजराज सोलंषीकी बात			११५–१२८	अपूर्ण ।
	(४) कक्का कुदरतका			१२८–१३१	,,
७३४	इतिहाससारसमुच्चय (गद्य)	लालदास	१९९३	१२१ पेज	लि.क.– भगवान शर्मा चौमूनिवासी, गोपीचंद शर्मा जयपुरनिवासी । लि.स्था.–जयपुर ।
७३५	नरेणा (नारायणा) ग्रामसम्बन्धी ऐतिहासिक पत्र			६	यह पत्र श्री हरिनारायणजी पुरोहितको नरेनानिवासी मदनमोहनलालने लिखा था । (सं)
७३६	लावनी	रामदीन टकसाली	२०वीं.श.	३	ज्ञानमार्ग की लावनी है । लि.क.–कन्हैयालाल ।
७३७	(१) पत्रावली			१–८	स्त्री-पुरुष की परस्पर पत्रालेखनप्रणाली (सं.)
	(२) सनेहसंग्राम			८–११	लि.क.–रामप्रताप, रामगढ़ग्राम ।
	(३) नायिकादिकवित्त स्फुट			१२–१७	,, ,, ,,
७३८	नाथूरामशर्माके पुस्तकालयका सूचीपत्र		,,	६	नाथूरामशर्मा पावटानिवासी हैं ।
७३९	एन एब्स्ट्रेक्ट एकाउन्ट ऑफ दी सर्च फोर हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स फोर दी ईयर १९००, १९०१ एण्ड १९०२	श्यामसुन्दरदास बी.ए.	१९०४	२५ पेज	बोम्बे एज्यूकेशन सोसाइटी प्रेसमें मुद्रित ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७४०	सूचीपत्र नोटिसेजका		२०वीं.श.		उन पुस्तकोंका जिनके नोटिसेज फार्मोंमें भरे जाकर का.ना.प्र. सभाको क्रमशः भेजे गये। केवल रजिस्टर मात्र है। इसमें एक नक्शा अवश्य भरा हुआ है और तद्भिन्न नक्शोंके २ पत्र हैं। (सं.)
७४१	रूपदीपपिङ्गलभाषा		,,	२+१	छन्दोंकी सूचीका १ पत्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पादनार्थ इस प्रतिका लेखन शुरू हुआ था। (सं.)
७४२	गीतामाहात्म्य	विष्णुधर्मोत्तरगत	१८३७	६	लि.क.—वैष्णव पुरुषोत्तमदास पाडावहमध्ये।
७४३	भगवद्गीता	वेदव्यास	१६३६	१५०	,, रामचन्द्र प्रश्नवर।
७४४	मत्स्यदेशान्तर्गतचम्पावतीपुरकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२२	२७	,, हीरानन्द नगर चम्पावतीमध्ये।
७४५	चाणक्यसारसंग्रह	कवि कालिदास	१६२३	६	लि.क.—चतुर्भुज विद्यार्थी, बुंदेलखंडीमध्ये।
७४६	चाणक्यनीतिसार		१८३६	११–२६	पत्र १३ से १६ तक अप्राप्त। लि.क.—खुश्यालीराम मिश्र, आभानेरीग्राम।
७४७	श्रीराममहिम्नःस्तोत्र	विजयरामाचार्य	१८७४		लि.क.—धनीराम ब्राह्मण, मुचुकुंदमध्ये।
७४८	मंत्रशास्त्रके स्फुट पत्र		१६वीं.श.	३	
७४६	सुभाषितसंग्रह			११	स्फुट पत्र।
७५०	हिन्दीके दोहे			७	स्फुट पत्र फुलस्केप साइजके थे किन्तु फट जाने से एवं उलट-पुट लग जानेसे पाठ भी असंगत हो गया है। (सं.)
७५१	पुरुषोत्तममाहात्म्य	स्कन्दपुराणगत	,,	६–११	अपूर्ण। इससे आगे की कृतियाँ स्व. पुरोहितजी के सूचीपत्रमें लिखित नहीं हैं। ये स्फुट बस्तों में पाई गई हैं। (सं.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७५२	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्दपुराणगत	१६वीं.श.	१–१०	अपूर्ण, त्रुटित। पत्र २-३ अप्राप्त।
७५३	नारदपाञ्चरात्र	श्रीजयसंहितान्तर्गत	,,	३५–८६	,, ,, । पत्र ६६-६६ तक अप्राप्त।
७५४	अमरकोष सटिप्पण	अमरसिंह	१८वीं.श.	८–४८	,, ,, ।
७५५	रामचरितमानस	तुलसीदासगोस्वामी	१६वीं.श.	१–७१	,, ,, । पत्र ८-२७ तक अप्राप्त।
७५६	बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्र	सुव्रतप्रोक्त	१६३३	३–१२२	,, ,, । पत्र ४१-७७ तक अप्राप्त। लि.क.–जोषट दाधीच गिरिधारी,सांभरमध्ये।
७५७	देवीरहस्यके स्फुटपत्र	रुद्रयामलतंत्रगत	१६वीं.श.	५	
७५८	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	१८वीं.श.	२४	अपूर्ण। ५वां पत्र अप्राप्त।
७५६	भगवन्नामकौमुदी	लक्ष्मीधर अनन्तानन्दरघुनाथपादपद्मोपजीवी।	१६वीं.श.	५६	अपूर्ण।
७६०	श्रीकृष्णाष्टक		१६वीं.श.	१	
७६१	नित्यश्राद्धविधिः		,,	३	
७६२	गोपालसहस्रनामावलि		,,	२७	
७६३	त्रैलोक्यमोहनं नाम विष्णुकवच		,,	३	
७६४	श्रीरामद्वादशनामस्तोत्र		,,	१	
७६५	सन्ध्योपासनविधि			२–७	त्रुटित।
७६६	रामरक्षाकवचस्त्रोत्र		,,	६	
७६७	नवग्रहस्तोत्राणि		,,	४–७	अपूर्ण, त्रुटित।
७६८	गोरखपतड़ा		१८५२	१	
७६६	भगवदाराधनम्	सौम्यजामातृस्वामी	१६२१	६	६ठा पत्र अप्राप्त।
७७०	महालक्ष्मीकवच	ब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मप्रोक्त	१६वीं.श.	१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७७१	पाशाकेवली		१९वीं.श.	१४–२८	अपूर्ण, त्रुटित ।
७७२	लक्ष्मीस्तोत्र	श्रीरामप्रोक्त	,,	३	
७७३	नवग्रहमंत्रजपविधिः		,,	७	वैदिक ।
७७४	सावित्रीदिव्यमंत्रगर्भिताष्टकस्तोत्र	हरदेवस्वामी	,,	३	
७७५	तारास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८७४	३	लि.क.–अवध्यदास वैष्णव, बणथली ग्राम ।
७७६	(१) रम्भाष्टकस्तोत्र		१९वीं.श.	४–५	
	(२) मदनाष्टकस्तोत्र		,,	५–७	हिन्दी-संस्कृतमिश्रित ।
	(३) ब्रह्मस्तोत्र		,,	७–८	अपूर्ण ।
७७७	श्वेतयवाङ्कुरविधिः		,,		
७७८	(१) दधिमथीस्तोत्र		१९४४	२–४	पत्र ३रा अप्राप्त । लि.क.–द्वारकादास ।
	(२) दधिमथीकपालदर्शनालसपापकथन	विराट्पुराणोक्त		४–७	,, ,,
	(३) दधिमथीमहिम्नस्तोत्र			७–१७	,, ,,
७७९	स्वस्तिवाचन		१९वीं.श.	६	
७८०	रामपूजाविधिः	रामानुजाचार्य	,,	१५	
७८१	गोपालपूजाविधिः		१७८२	३–५८	त्रुटित । पत्र–१७-४४ तक अप्राप्त । लि.क.–रामकृष्णमिश्र ।
७८२	तोताद्रिव्रह्मीनारायणयतीश्वरं प्रति उपेन्द्रशालिग्राम रामानुजदासस्यपत्रम्		१९१९	१	गङ्गाधरसे लिखित, जयपुरमें प्राप्त।
७८३	वैष्णवसन्दोह(महायोगीशमाहात्म्य)		१९वीं श.	१०	
७८४	रासपञ्चाध्यायीभाषाछंद	गङ्गाधर	,,	खरड़ा १	
७८५	जानकीजीकी स्तुतिके पद	मनभावनजी आदि	२०वीं.श.	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७८६	ख्याल	ज्ञानाञ्जलि	२०वीं श.	२	
७८७	रघुवरवंशावली आदि	रूपरसिक ? मनभावन	,,	५	
७८८	नवरत्नका इतिहास		,,	६	
७८९	कालिदास हिज होम		,,	२	इण्डियनरिव्यू अप्रेल १९१६से इंग्लिशमें उद्धृत।
७९०	ऐतिहासिक सामग्रीके स्फुटपत्र		,,	११	
७९१	उर्दूकी मुद्रित प्रति		,,		
७९२	एकविंशतिग्रन्थाः	श्रीवल्लभाचार्य	१९२२	४१	लि.क.—गोपीनाथ व्यास।
	(१) सर्वोत्तमस्तोत्र	,, (अग्निकुमार)	,,	(१—५)	
	(२) वल्लभाष्टक स्तोत्र	श्रीविट्ठलेश्वर	,,	५—७	
	(३) सप्तश्लोकी	,,	,,	७—९	
	(४) नामरत्नाख्यस्तोत्र	श्रीरघुनाथ	,,	९—१२	
	(५) यमुनाष्टकस्तोत्र	श्रीवल्लभाचार्य	,,	१३—१४	
	(६) बालबोध	,,	,,	१४—१७	
	(७) सिद्धान्तमुक्तावली	,,	,,	१७—१९	
	(८) पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद	,,	,,	१९—२२	
	(९) सिद्धान्तरहस्य	,,	,,	२२-२३	
	(१०) नवरत्न	,,	,,	२३—२४	
	(११) अन्तःकरणप्रबोध	,,	,,	२४—२५	
	(१२) विवेकधैर्याश्रय	,,	,,	२६—२७	
	(१३) श्रीकृष्णाश्रयस्तोत्र	,,	,,	२७—२९	
	(१४) चतुःश्लोकी	,,	,,	२९वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७९२)	(१५) भक्तिवर्द्धिनी	श्रीवल्लभाचार्य	१९२२	२९–३०	
	(१६) जलभेद	,,	,,	३१–३३	
	(१७) पञ्चपदी	,,	,,	३३वां	
	(१८) सन्न्यासनिर्णय	,,	,,	३४–३६	
	(१९) निरोधलक्षण	,,	,,	३६–३८	
	(२०) सेवाफल	,,	,,	३८–३९	
	(२१) मधुराष्टकस्तोत्र	,,	,,	३९–४१	
७९३	शिवस्वरोदय	शिवप्रोक्त	१९वीं.श.	७०	
७९४	आत्मबोधविवरण (द्वादशमहावाक्य-विवरणम्)	शङ्कराचार्य	१७५९	१९	
७९५	न्यायवार्तिकभाष्य		१९वीं.श.	१०	
७९६	अनुमानपरिच्छेद तत्वगूढार्थदीपिका	रघुदेव	,,	६	अपूर्ण।
७९७	सांख्यटीका		,,	५+१ = ६	स्फुट पत्र। १ पत्र किसी दूसरे ग्रन्थका प्रतीत होता है। (सं.)
७९८	केवलान्वयिव्याप्तिन्यायवृत्ति ?	जगदीश	,,	२	स्फुट पत्र।
७९९	वेदान्तसार	रामानुजाचार्य	१९०४	५७	
८००	सांख्यतत्वकौमुदीव्याख्या	भारतीयति श्रीबोधयति-शिष्य	१९वीं.श.	२३	
८०१	अध्यात्मचिन्तामणि	सौम्यजामातृमुनि	,,	५	अपूर्ण।
८०२	शक्तिवादार्थदीपिका	कृष्णभट्ट	,,	१०	,,
८०३	पंचलक्षणी	अनुमानमञ्जूषागत	,,	१७–२१	त्रुटित।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
८०४	वेदान्तार्थप्रकाश		१९वीं.श.	१२	अपूर्ण ।
८०५	शक्तिवाद (न्यायशास्त्र)		,,	८	स्फुटपत्र ।
८०६	परिभाषा (व्याकरण)		,,	६	,,
८०७	पातञ्जलयोगशास्त्रवृत्तिः (राजमार्तण्डाभिधाना)	धारेश्वर (भोजनृपति)	,,	८	,,
८०८	तैत्तिरीयोपनिषत् (?)		१८वीं.श.	७	अपूर्ण ।
८०९	शक्तिवादविवरण	कृष्ण भट्ट, रंगनाथसूरि सूनु, नारायणानुज	१९वीं.श.	४	स्फुटपत्र
८१०	श्रीरामानुजाचार्यचरितोपदेश (?)		१८वीं.श.	२६	अपूर्ण ।
८११	वेदान्तसंग्रह		,,	१७	स्फुटपत्र ।
८१२	रामार्याष्टोत्तरशतम्	महामुग्दल भट्ट	,,	४	
८१३	वेदप्रज्ञानशब्दनिर्णयादिसिद्धान्त (?)		१७वीं.श.	२–८	अपूर्ण । जीर्ण-शीर्ण ।
८१४	दशाश्चर्याणि (जैन)		१७३७	७–१३	त्रुटित । १२वां पत्र अप्राप्त । लि.क.–गुणसागर ।
८१५	न्यायदर्शनादिके प्रकीर्ण पत्र		१९वीं.श.	७	
८१६	रामतापिन्युपनिषत् सटीक (आनन्दनिधिनाम्नी टीका)	अथर्वणरहस्यग आनन्दवन (?)	,,	१४	
८१७	गिरिजेश्वर स्तोत्ररत्नावली	पं. गङ्गाप्रसाद	,,	१६	प्रायः शिखरिणी छन्दोंमें रचित-शतक ।
८१८	,, ,,	,,	१९८७	१६	लि.क.–श्री भगवान् शर्मा, जयपुर ।
८१९	पार्श्वप्रभुमहिम्नस्तोत्र		२०वीं.श.	१५	शिखरिणी छंद ।
८२०	भक्तमाल सटीक	राघवदास टी. चतुरदास	१८९७	१५४	लि.कि.–बोलताराम । टी. र.का.–१८५७ । भक्तमाल र.का.–१७७७ (१७) ?

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
८२१	कौलगजमर्दन	कृष्णानन्दाचल, कैलासाचलयतिशिष्य	१६२३	२५	वाराणसी संस्कृत यन्त्रालयमें मुद्रित ।
८२२	जगन्नाथशतक (भाषापद्यबद्ध)	महाराजा रघुराजसिंहदेव (रीवां नरेश)	१६५८ १६०२	२८ पेज	रचना–सं० १६१४ । भारतभ्राता प्रेस, रींवांमें मुद्रित ।
८२३	बाल-कालिदास (सुभाषित संग्रह)	पं. रूपनारायण पाण्डेय	सन् १६२२	६७ ,,	इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग (बनारसब्राञ्च) में मुद्रित ।
८२४	महावीरचरितम् (नाटकम्)	महाकवि भवभूति	,, १६२६	२३४+७पेज	निर्णयसागर प्रेस, बम्बईमें मुद्रित ।
८२५	(१) जयपुरविलासः (काव्य)	वैद्य श्रीकृष्णरामकवि	,, १८८७	५८ पेज	,,
	(२) मुक्तकमुक्तावली ,,	,,	,,	५६ ,,	,,
	(३) सारशतकम् (पञ्चमहाकाव्यानाम्)	,,	,,	१८ ,,	,,
८२६	संस्कृतरत्नमाला	परमानन्ददेव	१६१६	४	
८२७	,,	,,	१६०८	३	
८२८	संस्कृतमञ्जरी		१६वीं.श.	७	
८२९	सप्तार्थीश्लोक		१६२१	२	गोरामो विनतानन्द कुन्महेश्वरवल्लभः । सत्पक्षभृत्कामवश्च वीनेशेन समो भवान् ॥ १ इस श्लोककी सात प्रकार की व्याख्या की गई है । लि.क.–जोसी परमसुख भीमटोडानगरे ।

॥ श्री ॥

परिशिष्ट १

कृतिनामानुक्रमणिका

ख

ग

छ

ज

न

प

भ

म

य

र

ल

ष

स

क्ष

त्र

ज्ञ

* श्रीः *

परिशिष्ट २

कर्तृ नामानुक्रमणिका

अ

आ

ई

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६.००

२. यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य–१.७५

३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक–म०म० पं० गिरिधरशर्मा चेंदी। मूल्य–१०.७५

र, अन्नंभट्टकृत, सम्पादक–डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी–एच. डी., मूल्य–३.००

प्रेम ९७ ोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक–डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए.,

प्रेमदास १०४। मूल्य–१.७५

पोजी १०३ मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक–स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२.००

स, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य–२.००

स्याम, स्यांम, स्ट

स्योजी ३९ ऽवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

स्वरूपदास नि

स्वात्माराम अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी.,। मूल्य–१.७५.

सङ्कर ९८ हारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए.,

सजणा १, डी., लिट्। मूल्य–२.७५

सती कर्णनोद महाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण

सदना ।, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.२५

सन्तद ाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य–३.५०

, नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–३.७५

१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१६ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित। मूल्य–१.५०

१७. ईश्वरविलासमहाकाव्यम्, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य–११.५०

१८. रसदीर्घिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.००

१९. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००

२०. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पादक–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–१२.००

२१. ,, भाग २ ,, ,, मूल्य–८.२५

२२. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य–४.००

२३. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य–४.००

२४. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत, भाष्यसहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित। सम्पादक–पं. श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य–३.७५

राजस्थानी और हिन्दी

२५. कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पादक–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य–१२.२५

२६. क्यामखां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पादक–डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य–४.७५

२७. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक–श्रीमहताबचन्द खारैड़। मूल्य–३.७५

२८. बांकीदासरी ख्यात, कविवर बांकीदासरचित, सम्पादक–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य–५.५०

२९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक–श्रीनरोत्तम स्वामी, एम.ए.। मूल्य–२.२५

३०. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–२.००

३१. जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५

३२. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पादक–श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१.७५

३३. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १। मूल्य–७.५०

३४. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २। मूल्य–१२.००

३५. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पादक–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०

३६. रघुवरजसप्रकास, किसनाजीआढाकृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.२५

३७. राजस्थानी हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय। मूल्य–४.५०

३८. वीरवाण, ढाढी बादरकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–४.५०

३९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पादक–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न। मूल्य–२.५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृतग्रन्थ

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय।

२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
३. करुणामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी ।
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री बी.जे. सांडेसरा ।
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०–श्री एच. डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक ,, ,, ,,
११. स्वयंभूछन्द, कविस्वयंभूरचित ,, ,, ,,
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–मुनि श्री जिनविजय ।
१३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, ,, श्री एम. एन. गोरी ।
१४. नृत्यरत्नकोश भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–डॉ. प्रियबाला शाह ।
१५. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ. श्रीदशरथ शर्मा ।
१६. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१७. रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित ,, ,,
१८. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
१९. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२०. घटखर्परादि पंचलघुकाव्यानि ,, पं० अमृतलाल मोहनलाल
२१. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०–पं० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।

राजस्थानी और हिन्दी

२२. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।
२३. गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
२४. राजस्थानमें संस्कृत साहित्यकी खोज, एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दीअनुवादक–श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२५. राठौडांरी वंशावली, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२६. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक–मुनिश्रीजिनविजय ।
२७. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२८. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
२९. सूरजप्रकास, कविया करणीदानकृत, सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३०. विद्याभूषणग्रन्थसूची, सम्पा०–श्रीगोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
३१. नेहतरंग, बूंदीनरेश रावराजा बुधसिंह हाड़ाकृत, सम्पा०–श्रीरामप्रसाद दाधीच ।

विशेष–पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।

++++++++++++

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर

उद्देश्य

१. राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रन्थों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना।

२. प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना।

३. साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन, अन्वेषण, संशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भंडार (मुद्रित ग्रन्थालय) स्थापित करना और उसमें देश-विदेश में मुद्रित विविध विषयक अलभ्य-दुर्लभ्य सभी ग्रन्थों का यथासंभव संग्रह करना।

४. संगृहीत सामग्री से शोधकर्त्ता अध्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसंधान में सहायता पहुँचाना।

५. राजस्थान के लोक जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत, सांप्रदायिक भजन, पदादिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार, धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक आचार-विचार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की शोध, संग्रह, संरक्षण, एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना।